Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विश्व-प्रसिद्ध जासूस

लेखक:
अभय कुमार दुबे

पुस्तक महल®
खारी बावली, दिल्ली-110006

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रकाशक

पुस्तक महल, दिल्ली-110006

संबद्ध संस्था

हिन्द पुस्तक भण्डार, दिल्ली-110006

विक्रय केन्द्र

1. ------10-B, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 ------फोन: 268292, 268293, 272784
2. ------------- 6686 खारी बावली, दिल्ली-110006 ------------------------फोन: 239314, 2911979

प्रशासनिक कार्यालय

F-2/16, अन्सारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
फोन: 276539, 272783, 272784

© कॉपीराइट सर्वाधिकार
पुस्तक महल 6686, खारी बावली, दिल्ली-110006

चेतावनी

भारतीय कॉपीराइट एक्ट के अंतर्गत इस पुस्तक के तथा इसमें समाहित सारी सामग्री (रेखा व छाया चित्रों सहित) के सर्वाधिकार 'पुस्तक महल' के पास सुरक्षित हैं। इसलिए कोई भी सज्जन इस पुस्तक का नाम, टाइटल डिजाइन, अन्दर का मैटर व चित्र आदि आंशिक या पूर्ण रूप से तोड़-मरोड़ कर एवं किसी भी भाषा में छापने व प्रकाशित करने का साहस न करें अन्यथा कानूनी तौर पर वे हर्जे-खर्चे व हानि के जिम्मेदार होंगे।

Vishva Prasiddha Jasoos by Abhay Kumar Dubey

Published by

PUSTAK MAHAL

10-B, Netaji Subhash Marg, New Delhi-110002

162750

प्रथम संस्करण: अप्रैल 1988

मूल्य:
पेपरबैक संस्करण
सजिल्द लायब्रेरी संस्क

PRICE RS. 15/-
PUSTAK MAHAL

मुद्रक

के.के. प्रिंटर्स

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रकाशकीय

पुस्तक महल के प्रकाशनों की लोकप्रियता निर्विवाद रूप से स्थापित हो चुकी है। हमारे प्रकाशनों की लोकप्रियता का रहस्य अपने पाठकों को कम कीमत पर रोचक व सुबोध भाषा में ज्ञान-विज्ञान से संबंधित प्रामाणिक पाठ्य-सामग्री उपलब्ध कराना रहा है। अन्य प्रकाशकों की महंगी पुस्तकों की तुलना में हमारी अल्पमोली पुस्तकें चंद लाइब्रेरियों तथा ड्राइंगरूमों की सजावट न होकर जन-जन के घर की शोभा हैं। आम पाठक से जुड़े होने के कारण ही पुस्तक महल को न केवल ***पारिवारिक प्रकाशक*** होने का गौरव प्राप्त है बल्कि लगभग उनकी सभी पुस्तकें आज ***हाउस होल्ड प्रोडक्ट्स*** का सा दर्जा प्राप्त कर चुकी हैं। समग्रतः हम वह सब कुछ छापते हैं, जो आप पढ़ना चाहते हैं।

आज से लगभग दो वर्ष पूर्व हमने ***विश्व-प्रसिद्ध शृंखला*** के नाम से एक नई पुस्तकमाला की शुरुआत की थी। इसका शुभारंभ ज्ञान एवं चिंतन के धरातल पर एक औसत पाठक को अंतर्राष्ट्रीय घटनाचक्र से जोड़कर उसकी चेतना को प्रबुद्ध करने के उद्देश्य से किया गया था। देखते ही देखते यह शृंखला पाठकों के गले का हार बन गई। ज्ञान-पिपासु पाठकों के बीच जैसे इस शृंखला की एक-एक पुस्तक को संग्रह करने की होड़ सी लग गई.... और क्यों न लगती.... विविध विषयों से संबंधित इस शृंखला की प्रत्येक पुस्तक अपने-अपने क्षेत्र से संबंधित विषय का ***मिनि एनसाइक्लोपीडिया*** जो है!

इस शृंखला की 14वीं पुस्तक **विश्व-प्रसिद्ध जासूस** आपके हाथों में है। इसी विषय से संबंधित **विश्व-प्रसिद्ध गुप्तचर संस्थाएं** आपके द्वारा सराही जा चुकी है तथा इसी विषय से संबंधित तीसरी पुस्तक **विश्व-प्रसिद्ध जासूसी कांड** शीघ्र ही प्रकाशित होगी। **गुप्तचर संस्थाएं** में जहां जासूसी संस्थानों की कार्यप्रणाली पर प्रकाश डाला गया था, वहीं **जासूस** में इनमें कार्यरत जासूसों के जीवन पर रोशनी डाली गई है।

वस्तुतः सचमुच के जासूस, जासूसी-किताबों में वर्णित जासूसों से भी कहीं अधिक शातिर और ख़तरनाक होते हैं। उनकी जिंदगी तेजतर्रारी व अजीबोगरीब रोमांचक घटनाओं का एक अंतहीन सिलसिला होती है। प्रस्तुत पुस्तक में जेम्स बांड के रचियता ***इयान फ्लेमिंग*** से लेकर ***कार्ल स्टीबर, सिडनी रीली, किम फिल्बी, माताहारी*** आदि सहित 25 नामीगिरामी जासूसों का अविश्वसनीय एवं सनसनीखेज जीवनवृत दिया गया है। दूसरे शब्दों में इस पुस्तक में दुनिया के सबसे चालाक, जांबाज, दोगले, कुटिल तथा नहले पर दहले किस्म के व्यक्तियों के जटिल चरित्रों को नाटकीय शैली में उजागर करने का प्रयास किया गया है। इनके बारे में पढ़कर एकबारगी तो आप भी सोचने के लिए विवश हो जाएंगे कि क्या उपन्यासों की दुनिया से परे वास्तविक जीवन में भी इस प्रकार के हाड़मांस के लोग बसते हैं।

पुस्तक को प्रामाणिक बनाने की गरज से ज़ासूसी से संबंधित सभी महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों की सहायता ली गई है, जिसके लिए हम उनके प्रकाशकों एवं लेखकों के आभारी हैं। काफी परिश्रम के बाद हमने परदे के पीछे रहने वाले इन रहस्यमय व्यक्तियों के चित्र जुटाएं हैं। हां, दो-चार लोगों के फोटो हम नहीं दे पाए हैं—देते भी तो कैसे? ....उन्होंने अपना फोटो कभी खिचवाया ही नहीं! पुस्तक आपको कैसी लगी—अवश्य लिखें।

—प्रकाशक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

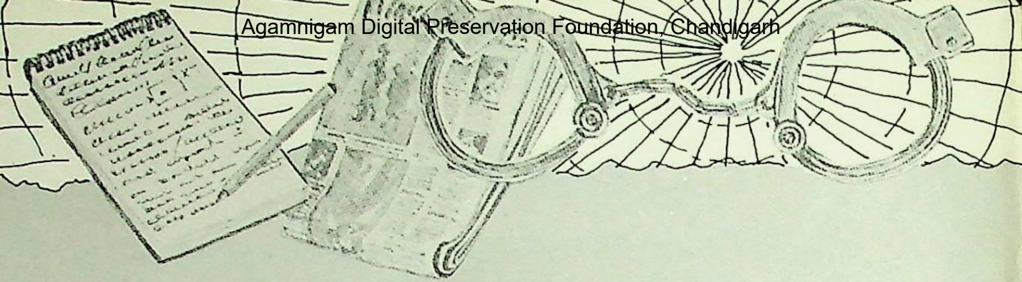

जासूस-क्रम

1. कार्ल स्टीबर 9
2. सिडनी रीली 15
3. सर वेरनोन केल 21
4. विल्हेल्म कनारिस 26
5. माता हारी 30
6. लावरेंती पावलोविच बेरिया 34
7. डॉ. रिचर्ड सोर्गी 38
8. इयान फ्लेमिंग 43
9. एरिक एरिकसन 48
10. क्लिफटोन जेम्स 54
11. बांडा 58
12. सिंथिया 62
13. तेनिया 66

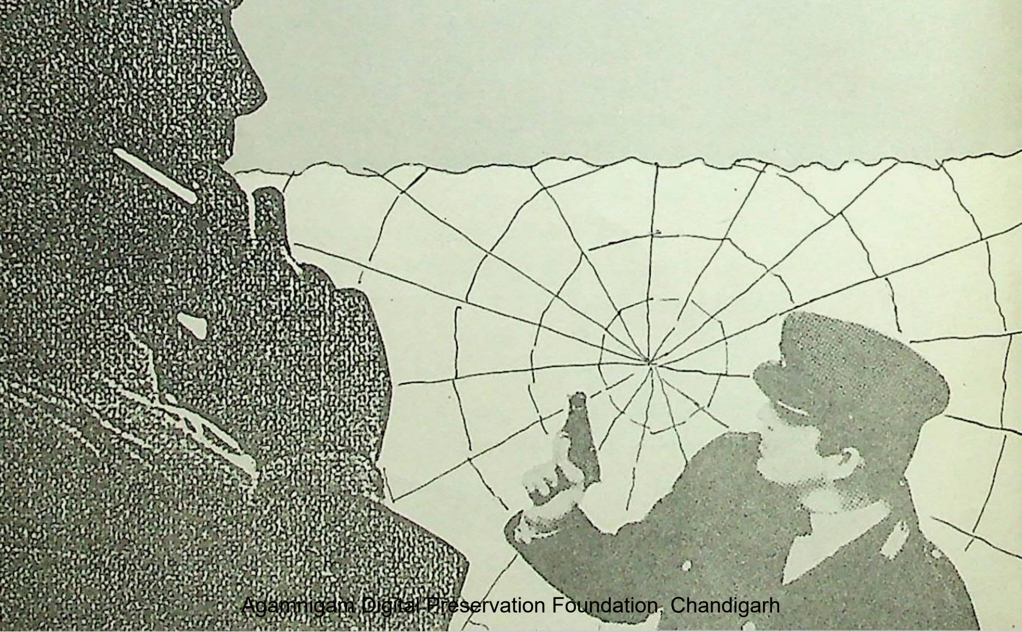

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

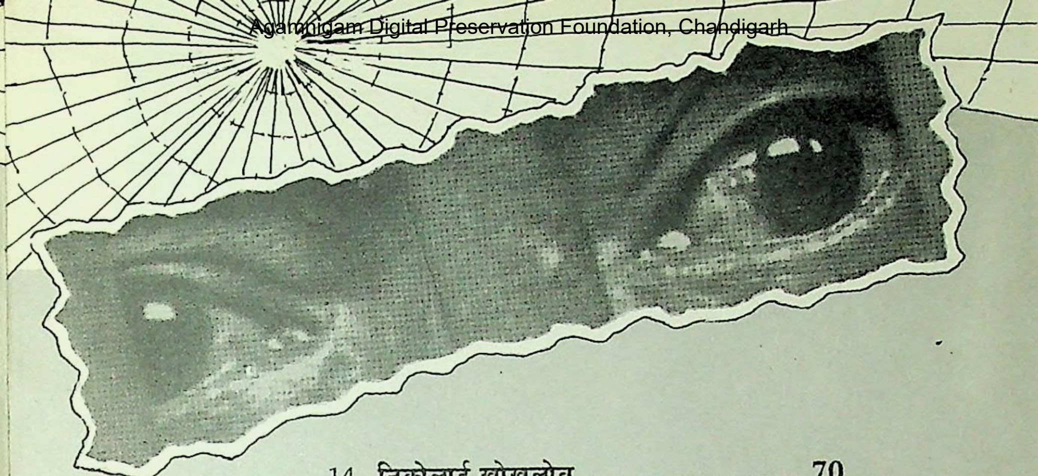

14. निकोलाई खोखलोव 70
15. किम फिल्बी 74
16. डोनाल्ड मैक्लीन 81
17. 'सर' एंथनी ब्लंट 86
18. जार्ज ब्लैक 91
19. एमिल क्लाउस जूलियस फुश 96
20. जूलियस रोजेनबर्ग 102
21. जे. एडगर हूवर 107
22. वोल्फगैंग लोत्ज 111
23. कार्लो तुओमी 115
24. यूरी आंद्रोपोव 120
25. विलियम जे. केसी 124

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

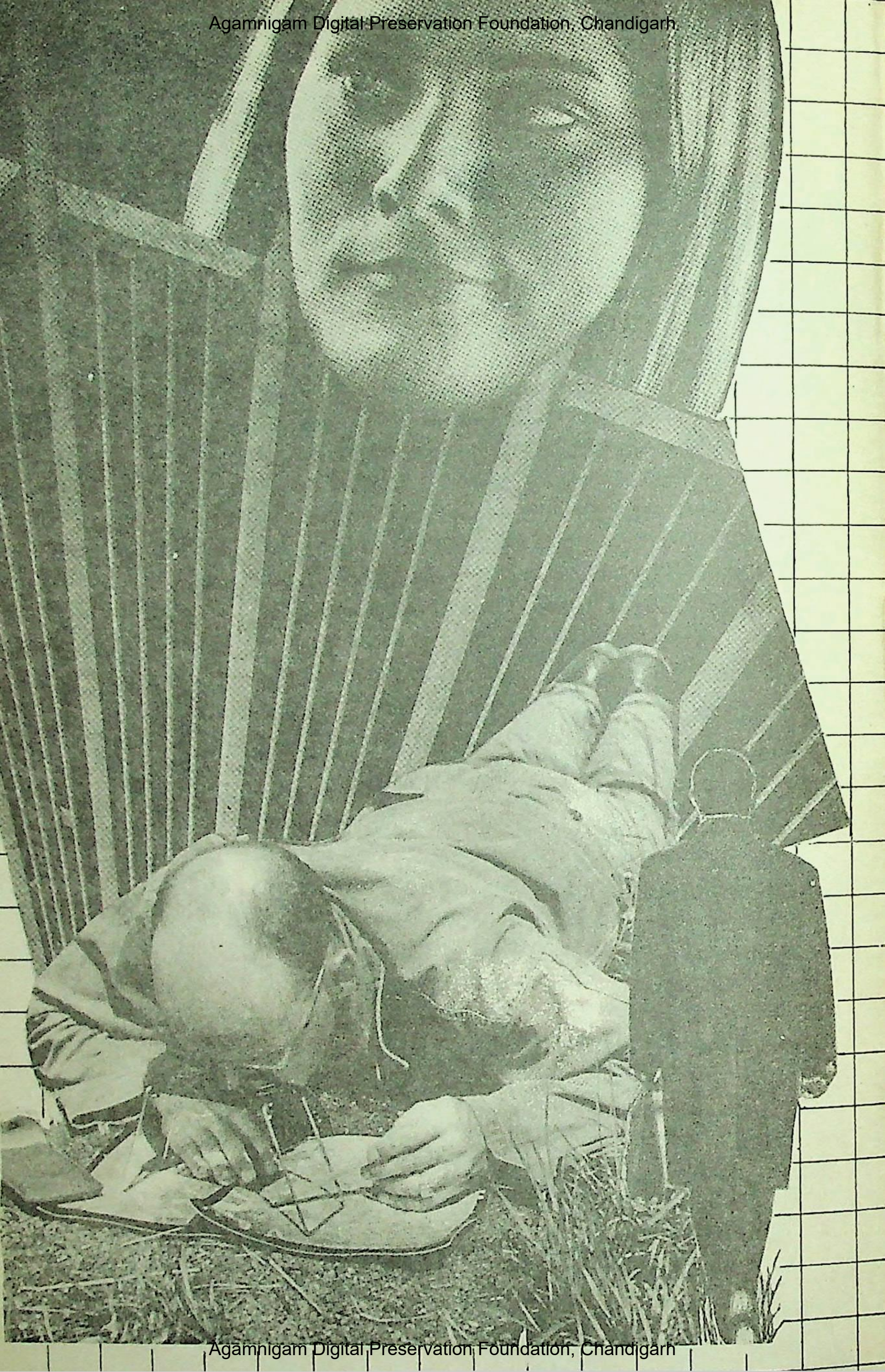

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कार्ल स्टीबर
(Karl Stieber)

बिस्मार्क का जासूस प्रमुख

आस्ट्रिया और फ्रांस के खिलाफ बिस्मार्क (Bismarck) को ऐतिहासिक विजय दिलाने में कार्ल स्टीबर की जासूसी का भारी योगदान था। वेश बदलने में अत्यंत कुशल और मानवीय कमजोरियों से फायदा उठाने के विशेषज्ञ माने जाने वाले स्टीबर की जिंदगी रोमांचक जासूसी कारनामो की एक बिलकुल अनोखी दास्तान है। 20वीं शताब्दी की लगभग सभी सीक्रेट सर्विसों ने स्टीबर के अविश्वसनीय कारनामो से प्रेरणा ली।

19वीं शताब्दी में विल्हेल्म जोहान कार्ल एडुअर्ड स्टीबर (Wilhelm Johann Karl Eduard Stieber) एक ऐसा नाम था,जिसे सुनते ही बड़े-बड़े सामंत और राजा तक कांप जाते थे। स्टीबर का पूरा जीवन पूर्णरूप से जासूसी को ही समर्पित था। उसने रूस के अत्याचारी शासक जार (Tsar) से लेकर जर्मनी के महत्त्वाकांक्षी शासक ओटो वान बिस्मार्क तक के लिए काम किया। सन् 1892 में जब इस रहस्यमय व्यक्ति की मृत्यु हुई तो पूरे युरोप के सामंत उसके अंतिम संस्कार में भाग लेने के लिए इकट्ठे हुए। इनमें से कोई भी शोक मनाने के लिए नहीं आया था। दरअसल सभी का मकसद इस बात को अपनी आंखों से देख लेना था कि आधुनिक जासूसी के पितामह कार्ल स्टीबर की मृत्यु हुई भी है या नहीं। एक जासूस के रूप में स्टीबर का खौफ युरोपीय राजनीति पर किस कदर हावी था, इसका अंदाजा इस बात से भली-भांति लगाया जा सकता है।

स्टीबर के कारनामो को समझने के लिए उस युग की पृष्ठभूमि को समझना अत्यन्त जरूरी है। युरोप के फ्रांस, रूस और जर्मनी जैसे देश हमेशा से जासूसी का पक्का बंदोबस्त करना आवश्यक समझते रहे हैं। इसकी वजह उनकी लम्बी-चौड़ी सीमाएं और कभी भी हमला हो जाने की आशंका रही है। द्वीपों से बना होने तथा मुख्य भूमि से अलग होने के कारण ब्रिटेन को जासूसों की जरूरत का

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

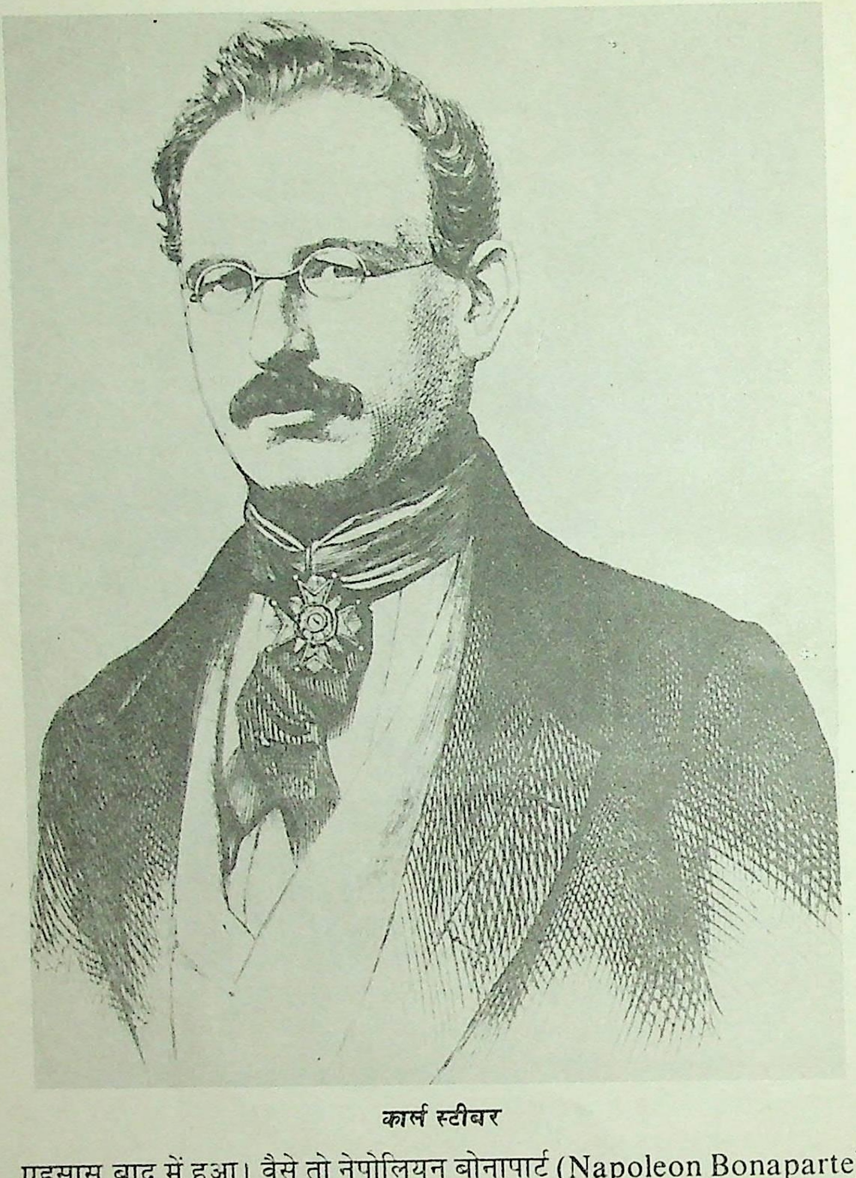

कार्ल स्टीबर

एहसास बाद में हुआ। वैसे तो नेपोलियन बोनापार्ट (Napoleon Bonaparte) की धारणा थी कि जासूस तो स्वभाव से ही गद्दार होते हैं पर इसके बावजूद नेपोलियन ने हमेशा अपने साम्राज्य की रक्षा के लिए जासूसी का बड़ी खूबी से इस्तेमाल किया था। उसके जासूस कार्ल शुलमीस्टर (Karl Schulmeister) ने आस्ट्रिया की राजधानी वियना (Vienna) में जाकर ढोंग रचाया कि उसे पेरिस Paris) से आस्ट्रिया के लिए जासूसी करने के आरोप में निर्वासित कर दिया गया

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

है। कुछ ही महीनों में इस जासूस को आस्ट्रिया के फौजी खुफिया विभाग के प्रमुख की पदवी संभालने का मौका मिल गया। शुलमीस्टर ने नेपोलियन को आस्ट्रिया की फौज के बारे में बहुत सी महत्त्वपूर्ण गोपनीय सूचनाएं दीं, जिनके आधार पर ही फ्रांसीसी फौजें अल्म (Ulm) और आस्टरलिट्ज (Austerlitz) की लड़ाइयों में जोरदार जीतें हासिल कर पाने में सफल हो पाईं। सन् 1803 में नेपोलियन ने ब्रिटेन के खिलाफ युद्ध घोषित कर दिया। अंग्रेज भौंचक्के रह गए। तब जाकर उन्हें पहली बार पता चल सका कि जासूसी का महत्त्व क्या होता है।

ट्राफलगर (Trafalgar) की लड़ाई में एडमिरल नेल्सन (Adm. Nelson) ने नेपोलियन को हरा दिया। जुलाई, 1808 में ब्रिटेन ने फ्रांस पर जमीनी हमला किया क्योंकि स्पेन ने मेड्रिड के सिंहासन से नेपोलियन के भाई जोसेफ (Joseph) को उतारने के लिए उसकी मदद मांगी थी। सर आर्थर वेलेजली (Arthur Wellesley) के नेतृत्व में ब्रिटिश फौज भेजी गई। वेलेजली संभवतः उस जमाने में जासूसों के उपयोग में सर्वाधिक कुशल सेनापति थे। वेलेजली के जासूस विशेषज्ञ घुड़सवारों के रूप में जाते और युद्ध-स्थल व दुश्मन की एक-एक चीज का पता लगाकर ही वापस लौटते। वे उस इलाके की सड़कों, पहाड़ियों और नदियों के नक्शे बनाते और ब्रिटिश फौजों को जनता में लोकप्रिय बनाने में मदद करने वाली खबरें फैलाते। आखिर में इन्हीं घटनाओं की पृष्ठभूमि में सन् 1815 में वाटरलू (Waterloo) के मैदान में वेलेजली नेपोलियन को ऐतिहासिक मात देने में सफल हो पाये थे।

अब स्थिति यह थी कि फ्रांस कुचला जा चुका था। ब्रिटेन का इरादा दूर-दराज़ के इलाकों में अपना प्रभुत्व स्थापित करने का था। जर्मनी के लिए युरोप पर अपनी चौधराहट जमाने का रास्ता साफ हो चुका था। ओटो वान बिस्मार्क ने सारे जर्मन राज्यों को एकताबद्ध करके प्रशा (Prussia) की ताकतवर हकूमत खड़ी की। इस काम में बिस्मार्क की सबसे महत्त्वपूर्ण तथा निर्णायक भूमिका निभाने वाली मदद कार्ल स्टीबर की जासूसी ने की। स्टीबर की संगठन शक्ति, नई-नई साजिशें रचने की अद्भुत क्षमता, मानवीय कमजोरियों का फायदा उठाने की शैतान जैसी चालाकी और दयाहीनता ने उसे 19वीं शताब्दी का सबसे खतरनाक जासूस बना दिया था।

स्टीबर का जन्म जर्मनी के मेस वर्ग में सन् 1818 में हुआ था। बर्लिन (Berlin) में उसने वकालत शुरू की ओर उसने जल्दी ही अपने आपको क्रांतिकारियों के दोस्त और वकील के रूप में प्रतिष्ठित कर लिया। स्टीबर ने यहीं से गद्दारी और दोगलेपन को एक कला के रूप में विकसित करना शुरू किया। एक ओर तो वह क्रांतिकारियों के मुकदमे लड़ता और दूसरी ओर पुलिस को चुपके से उनकी खबरें भी देता रहता। यह सच ही है कि स्टीबर किसी का भी सगा नहीं था। उसने अपनी पत्नी के चाचा तक को गिरफ्तार करा दिया था। स्टीबर के इन्हीं कारनामो के कारण सन् 1850 में उसे मुख्य पुलिस आयुक्त बना दिया गया। पांच

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साल बाद स्टीबर के दुर्भाग्य से किंग फ्रेड्रिक विलियम (Frederick William) को पागल घोषित कर दिया गया। मौका पाकर जर्मन सामंतों ने स्टीबर को इस पद से हटा दिया। दरअसल स्टीबर से वे एक हौवे की तरह डरते थे।

चालाक स्टीबर ने फौरन माहौल को भांप लिया। उसने विदेश भाग जाने का निर्णय लिया। पुलिस आयुक्त के रूप में स्टीबर ने रूसी शासक जार के एक प्रिय राजनयिक को एक घपले में फंसने से बचाया था। उसे जार से सहानुभूति पाने की पूरी-पूरी उम्मीद थी, इसलिए वह रूस चला गया। जार उन दिनों अपने चरमराते शासन को कायम रखने के लिए खुफिया विभाग पर पूरी तरह आश्रित था। इसलिए स्टीबर को फौरन जार की बदनाम खुफिया पुलिस ओक्राना (Ochrana) को पुनर्गठित करने का काम सौंप दिया गया। इसका फायदा उठाकर स्टीबर ने न केवल रूस पर अपनी पकड़ मजबूत की बल्कि देश के बाहर पूरे युरोप में अपने एजेंट भेजने शुरू कर दिए। इन एजेंटों का एक ही काम होता था—जार के दुश्मनों को आतंकित करना। एक बार तो स्टीबर खुद लंदन गया और महान दार्शनिक कार्ल मार्क्स (Karl Marx) के घर पर ठहरा। मार्क्स उन दिनों लंदन में जर्मन शरणार्थी के रूप में रह रहे थे।

स्टीबर ने यहां पर भी अपना दोगला खेल जारी रखा। रूस के लिए जासूसी करते समय वह लगातार रूस के रहस्य प्रशा को भी भेज रहा था ताकि अपने देश में खुद को दोबारा स्थापित कर सके। आखिरकार यह हथकंडा काम आया और सन् 1863 में उसे बिस्मार्क के सामने पेश किया गया। बिस्मार्क ने स्टीबर की उपयोगिता समझकर उसे प्रशा की सीक्रेट सर्विस में शामिल कर लिया। जर्मनी को आस्ट्रिया की हकूमत हड़पनी थी। इसलिए बिस्मार्क ने स्टीबर को उसकी फौजी तैयारियों के रहस्य इकट्ठे करने का जिम्मा सौंपा।

स्टीबर ने एक फेरी वाले का भेस धरा और पूरे आस्ट्रिया की यात्रा की। उसकी गाड़ी पर हमेशा दो बक्से रखे रहते थे। एक बक्से में धर्मग्रंथ भरे रहते थे और दूसरे में अश्लील तस्वीरें। स्टीबर का दावा था कि ग्राहक या तो धर्म के चक्कर में फंस जाएगा या फिर सेक्स के जाल में। कई महीने बाद वह प्रशा वापस लौटा और उसने बिस्मार्क के हाथों में आस्ट्रिया की फौजी ताकत का पूरा लेखा-जोखा थमा दिया। स्टीबर ने बिस्मार्क को सूचना दी कि आस्ट्रिया की फौजें अभी तक पुराने किस्म की रायफलें ही इस्तेमाल कर रही हैं, जो जर्मनी की आधुनिक रायफलों का किसी भी स्तर पर कोई मुकाबला नहीं कर सकतीं। बिस्मार्क के जनरल हेलमूट वान माल्टेक ने पूरे विश्वास के साथ आस्ट्रिया पर हमला कर दिया। सात हफ्ते तक लगातार भीषण युद्ध चलता रहा। 3 जुलाई, 1866 को आस्ट्रिया ने सैडोवा (Sadowa) की लड़ाई के बाद आत्मसमर्पण कर दिया। उसके कुल 40.000 फौजी मारे गए थे जबकि प्रशा के केवल 9,000 फौजी ही वीरगति को प्राप्त हुए।

बिस्मार्क स्टीबर से बहुत खुश था। उसके कहने पर स्टीबर ने जर्मनी में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ओट्टोवॉन बिस्मार्क

प्रतिजासूसी का एक जबरदस्त संगठन बनाया जो बहुत बेरहमी से काम करता था पत्रों और टेलीग्रामों पर कड़ा सेंसर लगा दिया गया। जर्मनी के खिलाफ जासूसी करने वाले हर व्यक्ति को बिना कोई मुकदमा चलाए गोली से उड़ा दिया जाता था। बर्लिन में स्टीबर ने 'ग्रीन हाउस' (Green House) की स्थापना की जो हर बुराई और विकृति का गढ़ था। यहां लोगों को ब्लैकमेल करने की साजिशें रची जाती थीं। स्टीबर ने जानबूझ कर प्रशा में डर और शक का माहौल पैदा कर रखा था।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सन् 1868 में बिस्मार्क को लगा कि बिना फ्रांस की बाधा हटाए जर्मनी को पूरी तरह एकताबद्ध नहीं किया जा सकता। स्टीबर दो साथी जासूसों के साथ फ्रांस में घुस गया और 18 महीनों तक वहीं छुपकर जासूसी करता रहा। इस बीच उसने हमलावर सेना के फायदे के लिए जरूरी हर राजनैतिक, आर्थिक और फौजी जानकारी जमा कर ली। हथियार बनाने के कारखाने, स्थानीय भूगोल, जनता की शिकायतें, नई फ्रांसीसी मशीनगनों के बारे में जानकारी और फौजी तैयारियों का कोई भी पहलू स्टीबर की तेज नजरों से छिप न सका। स्टीबर जर्मनी लौटा तो उसके पास पूरे तीन बक्से भर कर खुफिया सूचनाएं थीं। 19 जुलाई, 1870 को प्रशा ने फ्रांस पर हमला बोल दिया। फ्रांस ने छह हफ्ते की लड़ाई के बाद हथियार डाल दिए।

स्टीबर ने इसके बाद फ्रांस में बड़ा भयानक दमनचक्र चलवाया। सड़कों पर मार्च करते हुए जर्मन सैनिकों को खिड़की खोलकर देखने वालों तक को मौत की सजा दी गई। स्टीबर की क्रूरताएं इस हद तक बढ़ीं कि जर्मनी में ही उसका भारी विरोध होने लगा। पर बिस्मार्क का मुंह-लगा जासूस होने के कारण स्टीबर का कोई कुछ नहीं बिगाड़ सका।

स्टीबर के कारनामो और तौर-तरीकों से ही प्रेरणा लेकर बाद में युरोप के अन्य देशों ने अपने गुप्तचर संस्थानों का गठन किया। ■■

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सिडनी रीली

(Sidney Reilly)

जासूसी की दुनिया का असली "जेम्स बांड"

रीली भेस बदलने और कई भाषाएं बोलने में कुशल था। मध्य एशिया से युरोप तक उसके अविश्वसनीय कारनामो की कहानियां चप्पे-चप्पे पर फैली हुई हैं। उसने रूसियों, जर्मनों, अंग्रेजों, डचों और हर उस व्यक्ति को धोखा दिया, जिसने भी भूल से उस पर भरोसा किया। रीली को महिलाओं को पटाने में विशेष महारथ हासिल थी। वह रूस और कम्युनिज़्म का कट्टर विरोधी था। उसने लेनिन (Lenin) के अपहरण की योजना बनाई और आखिरकार रूस की बोल्शेविक (Bolshevik) सत्ता को उखाड़ने की कोशिश ही उसके पतन का अंतिम कारण बनी।

जेम्स बांड के कारनामे पढ़ने वाले सोचते होंगे कि ऐसा जासूस शायद केवल कल्पना की उपज ही हो सकता है। पर अंतर्राष्ट्रीय जासूसी की दुनिया में सिडनी रीली के कारनामे काफी हद तक जेम्स बांड को भी मात देते हैं। जेम्स बांड के रचियता इयान फ्लेमिंग (Ian Fleming) का तो कहना था, "007 तो मेरी कल्पना की निरर्थक उपज था। उसकी सिडनी रीली से तुलना नहीं की जा सकती।" वास्तव में 007 के चरित्र को देखकर जानकार लोगों को पहली बार यही लगा था कि फ्लेमिंग ने शायद रीली के जीवन से प्रेरणा लेकर ही अपने नायक की रचना की है। इसीलिए फ्लेमिंग को यह सफाई देनी पड़ी। बहरहाल, रीली से ज्यादा रहस्यमय व्यक्ति जासूसी की दुनिया में शायद ही कोई हुआ हो। रीली के जीवन और मौत के बारे में बहुत सी बातें अंधेरों में डूबी हुई हैं। उसके बारे में केवल दो बातें ही गारंटी से कही जाती हैं कि वह एक महान सीक्रेट एजेंट था और महिलाओं को अपने मोहजाल में फांस लेने में एक अत्यंत कुशल औरतखोर था।

रीली जिस पासपोर्ट पर सफर करता था, उसमें उसका जन्म स्थान तिप्पेरेरी, आयरलैंड (Tipperary, Ireland) लिखा हुआ था। पर रीली की

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

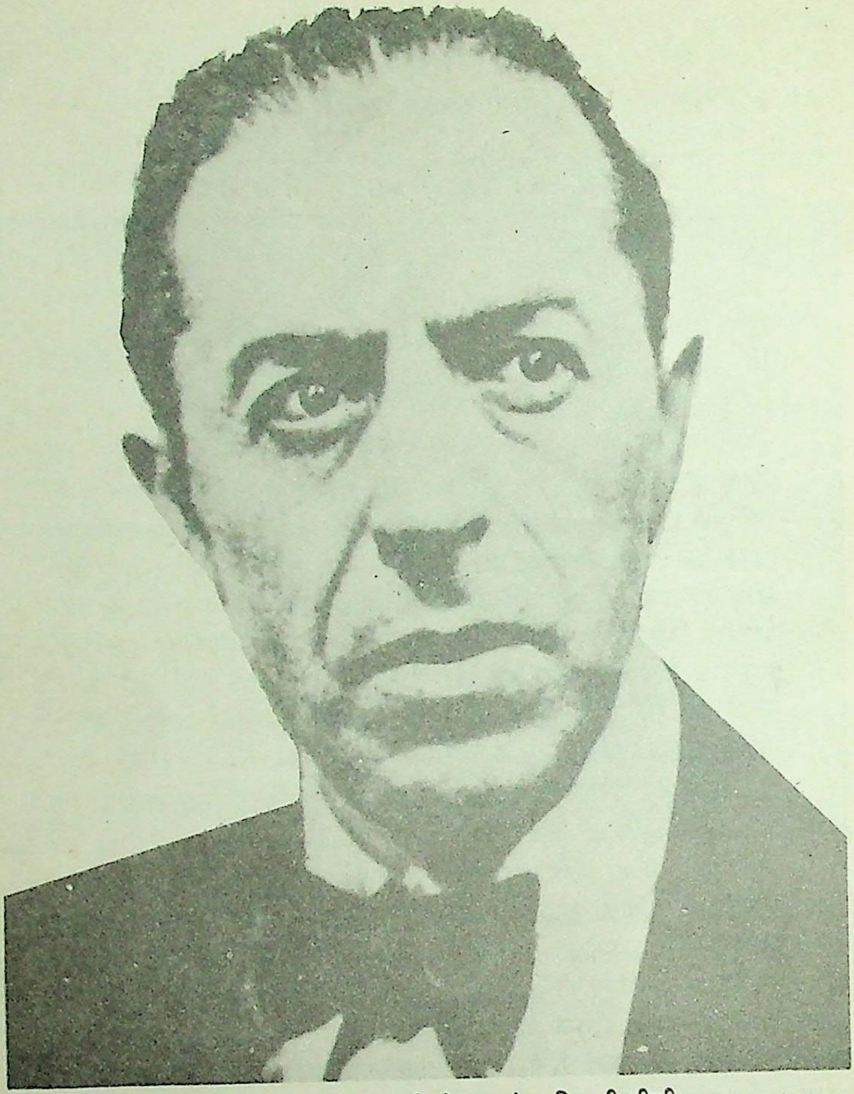

जासूसी दुनिया का असली जेम्स बांड—सिडनी रीली

अन्य बातों की तरह यह भी एक सफेद झूठ था। संभवत: उसका जन्म 24 मार्च, 1874 को रूस में ओडेसा (Odessa) के पास हुआ था। 19 वर्ष की उम्र में रीली को पता चला कि उसकी मां के पति के रूप में उसके साथ रहने वाला रूसी फौज का कर्नल दरअसल उसका पिता नहीं है। रीली ने रूस से भाग जाने का निर्णय लिया क्योंकि उसे यह भी पता चला कि वह एक यहूदी डाक्टर के साथ अपनी मां के प्रेम की नाजायज उपज है और उसका असली नाम सिग्मंड जियोर्जीविच रोसेनब्लम

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(Sigmund Georgievich Rosenblum) है। रीली दक्षिण अमरीका जाने वाले एक ब्रिटिश पोत पर सवार हो गया। तरह-तरह की छोटी-मोटी मजदूरी करता हुआ वह अमेजॅन (Amezon) के जंगलों में पहुंचा। वहां उसे एक ब्रिटिश अभियान दल में रसोइए की नौकरी मिल गई। एक दिन अमेजॅन के आदिवासियों ने ब्रिटिश शिविर पर आक्रमण किया। रीली की तेजी से निशाना लगाने की क्षमता ने हमलावरों को भगाने में खासी भूमिका निभाई। अभियान दल के नेता मेजर फोथेरगिल (Fothergill) की पारखी आंखों ने देखा कि यह लड़का न केवल साहसी और झुझारू प्रवृत्ति का है बल्कि कई भाषाएं बोलने में उसे कमाल की महारथ हासिल है। उन्होंने रीली को 1,500 पौंड दिए और सीक्रेट सर्विस में काम करने का प्रस्ताव रखा। इस तरह रीली के जासूसी जीवन की शुरुआत हुई।

युरोप में उसकी मुलाकात 23 वर्षीय सुंदरी मार्गरिट (Margaret) से हुई। मार्गरिट थामस का पति सरकार में मंत्री था। वह एक धनी, 60 वर्षीय क्रूर बूढ़ा था, जिसे दूसरों को कष्ट पहुंचाने में मजा आता था। मार्गरिट को उसके हाथों काफी यातनाएं बर्दाश्त करनी पड़ती थीं। रीली ने मार्गरिट से इश्क लड़ाने के लिए मार्गरिट के पति के होटल में ही ठहरना शुरू कर दिया। रात में मार्गरिट चुपचाप रीली के कमरे में आ जाती, जहां दोनों का प्रेम परवान चढ़ता। उस समय उसका पति बेहोशी की दवा खाकर आराम से सो रहा होता। यह दवा रीली ने ही मार्गरिट को दी थी। कुछ दिनों बाद मार्गरिट का पति बीमार पड़ा। रीली मेडीकल विशेषज्ञ का ढोंग रचकर उसके पास पहुंचा और उसे आबो-हवा बदलने के लिए यात्रा करने की सलाह दी। सफर में रीली ने चतुराई से उसकी हत्या कर दी। मार्गरिट को विरासत में 8,000 पौंड मिले। पांच महीने के बाद उसने रीली से शादी कर ली। पर रीली की जिंदगी में न तो मार्गरिट आखिरी औरत ही थी और न ही उसका पति रीली का आखिरी शिकार। यह तो जासूसी और धोखाधड़ी के खतरनाक खेल की शुरुआत भर थी।

20वीं शताब्दी शुरू होते ही रीली जर्मन बनकर हॉलैंड में जासूसी करने चला गया। यहां उसका काम था दक्षिण अफ्रीका के बोअर (Boer) युद्ध में डचों द्वारा बोअरों को भेजी जाने वाली मदद का पता लगाना। रीली की यह अनोखी विशेषता थी कि वह पहले से उन महत्त्वपूर्ण जगहों को सूंघ लेता था जहां विश्व की राजनीति पर असर डालने वाली घटनाएं होने की संभावना हो। उसने अंदाजा लगा लिया मध्य-पूर्व एशिया में तेल की खोज हो सकती है। उसने ब्रिटेन को चेतावनी दी कि उसे पीछे नहीं रहना चाहिए। वह ईरान जा पहुंचा। वहां उसे पता चला कि ईरान के शाह ने विलियम डी' आर्की (William D'Arcy) नामक आस्ट्रेलियाई को तेल की खोज के अधिकार दिए हैं। डी' आर्की कैंस (Cannes) के एक धनी रोथ्सचाइल्ड (Rothschilds) के साथ इस परियोजना पर रकम लगाने की बातचीत कर रहा था। रीली ने एक पादरी का भेस धरा और रोथ्सचाइल्ड के याट (Yacht) पर जाकर चर्च के लिए चंदा मांगने लगा। इसी याट पर डी' आर्की भी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मौजूद था। जिस समय रोथ्सचाइल्ड चंदे का चैक काट रहा था, उसी समय रीली ने डी' आर्की को अलग ले जाकर फुसफुसाकर कहा कि ब्रिटिश सरकार तेल निकालने की परियोजना में पैसा लगाने को तैयार है। मई, 1905 में डी' आर्की और ब्रिटिश सरकार के साझे में ब्रिटिश पेट्रोलियम (British Petroleum) नामक कंपनी की नींव पड़ी। ब्रिटेन ने डी' आर्की को नौ लाख पौंड का शेयर दिया। यह रीली की कोशिश ही थी,जिसकी कामयाबी से ब्रिटेन को मध्य-पूर्व के तेल पर कदम जमाने का मौका मिला।

रीली ने अगले कुछ साल सुदूर पूर्व में रूसियों की नौसैनिक ताकत के बारे में जानकारी हासिल करने में गुजारे। सन् 1914 आते-आते रीली युरोप लौट आया और जासूसी के कई अविश्वसनीय कारनामे किए। इसके उपलक्ष में उसे ब्रिटिश मिलिट्री क्रॉस (British Military Cross) प्रदान किया गया। विश्व युद्ध शुरू होने से पहले उसने कार्ल हान (Karl Hahn) के नकली नाम से क्रुप्प (Krupp) हथियार कारखाने में नौकरी कर ली। रीली ने खुद को रात की शिफ्ट में काम करने के लिए पेश किया। एक रात वह कारखाने के टॉप सीक्रेट ड्राइंग दफ्तर में घुस गया और सारे हथियारों की डिजाइनें चुरा लीं। दो पहरेदारों ने रीली की इस हरकत को देख लिया पर रीली ने दोनों की हत्या कर दी और भाग निकला।

इसके बाद वह रूस जा पहुंचा और एक धनी व्यापारी के भेस में सेंट पीटर्सबर्ग में जासूसी करने लगा। वहां उसने विमानों की डिजाइनें और तकनालौजी के रहस्य चुराने की कोशिश की और काफी हद तक कामयाब भी हुआ। रीली ने जर्मन नौसैनिक साज-सामान बनाने वालों के लिए एजेंट की नौकरी कर ली और माल बेचकर भारी मुनाफा कमाया। एक तरफ रीली अमीर होता जा रहा था और दूसरी ओर कैसर(Kaiser) के युद्ध पोतों की डिजाइनों के ब्लूप्रिंट (Blueprints) लंदन भेजता जा रहा था।

ब्रिटिश सीक्रेट सर्विस को शक था कि रीली उन्हें भेजी जाने वाली सूचनाएं रूस और फ्रांस को भी सप्लाई कर रहा है। पर वे उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते थे क्योंकि रीली की जासूसी से उन्हें भी फायदा हो रहा था। उधर रीली ने अपनी पहली पत्नी मार्गरिट को तलाक देने का निर्णय ले लिया, पर मार्गरिट ने इनकार कर दिया। रीली ने काउंटेस मैसिनो (Countess Massino) से दूसरा विवाह कर लिया और साजिश करके मार्गरिट को सेंट पीटर्सबर्ग छोड़ने पर मजबूर कर दिया। मैसिनो रूसी सरकार के एक मंत्री की पूर्व पत्नी थी।

सन् 1917 में रीली की आयु 40 पार कर चुकी थी। फिर भी उसने जर्मन फौजों के पीछे पैराशूट के जरिए उतर कर फौजी जासूसी करने की योजना बनाई। उसे मैनहीम (Mannheim) के पास उतारा गया। उसके पास ऐसे कागजात थे, जिनसे साबित होता था कि रीली जर्मन फौज से काम करने लायक न रहने पर निकाला गया सैनिक है। तीन हफ्ते के अंदर रीली ने सन् 1918 में होने वाले जर्मन हमलों की योजना की काफी हद तक जानकारी हासिल कर ली। इससे ब्रिटिश

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

फौजों को जर्मन हमले का मुकाबला करने में अत्यंत सुविधा हुई। यह कारनामा करने के बाद रीली जर्मन अफसर का भेस बनाकर पूर्वी प्रशा के कौनिग्सबर्ग (Konigsberg) स्थित अफसरों के मैस (mess) में घुस गया। यहां रीली ने एक ऐसा कारनामा किया, जिसकी सिर्फ कल्पना ही की जा सकती थी। उसने एक ऐसे उच्च स्तरीय सम्मेलन में हिस्सा लिया, जिसमें खुद कैसर मौजूद था।

रीली बावेरिया (Bavaria) के प्रिंस रुपरेश्ट (Rupprecht) के स्टाफ के एक अफसर का ड्राइवर बन गया। युद्ध परिषद् के दफ्तर की ओर उस अफसर को ले जाते समय रीली ने ढोंग किया कि इंजिन में गड़बड़ी हो गई है। वह अंधेरे में कार का बोनट उठाकर मरम्मत का अभिनय करने लगा। धैर्य खोकर वह अफसर भी बाहर निकल आया। रीली ने फौरन उसकी हत्या कर दी और अफसर के कपड़े पहनकर युद्ध परिषद् के दफ्तर में पहुंच गया। उसने शान से बैठक में हिस्सा लिया। नोट्स बनाए और ब्रिटेन को खबर कर दी। यह जर्मन पनडुब्बी हमले के बारे में थी। जब जर्मन यू बोट्स (U-boats) नामक पनडुब्बियां हमला करने निकलीं तो पाया कि उनके निशानों की तगड़ी हिफाजत की जा रही है।

अप्रैल, 1918 में रीली को फिर रूस भेजा गया। उस वक्त तक वहां बोल्शेविक क्रांति हो चुकी थी। लग रहा था कि कम्युनिस्ट जर्मनों से शांति समझौता कर लेंगे, जिससे कैसर को पश्चिमी मोर्चे पर पूरा दबाव डालने की सुविधा मिल जाएगी। ब्रिटिश प्रधानमंत्री डेविड लायड जार्ज (David Lloyd George) ने अपनी सीक्रेट सर्विस को आदेश दिया कि बोल्शेविकों की सत्ता उखाड़ फेंकी जाए। रीली ने नई सोवियत खुफिया पुलिस चेका (Cheka) का एक पास हासिल किया और कम्युनिस्टों के खिलाफ विद्रोह संगठित करने लगा। उसने श्वेत गार्डों से हमदर्दी रखने वालों से 20 लाख रूबल जमा किए और सवा लाख पौंड से रूसियों को खरीदने का सिलसिला चलाया। रीली की योजना लेनिन (Lenin) का अपहरण करने की थी। उसने एक वैकल्पिक सरकार भी बना डाली और खुद को उसका राष्ट्रपति बनाने की ठानी। पर बोल्शेविकों ने रीली की योजना नाकाम कर दी। तभी डोरा कप्लान (Dora Kaplan) नामक कम्युनिस्ट विरोधी ने लेनिन की हत्या की कोशिश की। इसके बाद गिरफ्तारियों का सिलसिला चला जिसमें रीली के ज्यादातर साथी पकड़ लिए गए। रीली के सिर पर एक लाख रूबल का इनाम रखा गया पर वह कभी रूसी किसान, कभी यूनानी सैलानी और कभी तुर्की के व्यापारी का रूप धर कर भाग निकला। लंदन पहुंचकर रीली ने अपनी दूसरी पत्नी को भी छोड़ दिया और अभिनेत्री पेपिता बोबादिला (Pepita Bobadilla) से शादी कर ली।

रीली ने आखिरी दम तक रूस की बोल्शेविक सत्ता उखाड़ने की कोशिश नहीं छोड़ी। लेनिन के आलोचक बोरिस सेविकोफ (Boris Savinkoff) से मिलकर उसने लंदन में साजिश शुरू की। तभी 'द ट्रस्ट' (The Trust) नामक संगठन उभरा,जिसके बारे में दावा किया गया था कि वह लेनिन को अपदस्थ करने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के लिए बनाया गया है। सेविकोफ 'द ट्रस्ट' के बारे में पता लगाने मास्को गया। एक साल बाद सन् 1925 में रीली भी पीछे-पीछे मास्को पहुंचा। इसके बाद वह कभी वापस नहीं लौटा।

दरअसल 'द ट्रस्ट' संगठन सोवियत जासूसों द्वारा जानबूझकर रीली को अपने जाल में फंसाने के लिए ही स्थापित किया गया था। पहले माना गया कि रीली फिनिश (Finnish) सीमा पार करते हुए पकड़ा गया और उसे गोली मार दी गई। उसकी नई पत्नी ने अखबारों में उसकी मौत का समाचार तक प्रकाशित करवाया ताकि ब्रिटिश और सोवियत अधिकारी कुछ प्रतिक्रिया करें। पर रीली के बारे में सब चुप्पी साधे रहे। अगले पांच साल में कई रूसी शरणार्थियों ने बताया कि उन्होंने रीली को बुत्यर्सकी (Butyrski) जेल के अस्पताल में देखा था। कुछ ने कहा कि रूसियों की यातनाएं सहते-सहते वह पागल हो गया है।

पर द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान सोवियत गद्दार वाल्टर क्रिवित्सकी (Walter Krivitsky) ने बताया कि रीली ने ब्रिटेन में रूसियों के लिए भी जासूसी की थी। सन् 1966 में एक रूसी पत्रिका ने दावा किया कि गिरफ्तारी पर रीली ने अमरीकी और ब्रिटिश सीक्रेट सर्विस के रहस्यों के बारे में सब कुछ उगल देने का प्रस्ताव किया था। रीली की मौत के रहस्य की असलियत केवल के.जी.बी. कीं फाइलें ही बता सकती हैं। सन् 1983 में ब्रिटेन में रीली के जीवन पर एक टेलीविजन फिल्म बनाई गई जो अत्यंत लोकप्रिय हुई। ■■

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सर वेरनोन केल
(Sir Vernon Kell)

जिसने प्रथम विश्व युद्ध में जर्मनी के इरादों पर पानी फेरा

ब्रिटिश सीक्रेट सर्विस एम.आई.-5 के स्थापना-स्तंभ सर वेरनोन केल ने जर्मन जासूस हैंस लोदी का भेद जान लिया था। प्रथम विश्व युद्ध में कैसर (Kaiser) की जर्मन फौजों की पराजय में जासूसी के इस कारनामे ने बहुत बड़ी भूमिका निभाई। अपने कार्यकाल में केल ने ब्रिटेन में फैले जर्मन जासूसों का सफाया करने में जबरदस्त जासूसी कुशलता तथा सूझबूझ का परिचय दिया।

बीसवीं शताब्दी की शुरुआत ही हुई थी कि जर्मन शासक कैसर विल्हेल्म द्वितीय (Kaiser Wilhelm II) ने ब्रिटेन पर हमले की तैयारियां शुरू कर दीं। सन् 1902 आते-आते जर्मन जासूसों की ब्रिटेन में घुसपैठ शुरू हो गई। सात-आठ साल में कैसर के जासूस ब्रिटेन के चप्पे-चप्पे में फैल गए। एक-एक खबर बर्लिन (Berlin) पहुंचने लगी। ब्रिटेन में प्रतिजासूसी के काम के लिए एम.ओ-5 (M.O.-5) नामक संगठन बनाया गया जिसे बाद में एम.आई-5(M.I.-5) का नाम दिया गया। यह आज तक ब्रिटेन का सबसे बड़ा जासूसी संगठन है। कैप्टन वेरनोन केल (Vernon Kell) इसके संस्थापक थे। उन्होंने अपनी चतुराई से कैसर के जासूसों का सफाया करने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई।

वेरनोन केल ने एक विशेष काम यह किया कि उन्होंने स्काटलैंड यार्ड (Scotland Yard) की स्पेशल ब्रांच (Special Branch) को अपनी संस्था से जोड़ दिया। ब्रांच के सुपरिटेंडेंट पैट्रिक क्विन (Patrick Quinn) ने केल को पूरा सहयोग दिया। इससे एम.आई-5 की सफलताओं के प्रतिशत में अप्रत्याशित बढ़ोतरी हुई। सन् 1910 में कैसर ब्रिटेन के राजा एडवर्ड सप्तम (Edward VII) के अंतिम संस्कार में भाग लेने लंदन पहुंचा। कैसर के दल में नौसेना का एक कैप्टन भी था जो अक्सर लंदन की कालेडोनियम रोड (Caledoniam Road) पर एक नाई की दुकान पर जाया करता था। वेरनोन केल को पहले से शक था कि यह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एम.आई.-5 के संस्थापक मेजर-जनरल वेरनोन केल

कैप्टन जर्मन जासूसी विभाग से सम्बन्ध रखता है। नाई की दुकान भी कार्ल गुस्ताव अंर्स्ट (Gustav Ernst) नामक एक जर्मन चलाता था। केल ने सोचा कि जर्मनी के शाही दल में आए इस भद्र व्यक्ति को अगर अपने बाल ही कटाने हैं तो वह अपने डेरे पर ही नाई बुलवा सकता है। उन्होंने कैप्टन के पीछे अपने भेदिए छोड़ दिए। नाई के पास आने वाली डाक भी बीच में ही खोलकर पढ़ी जाने लगी।

नतीजन यह बात सामने आई कि नाई गुस्ताव अंर्स्ट जर्मन खुफिया विभाग के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सक्रिय डाकघर के रूप में काम करता था। बर्लिन से उसके पास संदेश आते थे, जिनमें जर्मन जासूसों के लिए हिदायतें होती थीं और इंग्लैंड स्थित जर्मन एजेंट अपनी रिपोर्ट उसी के जरिए जर्मनी भेजते थे।

केल ने अप्रतिम जासूसी सूझबूझ का परिचय देते हुए अंर्स्ट की दुकान पर एकदम छापा न मारकर इंतजार करने का निर्णय लिया ताकि धीरे-धीरे बाकी जर्मन एजेंटों का भी पता लगाया जा सके। उन्होंने पूर्ण सतर्कता बरती कि अंर्स्ट को अपना भेद खुल जाने का शक न हो जाए अन्यथा वह संदेशों के आदान-प्रदान का नया जरिया निकालने की कोशिश कर सकता था। केल ने इस दौरान केवल उन्हीं जर्मन एजेंटों का धर-दबोचा, जिनके हाथ बहुत गंभीर रहस्य लग गए थे या जिनसे तत्क्षण खतरा पैदा हो सकता था। एम.आई-5 के जालसाजी विशेषज्ञों का सहारा लेकर केल ने कुछ गलत सूचनाएं भी जर्मनों को दिलवाकर उन्हें चक्कर में डाला। केल ने दिखाने के लिए कुछ इधर-उधर छापे भी डाले ताकि जर्मनों को लगे कि ब्रिटिश पुलिस सो नहीं रही है। एकदम ढील देने की स्थिति में उन्हें शक हो सकता था कि ब्रिटिश जासूस जानबूझकर ऐसा कर रहे हैं।

4 अगस्त, 1914 को प्रथम विश्व युद्ध शुरू हुआ। अगले दिन ही स्पेशल ब्रांच की मदद से केल ने अंर्स्ट और 23 अन्य जर्मन जासूसों को दबोच लिया। लंदन, न्यू कैसल, बैरो, पोर्ट्समाउथ, साउथम्पटन, ब्राइटन, फाल माउथ और वारविक में सक्रिय सभी जर्मन एजेंट शिकंजे में आ गए। फ्रांसीसी सेनाओं से लड़ रही जर्मन सेनाओं को अनायास ही ब्रिटिश फौजियों से टक्कर लेनी पड़ी। रातों-रात इंग्लिश चैनल (English Channel) पार करके ब्रिटिश फौजें मोंस (Mons) की खाइयों में मोर्चा जमा कर बैठ गई थीं। यह केल का ही कमाल था कि कैसर के जासूस उसे ब्रिटिश तैयारी की कोई सूचना नहीं दे सके। उसने जर्मन गुप्तचर सेवा को पंगु करके रख दिया था।

जर्मनों ने ब्रिटेन में दोबारा अपने जासूसों का जाल बिछाना चाहा पर उन्हें तनिक भी कामयाबी नहीं मिल सकी। केल ने अखबारों के जरिए जबरदस्त प्रचार किया कि जनता भी जर्मन जासूसों को पकड़वाने में मदद करे। जिस पर शक हो, उसकी रिपोर्ट की जाए। नागरिकों ने धड़ा-धड़ संदिग्ध लोगों के बारे में खबरें देनी शुरू कर दीं। नार्वे के एक पत्रकार के कमरे की तलाशी केवल इस शक की बिना पर ली गई कि वह इतना गुप-चुप कमरा बंद किए क्यों पड़ा रहता है। यह पत्रकार विदेशी जासूस निकला। उसके पास अदृश्य स्याही पाई गई। स्याही की बोतल पर गला साफ करने के लोशन का चिप्पा लगा हुआ था।

अमरीका में रहने वाले जर्मन जासूस कार्ल हांस लोदी (Carl. Hans Lody) को गिरफ्तार करके जर्मनों को करारी मात दे देने का कारनामा भी केल ने ही अंजाम दिया था। सितंबर, 1914 को लोदी एक सैलानी का भेस रखकर स्काटलैंड पहुंचा। उसने स्वीडन में अपने जर्मन संपर्क को एक खुफिया तार भेजा जिसमें लिखा था—"उम्मीद है, इन बदकार जर्मनों को हम जल्दी ही हरा देंगे।" स्वीडन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और अमरीका, दोनों ही तटस्थ देश थे। इसलिए उनके बीच इस तरह के संदेशों का आदान-प्रदान शक पैदा करने वाला था। केल ने सोचा कि इस फिजूल सी बात के लिए कोई इतना पैसा क्यों बर्बाद करेगा? उसने फौरन लोदी का पीछा करवाना शुरू किया। लोदी उस समय पूरे देश में घूमता फिर रहा था। केल के जासूसों को पता चला कि लोदी ने जर्मनी को खबर भेजी है कि रूसी फौजें स्काटलैंड में मित्र राष्ट्रों को मजबूती देने के लिए आ रही हैं। वास्तव में यह एक गलत खबर थी जो जानबूझकर लोदी के हाथ इस तरह लगने दी गई थी जैसे कि एकदम सही हो। लोदी पर यकीन करके कैसर ने रूसियों को रोकने के लिए दो डिवीजन फौज मोर्चे से हटा दी जिससे 'मारने' (Marne) की लड़ाई में जर्मन फौजें कमजोर पड़ गईं। अगर ऐसा न होता तो बहुत कुछ संभव था कि जर्मन युद्ध जीत जाते। लोदी की इस गलत सूचना का नतीजा जर्मनों की करारी हार में निकला। नवंबर, 1916 में लोदी को गिरफ्तार करके गोली से उड़ा दिया गया।

केल ने जर्मन जासूस माता हारी (Mata Hari) को भी पहचाना और फ्रांसीसियों को उसकी हरकतों की खबर दी। केल की चेतावनी पर ही 15 अक्तूबर, 1917 को माता हारी को गोली से उड़ाया गया। केल की नजरों से केवल एक विदेशी जासूस बच पाया। वह था जूल्स सिल्बर (Jules Silber), जो लंदन के पोस्टल सेंसर (Postal Censor) कार्यालय में काम करता था। सिल्बर दूसरों के पत्र पढ़कर कैसर के पास सूचनाएं भेज देता पर उसके खुद के पत्र बिना सेंसर हुए ही गुजर जाते थे क्योंकि वह उन पर 'सेंसर द्वारा पास' (Passed by Censor) की मुहर लगा देता था। सिल्बर ने जर्मनी को 'क्यू' जहाजों ('Q' Ships) के बारे में बड़ी जरूरी सूचना पहुंचाई। जर्मन पनडुब्बियों के हमले का मुकाबला करने के लिए अंग्रेजों ने ये युद्धपोत अटलांटिक महासागर में छिपा रखे थे। कैसर के बेड़े को इस खबर से बड़ा फायदा हुआ।

इस नाकामयाबी के बावजूद कहा जा सकता है कि यदि केल ने जासूसी की लड़ाई में जर्मनी को शिकस्त न दी होती तो जर्मनों ने प्रथम विश्व युद्ध में ब्रिटेन के ऊपर जीत हासिल कर ही ली होती। केल के जमाने में विदेशी जासूसी को तब तक गंभीरता से नहीं लिया जाता था जब तक युद्ध शुरू न हो जाए। शांतिकाल में जासूसी करना अपराध नहीं था। केल ने सरकारी गोपनीयता कानून को बदलवाने की काफी कोशिश की। सन् 1911 में इस कानून को परिवर्तित किया गया, जिससे केल को विदेशों द्वारा बिछाए गए जासूसी तंत्र की कमर तोड़ देने का मौका मिल गया। शांतिकाल में जासूसी करना कानूनन जुर्म हो गया। नए कानून के अन्तर्गत डा. आर्मगार्ड (Dr. Armgaard), कार्ल ग्रेव्स (Karl Graves), हाइनरिख ग्रॉस (Heinrich Grosse) और फ्रेड्रिक एडोल्फस श्रूडर (Fredrick Adolphus Schroeder) जैसे जर्मन जासूसों को गिरफ्तार करके केल ने सजा दिलवाई।

इन सेवाओं के लिए ब्रिटेन की महारानी ने केल को 'सर' (Sir) की उपाधि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कार्ल हान्स लोडी

प्रदान की। वे कैप्टन से मेजर जनरल के पद तक पहुंचे। द्वितीय विश्व युद्ध होने तक भी केल के ऊपर ही प्रतिजासूसी की जिम्मेदारी थी लेकिन उस जमाने के नेता सर विंस्टन चर्चिल (Winston Churchill) से केल के मतभेद हो गए। यही केल के पतन का कारण बना। लेकिन इससे पहले ही वे जासूसी के इतिहास में अपना नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा चुके थे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विल्हेल्म कनारिस
(Wilhelm Kanaris)

जो हिटलर के उत्थान और पतन—दोनों के लिए जिम्मेदार था

जिंदगी किस-किस मोड़ पर कैसे-कैसे रंग बदल सकती है—यह विडंबना विल्हेल्म कनारिस की जिंदगी में पूरी तरह से दृष्टिगोचर होती है। एक मामूली से नौसैनिक के रूप में अपनी जिंदगी की शुरुआत करने वाले कनारिस को सन् 1939 में हिटलर ने एडमिरल बना दिया था। इसके पीछे थे उसके द्वारा अंजाम दिए गए वे बेजोड़ जासूसी कारनामे, जिन्होंने जर्मनी में हिटलर की सत्ता स्थापित करने में नींव के पत्थर की भूमिका निभाई थी.... पूरे छः साल बाद उसी हिटलर के आदेश पर सन् 1945 में कनारिस को क्रूरतम मौत इनाम में दी गई थी। इसके पीछे थे—कनारिस के वो कारनामे, जिन्होंने हिटलर के ताबूत में कील ठोंकने की भूमिका निभाई थी—और बदल के रख दी थी इतिहास की समूची धारा....

8 अप्रैल की सुबह पांच बजे जर्मनी के फ्लोरेंसबर्ग स्थित नाजी यातना शिविर में एक कैदी को लाया गया। उसके शरीर पर कपड़ों का एक तार भी नहीं था—बल्कि उनकी जगह थे चोटों के अनगिनत नीले-काले निशान, जो उसको दी गई अत्यन्त क्रूर तथा भयानक यातनाओं की कहानी चीख-चीखकर कह रहे थे। कुछ देर बाद बकरे को काटने वाले कसाई की तरह गेस्टापो के एक कुशल हत्यारे ने उसके गले में पियानो के पतले तार से बना एक फंदा फंसा दिया और फिर तिल-तिल कर उसकी गर्दन को हलाल करना शुरू कर दिया। कैदी ने कुछ क्षणों में बुरी तरह से तड़प-तड़प कर अपनी जान दे दी। इस दिल को दहला देने वाले वीभत्स दृश्य को वो लोग खड़े देख रहे थे, जो सिर्फ कुछ दिन पहले तक ही खुद उस कैदी को बेनागा सलाम ठोंका करते थे। यह मृत कैदी और कोई नहीं, बल्कि खुद नाजी खुफिया विभाग का चीफ—विल्हेल्म कनारिस था।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

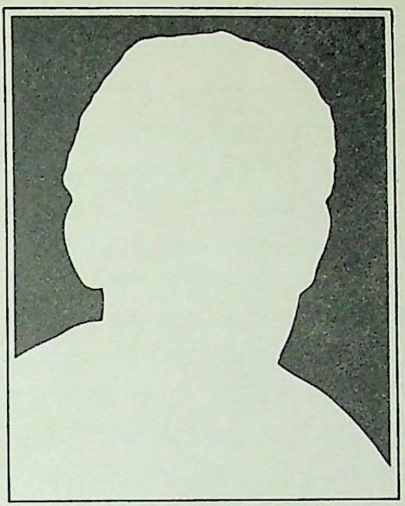

लगभग छः साल पहले 1 सितंबर, 1939 को हिटलर ने अपने मामूली से सैनिक कनारिस को एडमिरल बनाया था। कनारिस अपने "प्यारे फ्यूहरर" हिटलर का अत्यन्त विश्वासपात्र जासूस था। नाजी खुफिया विभाग की बागडोर भी वह ही संभाले हुए था। परन्तु शुरू से नाजी विचारधारा का होने के बावजूद पिछले कुछ सालों में विरोधियों पर किए जाने वाले जघन्य अत्याचारों से उसे अत्यन्त घृणा हो चली थी। इसी कारण वह धीरे-धीरे हिटलर से दूर होता चला गया तथा अंत में उसकी परिणती मित्र राष्ट्रों के डबल एजेंट के रूप में जाकर हुई। आज वह इसी का परिणाम भुगत रहा था।

कनारिस का जासूसी जीवन सन् 1914 में प्रथम विश्व युद्ध के साथ आरम्भ होता है। जर्मन नौसेना के एक काबिल अफसर के रूप में उसने अपने कैरियर की शुरुआत की थी। अपने युद्धपोत के शत्रुओं के घेरे में फंस जाने के बावजूद भी कनारिस चालाकी से रेडक्रास अधिकारी के वेश में वहां एक जर्मन जासूस की मदद से साफ बचकर भाग निकला था। उसने अमरीका पहुंच कर एक पोलिश यहूदी के वेश में जासूसी प्रारंभ कर दी। कनारिस का दूसरा अभियान था, स्पेन जाकर वहां की नौसेना में तोड़-फोड़ मचाना। उसने खुद को चिली का सौदागर बताकर ब्रिटिश जहाज पर यात्रा की। स्पेन में उसने अफ्रीका के कबीलों को पैसे देकर फ्रांस के खिलाफ विद्रोह के लिए संगठित करवाया। अमरीका, कनाडा और ब्रिटेन आदि मित्र देशों की सरकारी फाइलें कनारिस के ऐसे ही ढेरों कारनामो से भरी पड़ी हैं।

जर्मनी में कैसर(Kaiser)का पतन हो जाने का असर कनारिस पर भी पड़ा था। किसी तरह उसने वाइमर (Weimer) गणतंत्र के युद्ध मंत्रालय के नौवहन विभाग में घुसपैठ कर ली। वह अपने कमरे में बैठा-बैठा नाजी विद्रोह की नई-नई योजनाएं तैयार करता रहता था। स्पेन में उसने बड़े पैमाने पर हथियार जमा करने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के लिए वहां के राजा को तैयार भी कर लिया था। स्पेन में जर्मन पनडुब्बियां बनने लगीं। नौसैनिक जासूसी में कुशल कनारिस की यह एक भारी सफलता थी।

सन् 1929 में कनारिस की भेंट हिटलर के दाएं हाथ गोयरिंग (Goering) से हुई। गोयरिंग के द्वारा ही कनारिस पहले-पहल हिटलर के सम्पर्क में आया। इसके साथ ही वह नाजी विचारधारा के रंग में रंग गया। अब वह दिन-रात हिटलर तथा नाजी पार्टी के उत्थान के लिए कार्य करने लगा। वह जानता था कि नाजी पार्टी शीघ्र ही सीधे-साधे रास्ते से आसानी से सत्ता में नहीं आ सकती। इसीलिए उसने अपने खुरापाती दिमाग तथा नए-नए षड्यंत्र रचने की बेजोड़ क्षमता के बल पर सरकार को तोड़ने के लिए योजनाबद्ध खेल-खेलने शुरू कर दिए। सबसे पहले उसने वाइमर गणतंत्र के गुप्तचर विभाग को नाजी पार्टी के हक में इस्तेमाल करने की घिनौनी चाल खेली। उसने सामरिक महत्त्व की ढेर सारी सूचनाएं इटली को बेचकर पार्टी की गतिविधियों के लिए धन का बंदोबस्त किया। अपने जासूसी के सभी पैंतरों का भरपूर इस्तेमाल करते हुए कनारिस ने वाइमर गणतंत्र के अफसरों के जीवन-चरित्र की फाइलें तैयार कीं। चांसलर के गुप्त कागजातों की चोरी करवाई। इन दस्तावेजों के बल पर ही हिटलर ने चांसलर को धमकी दी कि इनमें प्रस्तावित भूमि-सुधारों के खिलाफ वह उद्योगपतियों और जमींदारों को संगठित करेगा। इन सभी उथल-पुथल की घटनाओं से बुरी तरह परेशान होकर राष्ट्रपति हिंडेनबर्ग (Hindenberg) ने चांसलर को बर्खास्त कर दिया। इसके साथ ही हिटलर जर्मनी के नए चांसलर के रूप में गद्दीनशीन हो गया।

इतनी सब गतिविधियों को चलाने के बावजूद कनारिस खुद कभी भी सामने नहीं आया। वह न तो कभी किसी सभा में शामिल हुआ, न ही उसका नाम कभी अखबारों इत्यादि में ही छपा और न ही कभी कोई उसकी तस्वीर तक ले सका। वह हमेशा पूरी तरह रहस्यमय ही बना रहा। खुफिया विभाग के किसी कमरे पर न तो उसकी नाम पट्टिका ही लगी थी और न ही कभी वह आम रास्ते से अपने ऑफिस में आता-जाता था। वह एक गुप्त दरवाजे से अपने ऑफिस में दाखिल होता था। खुफिया विभाग के लोग उसके बैठने के स्थान तक से परिचित नहीं थे। सभी लोगों के लिए वह बर्लिन के दूर दक्षिण भाग में रहने वाला एक मामूली आदमी भर था।

कनारिस का दूसरा हैरतअंगेज कारनामा स्पेन में फ्रांको (Franco) की तानाशाही के पैर जमाना था। उसने जर्मनी के आधुनिकतम हथियार फासिस्टों (Fascists) को और पुराने तथा बेकार हथियार गणतांत्रिक सेना को भिजवाए। कनारिस ने ही हिटलर पर दबाव डालकर फ्रांको को 50 करोड़ मार्क की सहायता दिलवाई थी।

उसने ब्रिटेन और अमरीका की योजना का पता लगाकर उन पर पानी फेर दिया। वह झूठे पासपोर्ट से लंदन पहुंचा। दो माह लंदन रहकर वह हॉलैंड गया। वहां उसने केली नामक एक जर्मन जासूस से मुलाकात की। ब्रिटिश खुफिया

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विभाग को केली पर पहले से संदेह था। वह लगातार कनारिस का भी पीछा कर रहा था। स्काटलैंड यार्ड (Scotland Yard) ने केली को डबल एजेंट बनने पर मजबूर कर दिया। अब केली बेकार की सूचनाएं जर्मनी को देता तथा महत्त्वपूर्ण सूचनाएं ब्रिटेन को। कनारिस ने इस दोहरी जासूसी को रोकने की कोई कोशिश नहीं की क्योंकि उसे अमरीका के युद्ध में शामिल होने के बारे में जानकारी मिल गई थी और इसका मतलब वह खूब समझता था—हिटलर और जर्मनी की हार। कनारिस सिर्फ इसी मकसद से डबल एजेंट बनने के लिए तैयार हुआ था क्योंकि वह नहीं चाहता था कि हिटलर के साथ-साथ जर्मनी भी रसातल में चला जाए। उसने अपने ओहदे का ख्याल न रखते हुए द्वितीय विश्व युद्ध के आखिर में मित्र राष्ट्रों को गुप्त सूचनाएं भेजनी प्रारंभ कर दी थीं। कनारिस ने ही अपनी चालाकी से हिटलर की उस विमान दुर्घटना की योजना को नाकामयाब कर दिया था, जिसमें इंग्लैंड के प्रधानमंत्री चर्चिल की मौत होनी थी। विमान दुर्घटना तो हुई लेकिन उसमें चर्चिल के रूप में बैठा हुआ कोई और व्यक्ति सिगार पी रहा था। नाजी सेना में हुई आंतरिक तोड़-फोड़ और जर्मनी में शांति आंदोलन सक्रिय करने के पीछे भी कनारिस का हाथ ही काम कर रहा था।

कनारिस ने रोम में पोप से मुलाकात की। उसने ब्रिटेन को खबर दी कि कुछ जर्मन जनरल रूस से संधि कर लेना चाहते हैं। इस सूचना के आधार पर ही बाद में माल्टा और तेहरान के सम्मेलनों में मित्र राष्ट्रों की बैठकों में योजनाएं तैयार की गईं। इसी बीच हिटलर को बम से उड़ा देने की साजिश हुई, जिसके नेता स्ताउफेनबेर्ग थे।

इस घटना के दो दिन बाद ही कनारिस को जर्मन पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। कनारिस की जगह लेने वाले जनरल शेलेन बर्ग को उसकी मेज की दराज से कुछ ऐसे कागजात मिले, जिन्होंने कनारिस के रूप को उजागर कर दिया और उसे मौत का सामना करना पड़ा। इन कागजातों में पोप के सचिव के साथ शांति संधि के लिए हुए पत्र-व्यवहार की प्रतियां, नाजी बर्बरता के वर्णन से भरी हुई एक निजी डायरी तथा हिटलर की मानसिक स्थिति का पता बताने वाली एक चिकित्सीय रिपोर्ट आदि प्रमुख थीं।

विल्हेल्म कनारिस की जीवन-लीला समाप्त कर दी गई। पर मरते समय उसे कोई भी अफसोस न था। उसे विश्वास था कि उसने जो कुछ किया जर्मनी और अपने देशवासियों के हित में ही किया। ■■

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

माता हारी
(Mata Hari)

प्रथम विश्व युद्ध की सबसे मशहूर महिला जासूस

माता हारी को दुनिया की सर्वप्रथम आधुनिक 'सेक्स स्पाई' माना जाता है। उसने जर्मनों के लिए जासूसी की। उसका कामोत्तेजक अप्रतिम सौन्दर्य ही उसका सबसे बड़ा हथियार था। फ्रांसीसियों ने उस पर जासूसी का आरोप लगाकर उसे गोली से उड़ा दिया। लेकिन जानकारों का ख्याल था कि माता हारी तमाम कोशिशों के बाद भी शायद ही कभी कोई बेहद महत्त्वपूर्ण गुप्त सूचना प्राप्त कर पाई हो। पर दूसरे पक्ष का दावा है कि वह एक अत्यंत खतरनाक पेशेवर जासूस थी। यदि उसका खात्मा नहीं किया गया होता तो वह प्रथम विश्व युद्ध की दिशा पलट सकती थी।

माता हारी का अर्थ होता है 'भोर का तारा'। गरट्रूड मारगरेट जैले (Gertrud Margrete Zelle) नाम की डच सुंदरी ने ''माता हारी'' के नाम से जासूसी करके प्रथम विश्व युद्ध की दिशा बदलने की नाकाम कोशिश की थी। माता हारी को आज दुनिया की सबसे ज्यादा चर्चित सेक्स जासूस माना जाता है। जावा में हवाई नृत्य सीखकर माता हारी फ्रांस की राजधानी पेरिस (Paris) में फौजी अफसरों की रातों की नींद हराम कर देने वाली एक कामोत्तेजक कैबरे डांसर बन गई। उन अफसरों से फौजी रहस्य पता लगाकर माता हारी ने जर्मनों को पहुंचाए। जर्मन जासूसों की सूची में माता हारी का नाम एच-21 (H-21) कोड के रूप में दर्ज था।

यह आज तक विवाद का विषय बना हुआ है कि माता हारी पेरिस, बर्लिन और मैड्रिड में जासूसी करने के बावजूद भी क्या वास्तव में कभी कोई महत्त्वपूर्ण सूचना हासिल कर सकी? सन् 1916 में हॉलैंड जाते हुए उसे फालमाउथ, इंग्लैंड में ब्रिटिश सीक्रेट सर्विस ने गिरफ्तार भी किया था। लंदन ले जाकर माता हारी को चेतावनी दी गई थी कि अगर उसने अपने रूप जाल में फौजी अफसरों को फांसना

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जारी रखा तो उसे उचित सजा दी जाएगी। माता हारी ने इस चेतावनी को गंभीरतापूर्वक नहीं लिया और नतीजन एक साल बाद उसे फायरिंग स्कवाड की मौत उगलती मशीनगनों का सामना करना पड़ा।

माता हारी का जन्म 7 अगस्त, 1876 को हॉलैंड के लीयूवार्डेन (Leeuwarden) नामक नगर में हुआ था। जब वह केवल 18 वर्ष की थी तो उसने अपने से काफी बड़ी उम्र के कप्तान मेक्लियाड (Macleod) से विवाह कर लिया। मेक्लियाड स्काटलैंड का निवासी था और डच प्रादेशिक सेना में काम करता था। विवाह के बाद ये दोनों एमस्टरडम (Amesterdam) के एक शानदार बंगले में रहने लगे और वहीं उनके एक पुत्र का जन्म हुआ। कप्तान को जुए की बुरी आदत थी। इसलिए उस पर कर्ज चढ़ता चला गया। यहीं से माता हारी को मजबूरन एक नए कुत्सित जीवन की शुरुआत करनी पड़ी। उसने एक धनिक प्रेमी को अपने प्रेम जाल में फंसा लिया और धीरे-धीरे उससे बड़ी रकमें ऐंठनी शुरू कर दीं।

कुछ समय पश्चात् माता हारी के एक पुत्री भी पैदा हुई। कप्तान का तबादला जावा हो गया। यहां भी उनका दाम्पत्य जीवन सुखी नहीं रह सका और आखिरकार जावा से लौटने के बाद माता हारी ने उससे तलाक ले लिया।

सन् 1903 में वह पेरिस चली गयी और वहां मॉडलिंग और नृत्य करके रोजी चलाने लगी। प्रथम विश्व युद्ध प्रारंभ होने तक वह पेरिस, बर्लिन, वियना, रोम और लंदन के मंचों पर काफी लोकप्रियता प्राप्त कर चुकी थी। विशिष्ट व्यक्तियों के बीच लोकप्रिय होने में माता हारी के कामोत्तेजक नृत्य ने उसकी बहुत बड़ी मदद की।

माता हारी ने लोगों को बता रखा था कि उसका जन्म दक्षिण भारत के मालाबार तट पर एक नर्तकी के घर हुआ था और उसके जन्म के समय ही उसकी माता की मृत्यु हो गयी थी। उसने यह बात भी फैला रखी थी कि उसका बचपन का नाम माता हारी है और उसका लालन-पालन एक शिव मंदिर में हुआ था। शब्द पर गौर करने से नाम अपने-आप में सार्थक भी प्रतीत होता है—माता हारी अर्थात् अपनी माता का हरण करने वाली।

काले बालों वाली सुंदरी माता हारी की लोकप्रियता धीरे-धीरे चरम शिखर छूने लगी। युद्ध आरम्भ होने के कुछ वर्ष पहले माता हारी ने लोरचि के एक जर्मन जासूस स्कूल में विशेष प्रशिक्षण भी प्राप्त किया। सन् 1912 में जब युद्ध शुरू हुआ तो माता हारी बर्लिन के पुलिस प्रमुख के साथ जीप में बैठकर जर्मनी की सड़कों पर घूमती-फिरती थी। पर तब वह एक तटस्थ देश की नागरिक थी और उसकी स्थायी संपत्ति फ्रांस में थी। युद्ध के बावजूद हव सन् 1915 में फ्रांस लौट आयी। वहां आकर उसने नृत्य छोड़ दिया और एक फैशनेबल महिला के रूप में मशहूर हो गयी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आधुनिक युग की सबसे मशहूर 'सैक्स-स्पाई' माता हारी

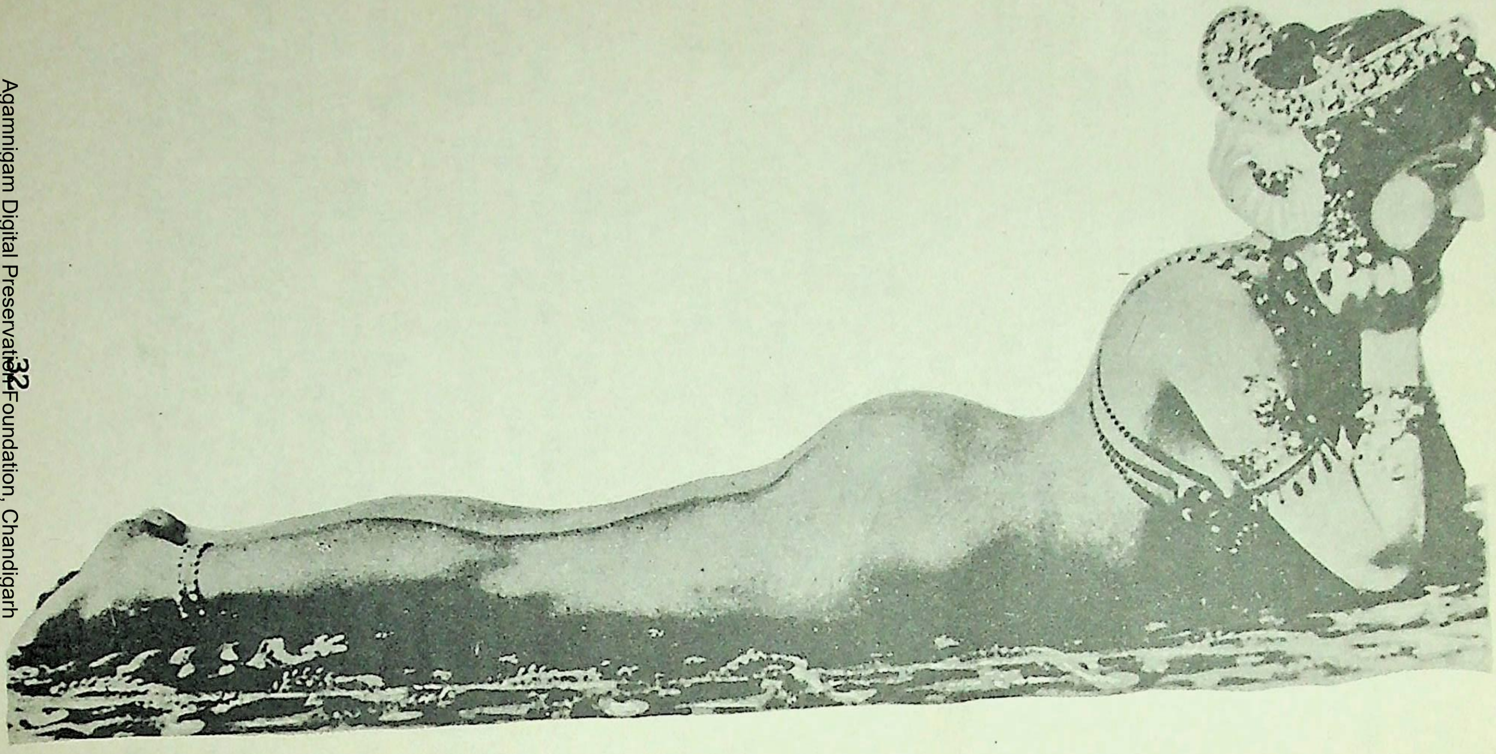

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

माता हारी के फ्रांस लौटने से पहले ही फ्रांस के गुप्तचर विभाग को उसके कार्य-कलापों की पूरी जानकारी प्राप्त हो चुकी थी। विभाग जानता था कि जर्मनी के पुलिस प्रमुख, वहां के राजकुमार और दूसरे अधिकारियों के साथ उसके गहरे संबंध हैं, किन्तु इसका कोई सबूत उनके पास न था। इसके विपरीत वहां के बड़े लोगों के बीच वह इतनी लोकप्रिय थी कि उस पर हाथ डालना सांप के बिल में हाथ डालने जैसा था। अपनी चालाकी से माता हारी वर्षों तक फ्रांस के गुप्तचर विभाग की सभी चालों को नाकामयाब करती रही, किन्तु अंत में 13 फरवरी, 1917 को पेरिस के एक होटल में उसे गिरफ्तार कर लिया गया। वह वहां मैड्रिड से लौटने के बाद आकर टिकी थी। मैड्रिड में उसने जर्मन गुप्तचर विभाग के कई वरिष्ठ अधिकारियों से गुप्त मुलाकातें की थीं।

उसके विरुद्ध लगाए गए आरोपों के सबूत के रूप में उस तार की नकल पेश की गई, जो जर्मन सेना के प्रधान कार्यालय से मैड्रिड स्थित दूतावास को भेजा गया था। तार में संदेश दिया गया था कि एच-21 (माता हारी का गुप्त कोड नंबर) को पेरिस लौटने पर 15,000 मुद्राएं दे दी जाएं। गुप्तचर विभाग को इस बात का भी प्रमाण मिल गया कि सन् 1915 में फ्रांस आने से पहले माता हारी ने जर्मन गुप्तचर विभाग से 30,000 मार्क प्राप्त किए थे।

माता हारी के संबंध फ्रांसीसी, ब्रिटिश और रूसी उच्चाधिकारियों से थे और उनसे ही वह महत्त्वपूर्ण सैनिक सूचनाएं प्राप्त करके जर्मन गुप्तचर विभाग को भेजती थी। उसका सूचनाएं भेजने का तरीका भी बड़ा विचित्र था। वह अपनी बेटी के नाम बड़े ही मासूम से प्रतीत होने वाले पत्र भेजती थी किन्तु उस भाषा में ही अनेक गुप्त संदेश छुपे रहते थे। उस पर लगाए गए आरोप-पत्र में उसे 50,000 सैनिकों की मौत के लिए उत्तरदायी ठहराया गया था। इन सभी आरोपों के तहत 15 अक्तूबर, 1917 को गोली मारकर माता हारी की जीवन लीला समाप्त कर दी गई तथा इसके साथ ही जासूसी की दुनिया का 'भोर का तारा' सदा के लिए अस्त हो गया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लावरेंती पावलोविच बेरिया
(Lavrenti Pavlovich Beria)

रूसी खुफिया विभाग का संस्थापक

स्तालिन के दाएं हाथ बेरिया ने अक्तूबर क्रांति के बाद सोवियत संघ में क्रांति के दुश्मनों से निपटने के लिए खुफिया पुलिस का सफल नेतृत्व किया। जिसने भी सरकार के खिलाफ जरा सी भी आवाज़ उठाई, बेरिया ने उसे तत्काल अपने एजेंटों द्वारा सूंघकर रास्ते से हटा दिया। के.जी.बी. से पहले रूस की सीक्रेट सर्विस की बागडोर पूरी तरह बेरिया के हाथ में ही थी। लेकिन स्तालिन की मौत के बाद सर्वोच्च पद पर पहुंचने की महत्त्वाकांक्षा ने दूसरों को मौत बांटने वाले बेरिया को आखिर में खुद मौत के दरवाजे पर पहुंचा दिया....।

सोवियत संघ की सीक्रेट सर्विस के जन्मदाता के रूप में फेलिक्स ट्जेरझिस्की का नाम लिया जाता है, पर उसे एक अंतर्राष्ट्रीय स्तर के शक्तिशाली संगठन के रूप में विकसित करने का श्रेय बेरिया को जाता है। लावरेंती पावलोविच बेरिया को के.जी.बी. का पितामह कहना ठीक होगा। सोवियत क्रांति के नेता वी.आई. लेनिन (V.I. Lenin) और उनके उत्तराधिकारी जोसेफ स्तालिन (Joseph Stalin) की अगुआई में बेरिया अपने राजनैतिक और जासूसी जीवन के शिखर पर पहुंचा पर ख्रुश्चेव के सत्ता में आने के बाद उसका सितारा डूब गया।

बेरिया का जन्म रूस के जार्जिया (Georgia) प्रांत में हुआ था। स्तालिन भी जार्जिया का ही रहने वाला था। कुछ लोग इस समानता से अंदाजा लगा लेते हैं कि बेरिया को सीक्रेट सर्विस का इंचार्ज बनाने के पीछे यही समानता काम कर रही होगी। पर यह तथ्य असलियत से कोसों दूर है। बेरिया बोल्शेविक पार्टी की शुरुआत में ही उसका सदस्य बन गया था। लेनिन ने खुद पहली बार उसे जासूसी के काम की जिम्मेदारी सौंपी थी। सन् 1921 से लेकर अपने जीवन के अंत तक बेरिया ने अपना एक-एक पल और अपनी प्रतिभा का हर पहलू सोवियत संघ के खुफिया तंत्र को मजबूत करने में लगा दिया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

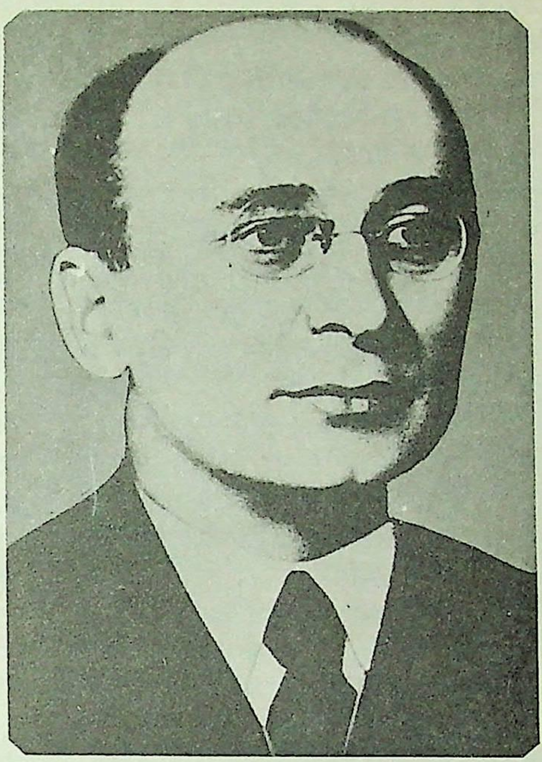

लावरेंती बेरिया

बेरिया स्टील फ्रेम का चश्मा लगाता था और उसके नैन-नक्श काफी तीखे थे। खासकर उसकी आंखें उसके व्यक्तितत्व के पैनेपन को उजागर करने वाली थीं। कहा जाता है कि जब स्तालिन ने उसे एन.के.वी.डी. यानी आंतरिक मामलों की पीपुल्स कमिस्तरियत (के.जी.बी. से पहले सोवियत सीक्रेट सर्विस का नाम) का मुखिया बनाया तो बेरिया का सबसे पहला काम था निकोलाई येजहोफ (Nicolai Yezhof) को मृत्यु दंड देने का इंतजाम करना। येजहोफ बेरिया से पहले एन.के.वी.डी. के मुखिया थे। येजहोफ खुद लोगों का 'सफाया' करने के विशेषज्ञ समझे जाते थे। बौना कद होने के कारण बेरिया उन्हें 'खूनी बौना' नामक उपनाम से पुकारता था।

बेरिया के नेतृत्व में एन.के.वी.डी. धीरे-धीरे सोवियत संघ में अपनी समानान्तर सरकार चलाने लगी। उसके पास अपनी फौज रहती थी,जिसकी खास वर्दी होती थी। बेरिया के हुक्म पर एक विशेष पुलिस फोर्स भी काम करती थी। एन.के.वी.डी. के पास अपने यातना-शिविर (Concentration Camp) और प्रकाशन विभाग थे। बेरिया ने सोवियत संघ के प्रतिभाशाली युवकों को सीक्रेट

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सर्विस में काम करने का प्रलोभन दिया। उनके लिए ऐसी-ऐसी सुविधाएं और अवसर पेश किए, जिनसे अधिकाधिक योग्य युवक पेशे के रूप में जासूसी को अपनाने लगे। बेरिया का साफ कहना होता था कि सीक्रेट सर्विस में काम का सीधा अर्थ है तलवार की धार पर चलना अर्थात् जरा से शक का मतलब होगा बदनामी और मृत्यु वरना सामाजिक प्रतिष्ठा, धन और आगे बढ़ने का एक खुला रास्ता।

द्वितीय विश्व युद्ध से पहले लाल सेना को गद्दारों से साफ करने की जिम्मेदारी भी बेरिया पर थी। उसने यह काम अत्यन्त बेरहमी से किया। जरा सा भी शक होने पर या साम्यवाद में जरा सी भी कमजोर आस्था वाले अफसरों को या तो निकाल दिया जाता या गिरफ्तार कर लिया जाता या फिर मौत के घाट उतार दिया जाता था। बेरिया के हत्यारे दस्तों ने देश के अंदर और बाहर बोल्शेविक राज्य के दुश्मनों के सफाए में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी। हर विरोध का सामना गोली से कर विद्रोहियों की आवाज को वह कंठ में ही दबवा देता था।

सन् 1941 में नाजियों ने रूस पर हमला बोल दिया। पूरा देश महान देशभक्ति की भावना के साथ युद्ध में कूद पड़ा। स्तालिन ने बेरिया को मोर्चे के पीछे की आंतरिक सुरक्षा का ख्याल रखने की जिम्मेदारी सौंपी। उसे उप-प्रधानमंत्री का पद दिया गया। बेरिया ने उन तमाम लोगों को, जिन्होंने निष्ठा और परिश्रम से देश के प्रति अपने कर्तव्य को पूरा किया, पुरस्कृत किया और निराश व हताश किस्म के लोगों की अच्छी-खासी खबर ली। बेरिया के तरीके कभी-कभी क्रूरता की हद भी लांघ जाते थे। उसका कहना था कि फौजियों को सीक्रेट पुलिस की गिद्ध दृष्टि की

स्तालिन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"बेरिया गद्दार है" कहने वाले रूसी प्रेजीडेंट ख्रुश्चेव

चुभन हमेशा महसूस होती रहनी चाहिए। दुश्मन को हराने के लिए यह भी महत्त्वपूर्ण है कि उसे फौजियों के बीच घुसपैठ करने का कोई भी मौका नहीं मिलना चाहिए। बेरिया की सफलतापूर्ण सेवाओं ने उसे 'मार्शल ऑफ सोवियत यूनियन' (Marshal of Soviet Union) की उपाधि दिलवायी।

बेरिया से डरने वालों और नफरत करने वालों की संख्या भी कम नहीं थी। देश के सर्वाधिक शक्तिशाली व्यक्ति होने के बावजूद बेरिया ने स्तालिन की मौत के बाद अपने हश्र का अंदाजा लगाने में गलती की और यही गलती उसकी मौत का आखिरी कारण बनी। सन् 1953 में स्तालिन की मृत्यु हुई। ख्रुश्चेव, मेलिकोन और उसके साथियों को लगा कि केवल बेरिया ही उनके रास्ते का कांटा बन सकता है। स्वयं बेरिया में सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी का महासचिव बनने की महत्त्वकांक्षा भी बलवती होने लगी थी। एक दिन बेरिया ज़ब इन नेताओं से मिलने पहुंचा तो उसे अचानक गिरफ्तार कर लिया गया। उसके ऊपर मुकदमा चलाया गया। बेरिया पर राज्य विरोधी और पार्टी विरोधी गतिविधियों का आरोप लगाया गया। यहां तक कहा गया कि वह ब्रिटेन का जासूस है और उसने सोवियत क्रांति के साथ गद्दारी की। सजा के रूप में बेरिया को गोली मार दी गई।

एन.के.वी.डी. को बेरिया के साथ ही दफन कर दिया गया। एन.के.वी.डी. का नाम बदलकर के.जी.बी. रख दिया गया। ■■

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

डा. रिचर्ड सोर्गी

(Dr. Richard Sorge)

जिसने द्वितीय विश्व युद्ध की धारा ही पलट दी

जर्मन पत्रकार के रूप में अपने कैरियर की शुरुआत करने वाले डा. रिचर्ड सोर्गी ने राजनीति शास्त्र में डाक्टरेट कर रखी थी। उसे एशियाई मामलों का विशेषज्ञ माना जाता था। कम्युनिज्म में अपनी आस्था के कारण उसने रूस के लिए जासूसी करनी आरम्भ की तथा ऐसे-ऐसे कारनामे अंजाम दिए, जिन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध की धारा ही पलट दी। सोर्गी ने पहले नाजी पार्टी की सदस्यता पाने में सफलता प्राप्त की तथा बाद में बड़ी चालाकी से टोक्यो स्थित जर्मन दूतावास में घुसपैठ कर अपना सिक्का यहां तक जमा लिया कि जर्मन सीक्रेट सर्विस गेस्टापो (Gestapo) तक के अधिकारी उससे परामर्श करने लगे। उसने ही स्तालिन को यह सूचना दी थी कि जापानी रूस पर हमला नहीं करेंगे, जिसके आधार पर ही रूस अपनी रणनीति तय कर हिटलर पर विजय पाने में सफलता प्राप्त कर सका।

डा. रिचर्ड सोर्गी ने अगर जापान से स्तालिन (Stalin) को गुप्त रूप से यह सूचना न भेजी होती कि जापानी पूर्वी मोर्चे की ओर से रूस पर हमला नहीं करेंगे, तो दो मोर्चों पर ताकत बट जाने के कारण पश्चिमी मोर्चे पर हिटलर (Hitler) के मुकाबले रूस की लाल सेना कमजोर पड़ जाती और बहुत कुछ संभव था कि द्वितीय विश्व युद्ध के परिणाम कुछ और ही होते। सोर्गी की सूचना पर ही विश्वास करके स्तालिन ने पूर्वी मोर्चे से सेनाएं हटाकर पश्चिमी मोर्चे पर भेज दी थीं। यहीं से ही द्वितीय विश्व युद्ध में निर्णायक मोड़ आना शुरू हुआ। अपनी पूरी ताकत के साथ लाल फौजों ने जर्मन फौजों को खदेड़ना शुरू किया और पीछा करते-करते बर्लिन पहुंचकर ही दम लिया। पर इसके बदले में जापान में सोर्गी को अपनी जान का बलिदान करना पड़ा। जर्मन भाषा के पत्रकार और पूर्वी एशिया के इतिहास के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

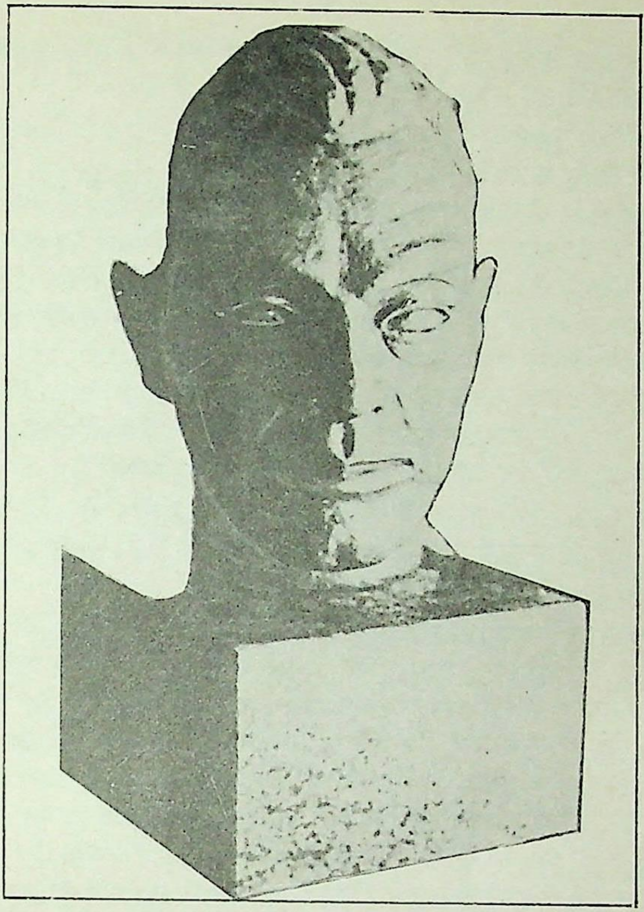

डॉ. रिचर्ड सोर्गी की प्रतिमा

विशेषज्ञ डा. रिचर्ड सोर्गी की कहानी जासूसी के ऐसे ही सनसनीखेज कारनामो से भरी पड़ी है।

सोर्गी का जन्म रूस के वाकू (Vaku) प्रांत में हुआ था। वह जर्मन पिता और रूसी मां की संतान था। उसने जर्मन भाषा में पत्रकारिता का पेशा अपनाया था। उसे कई भाषाएं बोलने में गजब की महारथ हासिल थी।

लम्बा कद, नीली आंखें, मोहक मुस्कराहट और कम्युनिज्म के प्रति पूर्ण वफादारी की भावना आदि गुणों ने मिलकर सोर्गी को सोवियत संघ के लिए एक अत्यत उपयोगी जासूस के रूप में स्थापित कर दिया था। सोर्गी ने ही सबसे पहले स्तालिन को यह अतिमहत्त्वपूर्ण सूचना दी थी कि पर्ल हार्बर (Pearl Harbour) पर जापानी कब हमला करेंगे। स्तालिन ने जानबूझकर यह सूचना अमरीका को नहीं दी। पर्ल हार्बर पर हुए हमले के कारण बदला लेने के लिए अमरीका की

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

राष्ट्रीय भावना भड़क उठी। अमरीका के युद्ध में कूदने के साथ ही विशेषज्ञों ने हिटलर की हार की भविष्यवाणी करनी शुरू कर दी थी।

सोर्गी की पढ़ाई बर्लिन के जर्मन स्कूलों में हुई थी। उस पर मार्क्सवाद के गहरे प्रभाव की वजह थे उसके चाचा एडोल्फ सोर्गी (Edolf Sorge) जो कार्ल मार्क्स (Karl Marx) के सचिव थे। प्रथम विश्व युद्ध में सोर्गी फौज में भर्ती हुआ और लड़ाई में दो बार घायल हुआ। दूसरी बार अस्पताल के बिस्तर पर पड़े-पड़े उसमें पढ़ने की भूख जागी। उसने हैम्बर्ग (Hamburg) और बर्लिन विश्वविद्यालयों में अध्ययन करके सन् 1920 में राजनीति शास्त्र में डाक्टरेट प्राप्त की। सोर्गी ने कुछ दिन अध्यापन किया और उसके बाद कोयलाखान में काम करना शुरू कर दिया। सन् 1922 से उसने अखबारों में लिखने की शुरुआत की। अक्तूबर, 1919 में स्थापित हुई जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी के हैम्बर्ग शाखा का सोर्गी शुरू से ही सदस्य था। बाद में सोर्गी को जापान में रहने का भी मौका मिला।

सोर्गी की असाधारण योग्यता और कार्यकुशलता से प्रभावित होकर सोवियत नेताओं ने उसे मास्को बुला लिया। वह कोमिंटर्न यानी कम्युनिस्टों के अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में काम करने लगा।

तीन साल तक कोमिंटर्न में काम करने के बाद सन् 1927 में सोर्गी का जासूसी की दुनिया में अवतरण हुआ। वह जर्मन पत्रकार के वेष में दो साल तक स्कैण्डेविनियन देशों में घूमता रहा। उसने इस दौरान ब्रिटेन का चक्कर भी लगाया। सन् 1950 में उसे चीन भेज दिया गया। सोर्गी ने शंघाई में अपना दफ्तर खोला तथा वहां से ह्वांग हो, नानकिन, कैंटन, बीजिंग और मंचूरिया का दौरा करने लगा। उसने जापान और चीन के इतिहास व संस्कृति का गहरा अध्ययन किया। खुद को एशिया की समस्याओं के विशेषज्ञ के रूप में स्थापित कर लिया। इसी दौरान उसने अपने दो सहायक बनाए जो आखिर तक उसके लिए काम करते रहे। इनमें एक थी चीन में बीस वर्ष से पत्रकारिता कर रही जर्मन महिला एग्नेस (Agnes) तथा दूसरा था चीनी राजनीति का विशेषज्ञ जापानी पत्रकार होजुमी (Hojumi)। होजुमी सैन्यवाद का कट्टर विरोधी था। उसके लेख इंग्लैंड और जापान दोनों देशों की मुख्य पत्र-पत्रिकाओं में छपते रहते थे। वह 'पैसिफिक रिलेशंस इंस्टीट्यूट' (Pacific Relations Institute) का स्थाई प्रतिनिधि भी था। जुलाई, 1938 में होजुमी को प्रधानमंत्री प्रिंस कोतो से अपनी दोस्ती के बल पर जापानी मंत्रिमंडल में गैरसरकारी सलाहकार का पद प्राप्त हुआ। तीन बार कोती की सरकार गिरी और तीन बार बनी, लेकिन इसके बावजूद होजुमी की स्थिति ज्यों की त्यों बनी रही। सोर्गी का तीसरा साथी था, शंघाई में गुप्त रेडियो स्टेशन चलाने वाला रूसी जासूस क्लाउसेन (Klausen)। क्लाउसेन सोर्गी का मास्को से संबंध जोड़े रखता था। वह अपने रेडियो स्टेशन की मदद से जापानी संदेश पकड़कर रूस भेजता रहता था।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सन् 1933 में सोर्गी ने बर्लिन के चार समाचार पत्रों का टोकियो में संवाददाता बनने की मंजूरी तो प्राप्त की ही तथा साथ-साथ न जाने किस प्रकार नाजी पार्टी की सदस्यता भी ग्रहण कर ली। उन चार जर्मन समाचार पत्रों में एक फ्रैंकफुर्तर साइतुंग *(Frankfurter Zeitung)* भी था, जिसके प्रतिनिधि के रूप में एग्नेस चीन में रूस के लिए जासूसी करती थी।

स्वयं को प्रतिष्ठित नाजी के रूप में स्थापित कर सोर्गी जर्मनी से अमरीका और कनाडा होता हुआ जापान लौटा। टोकियो में उसने एक संभ्रांत मुहल्ले में मकान लिया और पत्रकारिता शुरू कर दी। इस बीच उसने जापान के पत्रकारिक जगत पर अपना रुआब गालिब कर लिया। इस काम में उसके आकर्षक व्यक्तित्व और विस्तृत ज्ञान ने उसकी काफी मदद की।

सोर्गी की अन्तिम और निर्णायक उपलब्धि थी—टोकियो में जर्मन दूतावास में घुसपैठ कर लेना। शुरू में सोर्गी को इस काम में बार-बार असफलता ही हाथ लगती रही। वैसे भी यह कोई सरल काम नहीं था। परन्तु सोर्गी के भाग्य से एक ऐसा व्यक्ति जर्मनी का राजदूत बनकर टोकियो आया, जिसे एशियाई मामलों की कोई जानकारी न थी। उसे एक गैरसरकारी सलाहकार की जरूरत थी, जिसे अपनी नाजी प्रतिष्ठा के दम पर तथा एशियाई मामलों पर एक माने हुए विशेषज्ञ के रूप में सोर्गी ने पूरा करने में कोई भी कसर नहीं छोड़ी। राजदूत ओट (Ott) और सोर्गी की जान-पहचान इसी जरूरत के आधार पर बढ़ती चली गई।

सोर्गी ने अपने घर के अंदर एक डार्करूम बनवाया, जहां वह गुप्त दस्तावेजों के फोटो तैयार किया करता। ये फिल्में गुप्त रूप से रूस पहुंच जाया करती थीं। सोर्गी जापान की सूचनाओं का विश्लेषण करके राजदूत ओट को देता तथा बदले में ओट उसे जर्मन दस्तावेज और सूचनाएं दिखाकर उसकी राय मांगता। जर्मन दूतावास के अन्य अधिकारी भी सोर्गी को अपनी फाइलें दिखाने लगे। दूतावास के नाजी जासूसी संगठन ''गेस्टापो'' का प्रधान भी सोर्गी के चक्कर में फंस गया। दूसरा विश्व युद्ध आरम्भ होते ही सोर्गी को अधिकारिक रूप से दूतावास का मुख्य प्रेस सचिव बना दिया गया। अब वह नाजी विदेश विभाग का एक सम्मानित अधिकारी बन चुका था। उसे मोटी तनख्वाह और तमाम सुविधाएं मिलने लगीं। वह सुबह युरोप में युद्ध की प्रगति पर सूचनाएं तैयार करता और राजदूत ओट के साथ नाश्ते पर टोकियो के राजनैतिक क्षेत्र में उड़ने वाली अंफवाहों पर चर्चा करता। बातचीत के दौरान राजदूत उसे जरूरी सूचनाएं देता रहता।

27 सितम्बर, 1940 को धुरी राष्ट्रों की संधि पर हस्ताक्षर होते ही सोर्गी को जर्मनी की ही नहीं, वरन् जापान की भी अतिमहत्त्वपूर्ण गोपनीय सूचनाएं मिलने लगीं क्योंकि संधि के बाद जापानी सैनिक अधिकारी और ज्यादा खुले रूप से जर्मन दूतावास से जुड़ गये। अब सोर्गी को जापानी मंत्रिमंडल और सम्राट के महल के अंदर की गोपनीय सूचनाएं चाहिए थीं। इस काम के लिए होजुमी ने दस ऐसे व्यक्तियों को पटा लिया, जो भली-भांति यह काम कर सकते थे। रेस्तरां, बार,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चिड़ियाघर या घर पर उनकी मुलाकातें होतीं। दोनों में से कोई व्यक्ति सिगरेट पीने की इच्छा जाहिर करता। इस पर उसे सिगरेट की जो डिब्बी पेश की जाती, उसमें सूचनाओं और दस्तावेजों की फिल्में भरी होतीं। सिगरेट जला चुकने के बाद जब डिब्बी वापस की जाती तो दूसरा कहता ''इसे आप रखिए मेरे पास दूसरी है।'' सोर्गी का हथकंडा अपने गिरोह को छोटा रखने का था। 20 मई, 1941 को सोर्गी ने मास्को को बताया कि सोवियत सीमा पर जर्मन फौजों के 170-190 डिवीजन जमा हो रहे हैं। 20 जून को उसने सूचना दी कि हिटलर के हमले की दिशा मास्को की ओर होगी। ठीक 22 जून को हिटलर ने हमला कर दिया। इसके बाद सोर्गी ने रूस की सीमा पर जापानी गतिविधियों का विश्लेषण प्रारंभ कर दिया क्योंकि जापानी नीति के इस मोड़ पर ही सोवियत संघ का भविष्य बहुत कुछ टिका हुआ था। 15 जुलाई को जापान द्वारा रूस की पूर्वी सीमा पर हमला न करने की विश्लेषण युक्त सूचना सोर्गी ने रूस भेज दी। 2 जुलाई को जापानी मंत्रिमंडल की बैठक में यह निर्णय लिया गया था।

सोर्गी का पर्दाफाश उसकी गलती से नहीं हुआ। दक्षिण मंचूरिया रेलवे के टोकियो दफ्तर में रिस्तु (Ristu) नामक जापानी नौजवान की गिरफ्तारी से यह पोल खुली। रिस्तु, होजुमी का संपर्क था। उसने सब कुछ उगल दिया। सोर्गी के साथ क्लाउसेन भी पकड़ा गया। सोर्गी से तो जापानी पुलिस कुछ उगलवा नहीं पाई पर क्लाउसेन उसकी यातनाओं के सामने हार गया। अपने साथी का मनोबल टूटता देखकर सोर्गी को भी चुप रहने में कोई फायदा नजर नहीं आया। जर्मन राजदूत को आखिर तक जापानी पुलिस की इस कार्रवाई पर ऐतराज रहा। पर जब सोर्गी ने खुद ही रूस के लिए जासूसी करना मंजूर कर लिया तब जाकर उसके भी संदेह मिट गए। सोर्गी को सजा के रूप में मौत मिली, पर उसका नाम फासिस्टों की पराजय में महान भूमिका निभाने वाले जासूस के रूप में सदा के लिए अमर हो गया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इयान फ्लेमिंग

(Ian Fleming)

जिसने नाजी नेता रूडोल्फ हेस को अपने जाल में फंसाया

इयान फ्लेमिंग को सारी दुनिया में जासूसी चरित्र "जेम्स बांड" के रचियता के रूप में जाना जाता है। पर अपने जीवन में वे खुद एक कमाल के जासूस थे—यह तथ्य बहुत कम लोगों को ही पता है। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान उन्होंने अपनी लोमड़ी जैसी चालाकी तथा मकड़ी के समान जाल बुनने की अद्‌भुत क्षमता के आधार पर जो-जो कारनामे अंजाम दिए, वो कहीं-कहीं तो जेम्स बांड के काल्पनिक कारनामो को भी मीलों पीछे छोड़ देते हैं। ऐसा ही एक अविश्वसनीय कारनामा था—जर्मनी के डिप्टी फ्युहरर तथा हिटलर के दाएं हाथ रूडोल्फ हेस के अंधविश्वास का फायदा उठाते हुए उसे बुरी तरह से बेवकूफ बनाना तथा उसके गिर्द जाल बुनकर, बर्लिन से स्काटलैंड भाग आने पर मजबूर कर देना....।

"जासूस" शब्द के कानों में पड़ते ही तत्काल जो नाम दिमाग में आता है, वह है "007 ब्रिटिश सीक्रेट एजेंट जेम्स बांड" (James Bond) का। इस काल्पनिक जासूस चरित्र के रचियता थे इयान फ्लेमिंग, जो स्वयं भी द्वितीय विश्व युद्ध से पहले और लड़ाई के दौरान ब्रिटिश सीक्रेट सर्विस के एक अत्यंत सफल एजेंट रह चुके थे। फ्लेमिंग ने सीक्रेट सर्विस से अवकाश लेने के बाद ही जेम्स बांड को नायक बनाकर उपन्यास लिखने शुरू किए थे। जेम्स बांड के कारनामो का आधार काफी हद तक अंतर्राष्ट्रीय जासूसी में फ्लेमिंग के अपने ही अनुभव थे। उन्होंने अपने सक्रिय गुप्तचर जीवन में एक ऐसा कारनामा अंजाम दिया था, जिसका पटाक्षेप सन् 1987 में जाकर हुआ। बर्लिन (प. जर्मनी) की स्पांडाऊ (Spandau) जेल की एक एकांत कोठरी में अगस्त महीने में वार्डन को खिड़की से एक बूढ़े कैदी की लाश लटकती हुई मिली। दूसरे दिन सारी दुनिया के अखबारों में इस कैदी के आत्महत्या कर लेने की खबर छपी यह कैदी था—हिटलर का दायां हाथ रूडोल्फ हेस, जिसे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इयान फ्लेमिंग

नाजी जर्मनी में डिप्टी फ्यूहरर (Deputy Fuhrer) की उपाधि प्राप्त थी। द्वितीय विश्व युद्ध के शुरू होने से पहले हेस को धोखा देकर बर्लिन से स्काटलैंड बुलाकर गिरफ्तार करा देने की कुटिल योजना इयान फ्लेमिंग के ही दिमाग की एक नायाब उपज थी।

लंदन में उन दिनों अफवाह गर्म थी कि जर्मन फौजें ब्रिटेन पर हमला करने वाली हैं। इस माहौल में मई, 1941 को सारी दुनिया उस समय बिलकुल भौंचक्की रह गई थी जब एक मेसर्सस्मिट 110 (Messerschmitt 110) नाम जर्मन विमान अचानक स्काटलैंड के हवाई अड्डे पर उतरा। विमान में एक ही व्यक्ति था—जर्मनी का डिप्टी फ्यूहरर रूडोल्फ हेस। लोग उस समय और भी आश्चर्यचकित रह गए जब उन्हें यह पता चला कि रूडोल्फ हेस अपने ग्रह नक्षत्रों के मुताबिक की गई भविष्यवाणी के आधार पर ब्रिटेन भाग आया है। हेस को उसके प्रमुख ज्योतिषियों ने उसके भविष्य के बारे में यह बताया था कि अगर जर्मनी और ब्रिटेन की लड़ाई हुई तो हिटलर और नाजी जर्मनी का नाश निश्चित है। इस सारे घटनाचक्र में फ्लेमिंग का कारनामा यह था कि उन्होंने हेस के दिमाग में ज्योतिषियों के वेष में अपने एजेंटों के द्वारा यह कूट-कूट कर भरवा दिया था कि उसके और उसके नेता हिटलर के सितारे गर्दिश में हैं। ऑपरेशन रूडोल्फ हेस का पूरा विवरण रिचर्ड डीकन (Richard Deacon) की पुस्तक ए *हिस्ट्री ऑफ*

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

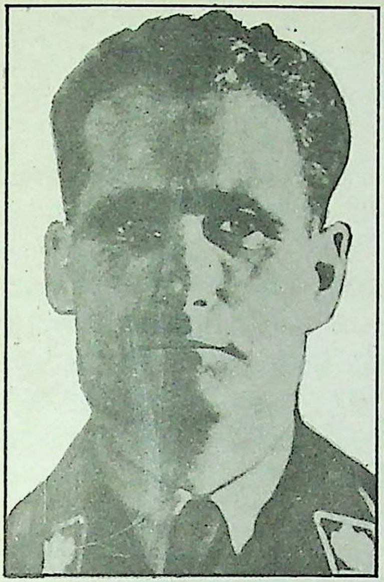

रूडोल्फ हेस

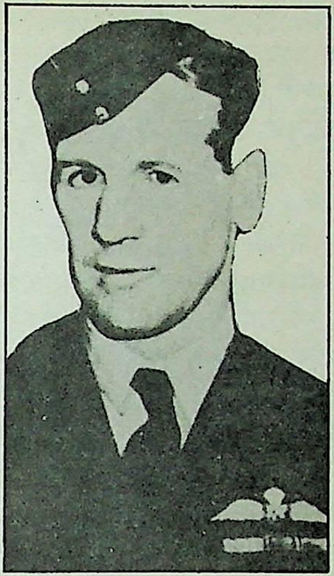

ड्यूक ऑफ हेमिलटन

ब्रिटिश सीक्रेट सर्विस (A History of British Secret Service) में मिलता है।

उन दिनों फ्लेमिंग ब्रिटिश नौसेना के खुफिया विभाग में काम करते थे। उन्हें यकीन था कि अगर किसी भी तरह किसी बड़े नाजी नेता को ब्रिटेन में 'डिफेक्ट' (defect) करा लिया जाए तो शायद ब्रिटेन पर हिटलर के हमले की संभावनाएं कम हो जाएंगी। उन्होंने हिटलर के सभी साथियों की फाइलों का अध्ययन किया और पाया कि उनका दांव डिप्टी फ्यूहरर रूडोल्फ हेस पर चल सकता है। उसने पाया कि हेस एक ऐसा अकेला नाजी है, जो चाहता है कि जर्मनी और ब्रिटेन में शांति समझौता हो जाए, ताकि जर्मन फौजें अपनी पूरी ताकत के साथ इत्मीनान से रूस को कुचल सकें। हेस के व्यक्तित्व में दूसरी विशेष बात जो फ्लेमिंग को अपने मतलब की लगी, वह थी, हेस का ग्रह-नक्षत्रों में अंधविश्वास।

सन् 1939-45 के बीच ब्रिटेन और जर्मनी एक दूसरे से मनोवैज्ञानिक संघर्ष में लगे हुए खींचातानी कर रहे थे। एक तरफ हिटलर का प्रचारमंत्री पाल जोसेफ गोएबल्स (Paul Joseph Goebbles) था तो दूसरी ओर ब्रिटिश सीक्रेट सर्विस थी। गोएबल्स अपने संपर्क के ज्योतिषियों से ऐसी भविष्यवाणियां करवाता, जो हिटलर के पक्ष में जातीं और लंदन से ब्रिटेन समर्थक ज्योतिषी सीक्रेट सर्विस की मदद से हिटलर की बर्बादी की भविष्यवाणी अखबारों में छपवाते। फ्लेमिंग ने जर्मन भाषा की कुछ पत्रिकाओं की नकली प्रतियां छपवाईं जिनमें हिटलर की तबाही के बारे में कई भविष्यवक्ताओं के दावे प्रस्तुत किए गए थे। इन पत्रिकाओं को चतुराई से जर्मनी में भेजा गया। नाजी नेताओं की निगाह इन पत्रिकाओं पर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पड़ी। वे भविष्यवाणियां पढ़कर आतंकित हो गए। ब्रिटेन के युद्ध मंत्रालय को लुई डि वोल (Louis de Wohl) नामक जर्मन शरणार्थी के जरिए सारी खबरें मिलती रहती थीं। रूडोल्फ हेस के पास निजी ज्योतिषियों की पूरी फौज थी। फ्लेमिंग ने सोचा कि इसी में घुसपैठ की जाए।

फ्लेमिंग ने लिस्बन (Lisben) और तानगीर (Tangier) में ब्रिटेन-जर्मन मैत्री संगठन 'द लिंक' (The Link) को पुनर्गठित किया। उसे यह जानकारी थी कि हिटलर के खुफिया प्रमुख एडमिरल कनारिस (Adm. Kanaris) की प्रतियोगिता में हेस ने भी एक अपनी सीक्रेट सर्विस बना डाली है जो लिस्बन और तानगीर में सक्रिय थी। फ्लेमिंग ने हेस के एजेंटों के कान में डाला कि कुछ असरदार अंग्रेज लॉर्ड जर्मनी और ब्रिटेन की दोस्ती के लिए रास्ता साफ कर रहे हैं। इसी बीच स्विटजरलैंड की मार्फत फ्लेमिंग ने चुपके से अपना एक एजेंट हेस के ज्योतिषियों के दल में शामिल करवा दिया था। इसने हेस को कई मनगढ़ंत भविष्यवाणियां सुनाईं और बताया कि स्काटलैंड के लॉर्ड ड्यूक ऑफ हैमिल्टन (Duke of Hemilton) दोनों देशों में दोस्ती चाहते हैं।

फ्लेमिंग को इस योजना में दो फायदे लगे। पहला तो यह कि ड्यूक ऑफ हैमिल्टन स्काटलैंड में थे। वहां उनकी ओर हेस की मुलाकात बिना शक के दायरे में आए हुए हो सकती थी। दूसरा यह कि हेस के एजेंट ड्यूक के खिलाफ कोई खास जानकारी इकट्ठी नहीं कर सकते थे। ड्यूक का व्यक्तित्व शक के दायरे से एकदम परे था।

इसके बाद फ्लेमिंग ने धड़ा-धड़ अपने एजेंटों से ब्रिटेन से जर्मनी की लड़ाई की सूरत में होने वाले खौफनाक हादसों की जाली भविष्यवाणियां करवानी शुरू कीं। हेस किसी एक व्यक्ति की बातों पर यकीन न करता, इसलिए झूठे ज्योतिषियों के पूरे दल ने यह काम किया। उन्हीं दिनों अप्रैल के आखिर में और मई, 1941 की शुरुआत में फ्लेमिंग की किस्मत से आकाश में तारों और ग्रहों की मौजूदगी में कुछ अजीब सा परिवर्तन हुआ। फ्लेमिंग के एजेंटों ने, जो अब तक हेस के विश्वासपात्र बन चुके थे, फौरन भविष्यवाणी की कि हिटलर का वक्त बहुत खराब चल रहा है। ऐसे में ब्रिटेन से युद्ध छेड़ना जर्मनी के लिए बहुत घातक होगा—लगभग आत्महत्या के समान। हेस की जन्मपत्री के माध्यम से यह साबित कर दिया गया कि अगर वह विदेश यात्रा करे और शांति की कोशिश करे तो बहुत फायदा हो सकता है तथा बुरी दशा को टाला जा सकता है। दो ज्योतिषियों ने तो हेस को यह भी बताया कि इस काम के लिए मई का महीना सबसे लाभदायक रहेगा।

इसी आधार पर हेस अपना विमान खुद चलाते हुए स्काटलैंड पहुंचा। पुलिस और गश्ती होमगार्डों ने उसे गिरफ्तार कर लिया। इस खबर से अमरीकनों ने खुशी मनाई पर ब्रिटेन के प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल (Winston Churchill) ने हेस के 'डिफेक्शन' को कोई बहुत फायदेमंद काम नहीं माना। उन्हें डर था कि कहीं गोएबल्स की प्रचार मशीनरी बड़े अंग्रेज नेताओं की चरित्रहत्या में न लग

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जाए। इसलिए उन्होंने हेस के बारे में जर्मनों की अधिकारिक राय को ही मान्यता दी कि अपनी मानसिक विक्षिपतता के कारण हेस ने यह हरकत की थी।

पर असलियत में यह हिटलर के ऊपर बहुत बड़ा आघात सिद्ध हुआ। उसने नाराज होकर अपनी खुफिया पुलिस गेस्टापो (Gestapo) को आदेश दिया कि तमाम ज्योतिषियों से पूछताछ की जाए। सैकड़ों लोग गिरफ्तार कर लिए गए। एक महीने के बाद जर्मनी में ज्योतिष का धंधा, भविष्यवाणी और टेलीपैथी, इत्यादि सभी परामनोवैज्ञानिक धंधे गैरकानूनी घोषित कर दिए गए।

सोवियत संघ के नेताओं ने भी हेस के मामले को बहुत गंभीरता से लिया। उन्होंने तय किया कि वे हेस को कभी माफ नहीं करेंगे। वजह साफ थी। हेस चाहता था कि ब्रिटेन से दोस्ती करके रूस को कुचल दिया जाए। द्वितीय विश्व युद्ध शुरू हुआ। हिटलर का डिप्टी फ्यूहरर उन दिनों ब्रिटेन के जेल की एकांत कोठरी में अपने दिन गुजार रहा था। हिटलर की पराजय हुई। न्यूरेंबर्ग में नाजी युद्ध अपराधियों पर मुकदमे चले, जिनमें हेस को आजन्म कैद हुई। रूसियों ने लगातार इस बात का विरोध किया कि हेस को दया करके छोड़ा जाए। उसे पूर्वी बर्लिन की स्पांडाऊ जेल में डाल दिया गया। आत्महत्या की कई असफल कोशिशों के बाद आखिरकार हेस को अपनी लम्बी कैद से छुटकारा पाने का मौका मिल ही गया। उसने खिड़की से लटक कर आत्महत्या कर ली।

इसी के साथ-साथ इयान फ्लेमिंग के जासूसी कारनामे का अंतिम अध्याय भी खत्म हो गया। जेम्स बांड की रोमांचक लेकिन काल्पनिक दुनिया और जासूसी के असली रूप में कितना गहरा फासला है, यह फ्लेमिंग के 'ऑपरेशन रूडोल्फ हेस' से भली प्रकार समझा जा सकता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एरिक एरिकसन
(Eric Ericson)

तेल का अद्भुत सौदागर

एरिकसन का जासूसी से दूर-दूर तक कुछ लेना-देना नहीं था। वह तो एक तटस्थ देश का तेल सौदागर था। पर धंधा करते-करते अपनी जान हथेली पर रखकर उसने जर्मनी के तेल-स्रोतों के बारे में मित्र राष्ट्रों की एयरफोर्स को ऐसी-ऐसी सटीक जानकारियां दीं, कि उन्होंने बिना किसी परेशानी के जर्मनों के तेल शोधक कारखानों पर बमबारी करके उनके परखचे उड़ा दिए और युद्ध के अंतिम दिनों में तो हालत यहां तक पहुंच गई कि युद्ध क्षेत्र में जर्मनों को ईंधन की कमी के कारण घोड़ों और मवेशियों से खींचकर टैंक और तोपें एक जगह से दूसरी जगह ले जाने पड़े। लेकिन ये कारनामे अंजाम देते हुए एरिकसन ने जिस तलवार की धार पर अपनी जिंदगी बिताई और उसके दिल ने जो-जो गम सहे, उनका दर्द तो केवल वही जानता था....

एरिक एरिकसन उस जासूस का नाम है, जिसने नाजियों को बिलकुल उनकी नाक के नीचे घुसकर पूरे तीन साल तक धोखा दिया। एरिकसन ने बेधड़क जर्मनी के कोने-कोने में घूमकर वहां के तेल शोधक कारखानों की मित्र राष्ट्रों की एयरफोर्स को ऐसी सटीक सूचनाएं दीं, जिनके आधार पर बिना किसी परेशानी के निशानों पर बमबारी करके उन्होंने हिटलर के ऊर्जा स्रोत पूरी तरह से तबाहो-बरबाद करके रख दिए। यह कारनामा बिलकुल नाजी सेना के शरीर की रक्त वाहिनियों को ही काट देने के समान था। पर इसे अंजाम देते हुए जो बदनामी और जो व्यथा एरिकसन ने सही, यह उसका दिल ही जानता है। एक दिन एरिकसन की आंखों के सामने ही उसकी प्रेमिका को जर्मनों ने गोलियों से भून डाला और मित्र राष्ट्रों के हित में अपनी असलियत बचाए रखने की विवशता से वह सबकुछ एक मूक दर्शक के समान देखता रहा और मुंह से उफ् तक न कर सका।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एरिकसन स्वीडन का नागरिक था लेकिन उसका जन्म ब्रुकलिन (Brooklyn), न्यूयार्क में हुआ था। पेशे से व्यापारी एरिकसन का काम सारी दुनिया में घूम-घूम कर तेल का सौदा करना था। इसी सिलसिले में द्वितीय विश्व युद्ध से पहले उसे अक्सर जर्मनी की यात्रा करनी पड़ती थी। उन दिनों जर्मनी में हिटलर के नाजीवाद का सांप सिर उठाने लगा था। एरिकसन की राजनीति में भी खासी समझ थी इसलिए फासीवाद के इस रूप के विकास से वह चिंतित हो उठा। एक दिन स्टॉकहोम में एक अमरीकी राजनयिक लारेंस स्टीनहार्ड के साथ रात के खाने पर बात करते हुए एरिकसन ने अपनी चिंता जताई। स्टीनहार्ड उन दिनों सोवियत संघ में अमरीका के राजदूत थे। स्टीनहार्ड को मालूम था कि एक न एक दिन अमरीका को भी लड़ाई में कूदना ही पड़ेगा। अमरीकी सीक्रेट सर्विस ने इस स्थिति के लिए पूर्व तैयारियां भी करनी शुरू कर दी थीं। अमरीकी सीक्रेट सर्विस को उन दिनों नाजियों की तेल सप्लाई के बारे में जानकारी की काफी जरूरत थी। स्टीनहार्ड को लगा कि एरिकसन यह काम बखूबी कर सकता है। फिर एरिकसन बहुत अच्छी जर्मन भी बोल लेता था। उन्होंने झट से यह प्रस्ताव रखा कि वह व्यापार के नाम पर जर्मनी जाए और वहां से जर्मनों की तेल सप्लाई के बारे में जानकारियां प्राप्त करके अमरीका को पहुंचाए। एरिकसन को लगा कि इस तरह वह नाजीवाद के विरोध में अपना योगदान दे सकता है। वह फौरन राजी हो गया।

इसके बाद लगभग 18 महीने तक एरिकसन बड़ी सावधानी से अपनी नाजी समर्थक छवि तैयार करता रहा। उसने अपने उन दोस्तों से झगड़ा कर लिया जो हिटलर विरोधी थे और अपने दफ्तर और घर में हिटलर की तस्वीरें भी टांगनी शुरू कर दीं। उसने स्वीडन में रहने वाले प्रमुख जर्मनों से ताल्लुकात बनाने शुरू किये। उसने किंग गुस्ताव (King Gustav) के भतीजे प्रिंस कार्ल गुस्ताव बर्नडाट (Prince Carl Gustav Bernadotte) को भी अपने साथ मिला लिया। प्रिंस ने भी जर्मन समर्थक होने का ढोंग किया और स्थानीय जर्मनों को अपने महल में शानदार दावत दी। इससे जर्मनों को यकीन हो गया कि एरिकसन उनका पक्का समर्थक है। हालांकि एरिकसन के साथ-साथ स्वीडिश समाज में प्रिंस कार्ल को भी इसकी कीमत चुकानी पड़ी। नाजी समर्थक का दावा करने के कारण वे भी काफी अलोकप्रिय हो गए। सितंबर, 1941 में एरिकसन को डेढ़ साल की इस मेहनत का नतीजा मिला। जर्मनी ने उसे व्यापार के मकसद से दौरा करने के लिए वीजा दे दिया। एरिकसन के अलावा उसके असली लक्ष्य के बारे में केवल उसकी नई पत्नी इनग्रिड (Ingrid) ही जानती थी।

जैसे ही बर्लिन के टेम्पेलहोफ (Templehof) हवाई अड्डे पर एरिकसन का विमान उतरा वैसे ही बैरन फ्रांज वान नोर्दहोफ (Baron Franz von Nordhoff) नाम के गेस्टापो अधिकारी ने एरिकसन को घेरकर पूछताछ वाले कमरे में बैठा लिया। गेस्टापो का वह मुखिया पहले अपने सभी शक मिटा लेना चाहता था, उसी के बाद एरिकसन को जर्मनी में घूमने की इजाजत मिल सकती

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

थी। उसने हर तरीके से घुमा-फिराकर एरिकसन के दिल की बात टटोलने की कोशिश की। उसने यह भी कहा कि स्वीडन पर नाजियों के कब्जे की नौबत आ सकती है। एरिकसन ने उसकी हर बात का बिना झिझके हुए पूरे इत्मीनान से जवाब दिया और इस कड़ी परीक्षा में खरा उतरा।

इस तरह एरिकसन ने स्वीडन के लिए जर्मन तेल की खरीददारी के लिए जर्मनी का दौरा करना शुरू किया। उसने हर वह तथ्य जो महत्त्वपूर्ण लगा याद कर लिया। उसने 12 पुराने मित्रों को भी अपने अभियान में शामिल किया, जिन्हें तेल प्लांटों की जानकारी देनी थी। इसके लिए एरिकसन को उन्हें अपनी असलियत बतानी पड़ी और यकीन दिलाना पड़ा कि वह वास्तव में अमरीका के लिए काम कर रहा है। उनमें से कई ने उससे लिखित तौर पर एरिकसन के दस्तखत वाली कागज की स्लिप मांगी ताकि वे वक्त आने पर यह साबित कर सकें कि वे भी मित्र राष्ट्रों के लिए काम करते रहे हैं। यह करने में एरिकसन को जान का खतरा था, क्योंकि भूल से या जानबूझकर यह स्लिप अगर किसी नाजी के हाथ लग जाती तो एरिकसन को सीधे फांसी के फंदे पर झुला दिया जाता। पर अभियान की कामयाबी के लिए यह जोखिम भी उठाना जरूरी था।

एरिकसन ने बर्लिन से हैम्बर्ग (Hamburg) और हैले (Halle) से हानोवर (Hanover) तक की यात्रा की। उसने तेल शोधक कारखानों की स्थिति, उनके काम-काज के ब्यौरे, उनके निकट के कुछ निशान, विमानभेदी तोपों के अड्डों और सैनिक हवाई अड्डों की स्थिति की जानकारी प्राप्त की। स्वीडन लौटने पर उसने ये तमाम आंकड़े और सूचनाएं एक डिक्टाफोन ट्यूब (Dictaphone-tube) में रख दीं। यह ट्यूब उसे अमरीकी एजेंटों ने दिया था। कुछ ही दिनों में कच्चे लोहे के बदले खरीदा गया एरिकसन का जर्मन तेल स्वीडन आने लगा। नाजियों को पता भी नहीं था कि इसमें से कुछ ईंधन उन ब्रिटिश गश्ती नावों में इस्तेमाल हो रहा है, जो स्कैंडीनेविया (Scandinavia) के इलाके में जर्मनों की नाकेबंदी किए हुई थीं।

पर्ल हार्बर (Pearl Harbour) पर जापानी हमला होते ही अमरीका भी बाकायदा युद्ध में कूद पड़ा। एरिकसन को इसका दुष्परिणाम यह भोगना पड़ा कि अमरीका में उसके तमाम मिलने-जुलने वालों ने उसे नाजी समझकर उससे सभी रिश्ते तोड़ लिए। गेस्टापो ने एक बार फिर उसकी जांच की। पर एरिकसन ने उन्हें फिर से संतुष्ट कर दिया। पूरे सन् 1942 के साल एरिकसन जर्मनी की यात्राएं करता रहा। उसने नाजी कब्जे के देशों की भी यात्राएं कीं और वहां के तेल शोधक कारखानों का भी पता लगाया, क्योंकि कब्जे के बाद वे कारखाने भी जर्मनों के युद्ध-प्रयासों में मददगार बन गए थे। 12 जून को पहली बार एरिकसन की सूचनाओं के आधार पर रूमानिया के पोलस्ती (Polesti) नामक तेल अड्डे पर अमरीकी विमानों ने बम गिराकर तबाही मचा दी। इसके बाद तो जैसे तांता ही लग गया। अमरीका की आठवीं वायु सेना ने एक-एक करके हैम्बुर्ग, हानोवर,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मैरीनबर्ग (Marienburg) और लुडविगशैफन (Ludwig-shafen) के तमाम तेल-अड्डों को तहस-नहस कर दिया। सन् 1943 की गर्मियों में 177 भारी बमवर्षकों ने एक बार फिर पोलेस्ती पर हमला किया। एरिकसन का दावा था कि इस हमले ने पोलेस्ती की 40 फीसदी तेल शोधन क्षमता नष्ट कर दी। यह एक बड़ी भारी कामयाबी थी।

एरिकसन एक तरह से दोधारी तलवार पर चल रहा था। अगर उसकी हरकतों का जर्मनों को पता लग जाता तो वह गेस्टापो की मशीनगनों की तड़-तड़ करती गोलियों का शिकार हो जाता और अगर वह अमरीकी बमबारी के दायरे में आ जाता तो उसके वैसे ही परखचे उड़ जाते। हैम्बुर्ग में एरिकसन के एक सहयोगी ओट्टो होल्ट्ज (Otto Holtz) की अचानक मृत्यु हो गई। होल्ट्ज के पास एरिकसन की दस्तखत की हुई वही स्लिप थी और उसकी पत्नी और बेटा नाजी समर्थक थे। एरिकसन के हाथ-पैर फूल गए। उसे फौरन उड़कर जर्मनी जाना पड़ा और ओटो के बैंक वाल्ट (bank vault) से वह स्लिप निकालनी पड़ी। 'अब मरे-अब मरे' की सी हालत वाले दो दिनों के इस अभियान के दौरान एरिकसन का दिल बहुत जोरों से धड़कता रहा। पर आखिरकार उसे कामयाबी मिल ही गई।

उन दिनों एरिकसन की हालत यह थी कि वह रात को होटलों में सोता नहीं था बल्कि गोलियां खाकर जागता रहता था। उसे डर था कि कहीं नींद में वह बड़बड़ा कर अपनी सारी पोल खुद ही न खोल दे। सन् 1942 के आखिर में एरिकसन की मुलाकात एक अत्यंत आकर्षक युवती मारियाने वान मोलेंड्रोफ (Marianne von Mollendorf) से हुई। यह सुंदरी भी मित्र राष्ट्रों की जासूस थी। जल्दी ही दोनों में अच्छी-खासी पटने लगी और दोनों में प्रेम हो गया।

मई, 1944 में मित्र राष्ट्रों के विमानों ने नए सिरे से जर्मन तेल शोधक कारखानों को तबाह करना शुरू किया। जर्मनों ने अपने विमानों के जरिए उनका मुकाबला करना चाहा। पर एक ही महीने में उनके 2,500 विमान मार गिराए गए। जर्मन वायु सेना लुफ्तवाफे (Luftwaffe) के पास विमानों की कमी पड़ गई। नाजियों को मजबूरी में अपने एक लाख फौजी कर्मचारी तेल कारखानों की मरम्मत के लिए लगाने पड़े। उनका तेल उत्पादन घटकर आधा रह गया। यह एरिकसन की जासूसी की ही शानदार सफलता थी।

जर्मनों के पास स्वीडन को बेचने के लिए तेल खत्म हो चुका था। एरिकसन को नया बहाना चाहिए था, जिसके तहत वह जर्मनी की यात्राएं कर सकता। उसने प्रस्ताव किया कि वह स्वीडन का तेल जर्मनों को बेचेगा और स्वीडन में उनके लिए एक सुरक्षित तेल शोधक कारखाना खोला जाएगा। स्वीडन उन दिनों एक तटस्थ देश था, इसलिए उस पर हमले की संभावना नहीं थी। काफी कोशिशों के बाद एरिकसन यह प्रस्ताव जर्मनों के गले उतारने में सफल हो गया। सन् 1944 में वह एक बार फिर जर्मनी की यात्रा पर निकला।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस बार हवाई अड्डे से एरिकसन को मोआबात (Moabat) जेल ले जाया गया जहां उसकी आंखों के सामने जासूसी के आरोप में पकड़े गए कई कैदियों को गोली मारी गई। इन्हीं में उसकी प्रेमिका मेरियाने वान मोलेंड्रोफ भी थी। एरिकसन स्तब्ध रह गया। उसे लगा कि उसे मेरियाने को बचाने के लिए कुछ करना चाहिए। पर वह मजबूर था। साथ-साथ डर भी रहा था कि कहीं उसकी साथी जासूस उसे पहचान न ले, पर मेरियाने ने मौत को अपने सामने देखकर भी एक पलक तक न झपकाई। मशीनगन की गोलियों ने उसे छलनी करके रख दिया। एरिकसन की जिंदगी का यह सबसे कड़वा घूंट था, जिसे मित्र राष्ट्रों के हित में उसे पीना पड़ा।

एरिकसन ने इस घटना के बाद जैसे ही अपना दौरा करना शुरू किया, उसे लगा कि गेस्टापो के एजेंट उसका पीछा कर रहे हैं। उसके पास नाजी नेता हिमलर (Himmler) का दिया हुआ पास था, जिससे वह बेरोकटोक कहीं भी आ जा सकता था। इसलिए उसने गेस्टापो के पीछा करते हुए एजेंट की परवाह नहीं की। वैसे भी उसे दिखाना था कि उसे पीछा किया जाने का पता ही नहीं है। पर लाइपिजिग (Leipzig) में एरिकसन को श्रूडर (Schroeder) नाम के पुराने नाजी ने पहचान लिया। श्रूडर का मुंह बंद करना उसके लिए अत्यंत आवश्यक हो गया, पर इसके

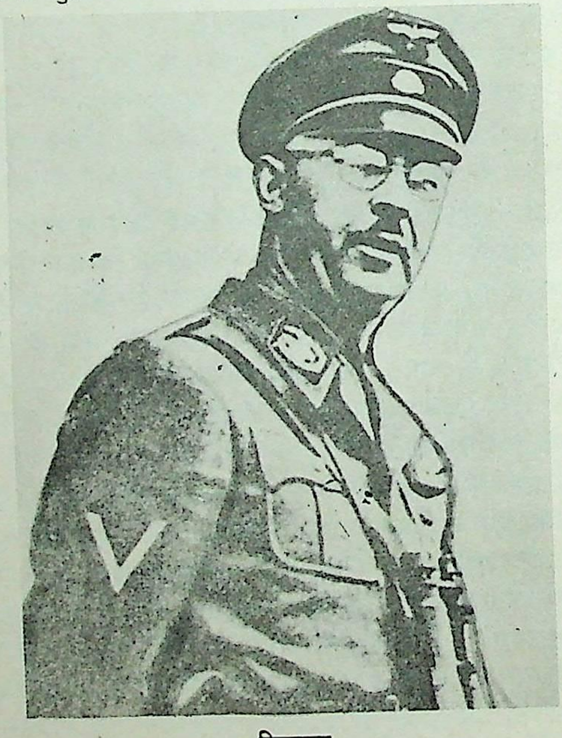

हिमलर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लिए उसे पहले अपने पीछे साये की तरह लगे गेस्टापो के जासूस से छुटकारा पाना था।

एरिकसन दौड़ता हुआ पास के होटल में घुस गया और उसके पीछे के दरवाजे से खिसक कर एक टैक्सी में बैठ गया। ड्राइवर की आंखों के सामने उसने गेस्टापो चीफ हिमलेर का दिया हुआ अधिकार पत्र लहराया और उस सड़क पर चलने को कहा जिस पर श्रूडर गया था। कुछ ही क्षणों में उसने श्रूडर को जाते हुए देखा। एरिकसन ने टैक्सी छोड़ दी और अपने शिकार का पैदल पीछा किया। श्रूडर एक टेलीफोन बूथ में घुस गया। जाहिर था कि वह गेस्टापो के किसी अधिकारी को फोन करके अपना शक जताना चाहता था। पर एरिकसन ने उसे कोई भी मौका नहीं दिया। बूथ के अंदर एरिकसन अपना जेबी चाकू बार-बार निर्ममता से श्रूडर की पीठ में घोंपता चला गया। श्रूडर का निर्जीव शरीर बूथ के फर्श पर ढह गया। एरिकसन के हाथों होने वाला यह पहला कत्ल था। पर श्रूडर की पीठ में चाकू घोंपते वक्त उसकी आंखों के सामने मेरियाने का गोलियों से छिदा शरीर घूम गया, जिसने उसे उस समय ऐसा करने की ताकत प्रदान की।

एरिकसन को पक्का यकीन था कि उसका पीछा करने वाला गेस्टापो का जासूस श्रूडर की लाश देखकर फौरन उसका रिश्ता एरिकसन से जोड़ लेगा। इसलिए उसने स्वीडन में प्रिंस कार्ल को तार भेजा जिसमें ऐसा कोड इस्तेमाल किया गया था जिसका मतलब था 'इमरजंसी'। बदले में स्वीडन से 'इमरजंसी' सूचना आई कि एरिकसन की पत्नी बहुत बीमार है और उसे फौरन स्टाकहोम पहुंचना है। इसी बहाने एरिकसन पहली उड़ान से स्वीडन रवाना हो गया।

यह विश्व युद्ध का आखिरी दौर था। मित्र राष्ट्रों के विमानों ने जर्मनों की तेल सप्लाई के स्रोत तकरीबन नष्ट कर दिए थे। जर्मन वायु सेना के पास नए इंजनों को टेस्ट करने के लिए, नए पायलटों के प्रशिक्षण के लिए, टैंक, जीप और ट्रक चलाने तक के लिए ईंधन की भारी कमी हो गई थी। आखिरी लड़ाई के वक्त कई मोर्चों पर हालत यह थी कि टैंकों और तोपों को सही स्थिति में खींचकर खड़ा करने के लिए घोड़ों और अन्य मवेशियों का प्रयोग किया जा रहा था।

7 मई, 1945 को जर्मनी ने हथियार डाल दिए। इस जीत में एरिकसन का भारी योगदान था। पर स्वीडन का भद्र समाज अभी भी एरिकसन को नाजी समर्थक कहकर दुत्कार रहा था। इस गलत-फहमी को मिटाने के लिए स्टाकहोम के अमरीकी दूतावास में एक पार्टी दी गई। इस पार्टी में कॉकटेल की चुस्कियों के बीच उस शाम के प्रमुख मेहमानों का परिचय कराया गया। वे मेहमान थे एरिकसन और प्रिंस कार्ल। इन दोनों की कहानी सुनकर लोग भौंचक्के रह गए। उन्होंने अपनी उपेक्षा के लिए दोनों से माफी मांगी। अगले दिन दुनिया भर के अखबार एरिकसन की तस्वीरों और कारनामो से भरे हुए थे। ■■

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्लिफटोन जेम्स
(Klifton James)

जिसे हिटलर के जासूस जनरल मोण्टगोमरी समझते रहे

25 वर्ष तक अभिनेता रह चुके क्लिफटोन जेम्स ने अपनी जिंदगी में एक से एक किरदार निभाया था। लेकिन उसने अपनी जिंदगी की सबसे बड़ी भूमिका जनरल मोण्टगोमरी का अभिनय करके निभाई थी। यह भूमिका कोई मामूली भूमिका इसलिए भी नहीं थी क्योंकि यह एक फिल्म की नहीं बल्कि असली जिंदगी की भूमिका थी और इसमें जरा सा भी चूकने का सिर्फ एक ही मतलब हो सकता था—मौत....।

दूसरे विश्व युद्ध के दौरान जनरल मोण्टगोमरी (Montgomery) की गतिविधियों को हिटलर के जासूसों की निगाह से बचाने के लिए क्लिफटोन जेम्स नाम के अभिनेता ने जान पर खेलकर जो कारनामा किया, वह जासूसी की दुनिया में हमेशा-हमेशा के लिए अमर हो चुका है। दरअसल मोण्टगोमरी के नेतृत्व में ही मित्र राष्ट्रों की फौजों को जर्मनी पर हमला करना था। हमले की तैयारी में लगे होने के कारण जनरल मोण्टगोमरी की सुरक्षा भी जरूरी थी और साथ ही साथ जर्मनों को किसी तरह चक्कर में डालना भी आवश्यक था।

ब्रिटिश खुफिया विभाग ने योजना बनाई कि जर्मनों के सामने ऐसी गलतफहमी पेश की जाए जिससे वे समझें कि मोण्टगोमरी किसी एक जगह जमकर हमले की तैयारी करने के बजाय सारी दुनिया में घूम-घूमकर एक नए मोर्चे की योजना बना रहे हैं। तय किया गया कि जनरल मोण्टगोमरी की शक्ल-सूरत से हूबहू मिलते-जुलते व्यक्ति को उनका डुप्लीकेट बनाकर मित्र राष्ट्रों के दौरे पर भेज दिया जाए और मोण्टगोमरी आराम से अपनी योजनाएं बनाते रहें।

रॉयल आर्मी लीसैस्टर (Royal Army Leicester) के लैफ्टीनेण्ट क्लिफटोंन जेम्स और जनरल मोण्टगोमरी की शक्ल में गजब की समानता थी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

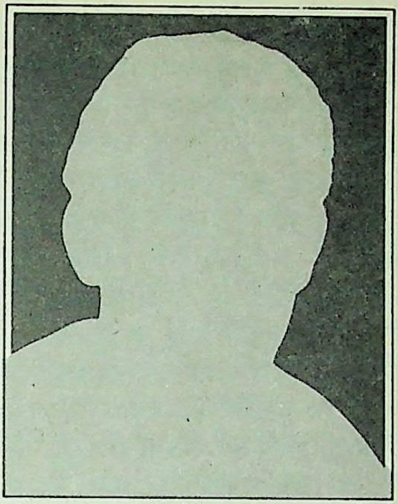

एक बार जेम्स का फोटो एक अखबार में छपा था। उसके नीचे लिखा था—"आप गलती पर हैं, इनका नाम क्लिफ्टोन जेम्स है। यह मोण्टगोमरी नहीं हैं।' लेकिन लोग चक्कर में पड़े रहे। सूरत मिलने के अलावा एक खास बात और भी थी। जेम्स पच्चीस साल तक फिल्म अभिनेता रह चुका था। इसलिए वह इस भूमिका को बखूबी निभा सकता था।

जिस समय सन् 1939 में युद्ध शुरू हुआ तो जेम्स अफसर बन चुका था। लैफ्टीनेंट जेम्स को लंदन बुलाकर इस नाटक की बारीकियां खूब अच्छी तरह समझा दी गईं। उसको बड़े विस्तार से प्रशिक्षण दिया गया। जेम्स ने पहले तो जनरल मोण्टगोमरी की फिल्मों का सूक्ष्म अध्ययन किया। फिर उसे मोण्टगोमरी के व्यक्तिगत स्टाफ में नियुक्त कर दिया गया। जेम्स ने मोण्टगोमरी के साथ रहकर उनके छोटे से छोटे हाव-भाव, बोलचाल के तौर-तरीके, चाल-ढाल, हंसने-मुसकराने आदि के ढंग का सूक्ष्म अध्ययन किया। जेम्स ने सारी बातों को, बल्कि यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि मोण्टगोमरी के संपूर्ण व्यक्तित्व को, अपने में पूरी तरह से उतार लिया।

फिर एक दिन जासूसी की दुनिया को चकरा देने वाले इस नाटक का पर्दा उठा। उस दिन जेम्स जनरल मोण्टगोमरी बन गया। उसने मोण्टगोमरी की यूनीफार्म पहन ली। उनका प्रसिद्ध जाना-माना काला कोट पहन लिया। कंधे पर जनरल का बैज लगाया और साढ़े छह बजे छूटने वाले हवाई जहाज के लिए वह कमांडर की कार में बैठकर हवाई अड्डे के लिए रवाना हो गया। वहां उसे पूरा सैनिक सम्मान दिया गया। किसी ने कहा कि आज तो 'मोण्टी' बहुत स्वस्थ दिखाई दे रहे हैं। इस तरह पहली परीक्षा में जेम्स खरा उतरा। प्रधानमंत्री के खास जहाज में बैठकर उसे जिब्राल्टर (Gibraltar) पहुंचना था। इधर ब्रिटिश सरकार ने बहुत सावधानी अपनाते हुए बेहद सुनियोजित ढंग से अफ्रीकी तट पर अफवाहें

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

फैला दी थीं कि दक्षिण की ओर से आक्रमण की तैयारी के लिए ऐंग्लो-अमरीकी सेना के गठन और गुटबंदी के लिए जनरल मोण्टगोमरी उधर का दौरा करने वाले हैं। इन अफवाहों की पुष्टि के लिए सारे मध्यपूर्वी देशों का इस नकली मोण्टगोमरी को सफलतापूर्वक दौरा करना था। जासूसों को चक्कर में डालने के लिए सावधानी यहां तक बरती गई कि जेम्स ने मोण्टगोमरी का हस्ताक्षर किया हुआ रूमाल भी साथ रख लिया था, ताकि उसे जानबूझकर किसी ऐसी जगह गिरा दिया जाए, जहा से वह हिटलर के जासूसों के हाथ पड़ जाए, जिससे उन्हें विश्वास हो सके कि जनरल मोण्टगोमरी खुद ही ऐंग्लो-अमरीकी सैनिक गठन के लिए आक्रमण की किसी योजना को तैयार करने आए हैं।

हवाई जहाज ठीक समय पर जिब्राल्टर के हवाई अड्डे पर उतरा। यहां जनरल मोण्टगोमरी के सैनिक सम्मान और स्वागत की पूरी तैयारियां की गई थीं। कारों की लम्बी-लम्बी कतारें लगी हुई थीं। उसका स्वागत करने के लिए बहुत से ऊंचे अफसर वहां मौजूद थे। हवाई अड्डे पर काफी संख्या में स्पेन के मजदूर भी काम करते थे। उनमें से बहुत से नाजियों के मुखबिर थे। वे भी जनरल मोण्टगोमरी के आगमन की बेताबी से राह देख रहे थे। उनके राजभवन पहुंचने पर सैनिक गारद ने बाकायदा सलामी दी। वहां के गवर्नर मोण्टगोमरी के घनिष्ठ मित्र जनरल सर ईस्टवुड (Eastwood) इस सारे षड्यंत्र में शामिल थे। नकली जनरल मोण्टगोमरी ने ईस्टवुड से बिलकुल उसी बेतकल्लुफी व आत्मीयता से मुलाकात की जैसे मोण्टगोमरी किया करते थे। घर के पुकारने के नाम से संबोधित करके वह बोले, "हलो रस्टी! कैसे हो? बिलकुल स्वस्थ नजर आ रहे हो?" राजभवन गैस्ट हाउस के अकेले कमरे में ले जाकर ईस्टवुड बोले, "यार जेम्स! मैं तो बिलकुल ही चकरा गया। एक बारगी मैं सोचने लगा कि शायद मोण्टी ने प्रोग्राम बदल दिया है, वह खुद ही आ गया है।"

इधर, हिटलर के जासूसों का जाल चारों ओर बिछा हुआ था। वे मोण्टगोमरी के आगमन व हर गतिविधि को बहुत गौर से देख-भांप रहे थे। मोण्टगोमरी के डुप्लीकेट जेम्स ने अपने कमरे में आराम करते वक्त कमरे की खुली खिड़की से देखा कि बराबर की बिल्डिंग से एक आदमी दूरबीन लगाकर बराबर उसे घूरे जा रहा है। बाद में जब वह गवर्नर के साथ राजभवन के बाग में टहल रहा था तब भी वही आदमी बराबर के मकान की मरम्मत करने के बहाने वहां मौजूद था और बार-बार घूम-घूमकर मोण्टगोमरी का निरीक्षण कर रहा था। वह हिटलर का जासूस था। वह पूरी तरह मोण्टगोमरी के आगमन के विषय में आश्वस्त होना चाहता था। इसके बाद इसी उद्देश्य से स्पेन के दो नागरिक गवर्नर से मिलने के लिए आए। वे दोनों ऐसे पूंजीपतियों के वेश में थे, जो व्यापार में पूंजी लगाने या उधार देने का धंधा करते हों। राजभवन में गवर्नर से मुलाकात के लिए वे इस बहाने से आ रहे थे कि उन्हें मोरोक्को के बने हुए कालीन देखने हैं, लेकिन गवर्नर यह जानते थे कि वे वास्तव में हिटलर के जासूस हैं और उनका असली मकसद

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जनरल मोण्टगोमरी को नजदीक से देखना भर है। यह सारी स्थिति मोण्टगोमरी के डुप्लीकेट जेम्स को अच्छी तरह समझा दी गई थी।

ईस्टवुड और जेम्स राजभवन के बाग में चहल-कदमी कर रहे थे। हल्की सी घरघराहट के साथ लोहे का फाटक खुला। वे दोनों स्पेनी अंदर दाखिल हुए। लेकिन जेम्स ने जाहिर किया, जैसे उन्होंने कुछ देखा ही न हो। अब उन्होंने जासूसों को सुनाने के लिए जोर-जोर से युद्ध कैबिनेट योजना नं. 33 (War Cabinet Plan No. 33) व प्रधानमंत्री से इस 'युद्ध योजना' के बारे में अनुमति ले लेने के विषय में चर्चा शुरू कर दी, ताकि इन जासूसों का यह संदेह भी पक्का हो जाए कि सचमुच कोई "वार प्लान नं. 33" क्रियान्वित हो रहा है। जब वे काफी नजदीक आ गए तो गवर्नर ने इशारा करने का ढोंग किया और वे एकदम चौंक कर खामोश हो गए। इन लोगों से परिचय और सामान्य शिष्टाचार के बाद इधर-उधर की हल्की-फुल्की बातें होती रहीं। वे दरअसल हिटलर के अत्यंत कुशल, चालाक और विश्वासपात्र जासूस थे। प्लान नं. 33 की अफवाह फैलते ही हिटलर ने उन्हें खासतौर से मामले की तह तक पहुंचने के लिए नियुक्त किया था। वह व्यक्ति भी इन्हीं में से था, जो कि पड़ोस से भवन की दीवार की मरम्मत करने का अभिनय कर रहा था, लेकिन उसकी निगाहें बराबर मोण्टगोमरी पर ही टिकी हुई थीं। चौथा व्यक्ति हवाई अड्डे पर नियुक्त था,जिससे मोण्टगोमरी के डुप्लीकेट की मुलाकात बाद में हुई। इन सभी जासूसों ने अपनी-अपनी रिपोर्ट पूरे विवरणों सहित हिटलर को शीघ्र भेज दी। दो घंटे बाद जब वह मोण्टगोमरी महोदय मैड्रिड (Medrid) पहुंचे तो वहां हिटलर के मुखबिरों को इसका समाचार बर्लिन से मिल चुका था कि मोण्टगोमरी जिब्राल्टर तो पहुंच गए हैं, लेकिन अब वह अफ्रीका के लिए हवाई सफर करने वाले हैं। बर्लिन से तुरंत जोरदार आदेश मिला कि मामला बहुत गंभीर और जरूरी है, इसलिए सारा ध्यान 'योजना नं. 33' की पूरी-पूरी जानकारी प्राप्त करने में लगा दिया जाए।

इसके बाद जेम्स मोण्टगोमरी के वेश में अल्जीयर्स (Algiers) पहुंचे। हिटलर के जासूस वहां भी मौजूद थे। नागरिकों की भारी भीड़ जनरल मोण्टगोमरी का स्वागत करने के लिए हवाई अड्डे पर आयी हुई थी। उसी भीड़ में तीन व्यक्ति भी मौजूद थे—दो इटालियन व एक फ्रैंच। वे हिटलर के जासूस थे जो मोण्टगोमरी पर नजर रखने व उसे देखने-परखने के लिए आए थे।

इस प्रकार जेम्स जनरल मोण्टगोमरी का अभिनय सफलतापूर्वक निभाकर वापिस जनरल विलसन (Wilson) के पास लंदन आ गया। जनरल मोण्टगोमरी के डुप्लीकेट ने हिटलर के सारे गुप्तचर विभाग को चकमा दे दिया था। किसी को एक क्षण के लिए भी यह संदेह नहीं हो पाया था कि यह असली नहीं, नकली मोण्टगोमरी है। युद्ध समाप्त होने पर जेम्स को सावधानी से काहिरा में इस डर से नजरबंद रखा गया कि यह भेद कहीं खुल न जाए। ■■

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बांडा
(Banda)

माता हारी की जासूस बेटी

बांडा माता हारी की बेटी जरूर थी लेकिन उसे जासूसी का प्रशिक्षण परिस्थितियोंवश मिला। इंडोनेशिया को स्वतंत्र कराने के लिए बांडा ने जापानी आक्रमणकारियों और भूमिगत क्रांतिकारियों के बीच डबल एजेंट का काम किया। इसके बाद वह अमरीका के कहने पर चीन और कोरिया में जासूसी करने गई। बांडा का अंत ठीक अपनी मां की तरह ही हुआ। उसे भी जासूसी के आरोप में गोली मारी गई।

माता हारी यानी गरट्रूड मारगरेट जैले को जब नवंबर, 1917 में फ्रांस में गोली मारी गई तो उसकी बेटी बांडा की उम्र केवल 17 साल थी। न मां को जानकारी थी कि बेटी कैसी है, न बेटी जानती थी कि उसकी मां कहां है। अपने पिता के बारे में तो वह कुछ भी नहीं जानती थी। बांडा को उसके एक रिश्तेदार ने पाला था। वे लोग बटाविया में रहते थे। जब भी बांडा अपनी आंटी से अपनी मां के बारे में पूछती, जवाब होता कि एक दिन तुम्हारी मां तुमसे मिलने जावा जरूर लौटेगी। इंतजार करते-करते बांडा थक गई। मां नहीं आई। उसकी जगह आई एक चिट्ठी, जिसमें पहली बार बांडा को अपने पिता के बारे में जानकारी मिली और यह भी कि वे उसकी मां पर कैसे-कैसे अत्याचार किया करते थे। अपनी मां का पत्र पढ़कर बांडा बेहद उदास रहने लगी। उसने एक दिन अपनी आंटी से कहा, ''अब मैं अपना भला-बुरा खुद ही सोच सकती हूं। अपनी जिंदगी अपने ढंग से जीना चाहती हूं। मैं अध्यापिका बनूंगी।'' उसी रात बांडा घर से भाग निकली। इंडोनेशिया में बांडा डच सिविल सर्विस (Dutch Civil Service) के एक अधिकारी के घर रहने लगी। वह अधिकारी उसका पिता, प्रेमी, शिक्षक सभी कुछ बन गया। बांडा को उससे बुरी तरह प्यार हो गया। सरकारी अधिकारी ने बांडा को उस स्कूल में पढ़ने के लिए भेजा, जिसमें डच शासकों और राजनयिकों के बच्चे पढ़ते थे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उच्च शिक्षा प्राप्त करके बांडा ने अपने घर के एक कमरे में स्कूल खोल लिया। उसकी जिंदगी खुशियों से भर गई। सब कुछ ठीक-ठाक चलने लगा कि अचानक उस बूढ़े अधिकारी की, जो गवर्नर का विश्वासपात्र था, मृत्यु हो गई। यह घटना सन् 1935 की है। बांडा थोड़ी परेशान जरूर हुई, लेकिन जल्दी ही संभल गई। वह अपना स्कूल चलाती रही। अपने मीठे व्यवहार और सुंदरता के कारण धीरे-धीरे बांडा बटाविया के उच्चवर्ग में बहुत लोकप्रिय हो गई। वह बड़े-बड़े लोगों को पार्टियां देने लगी। इससे उसके परिचय का दायरा बढ़ता गया।

सन् 1939 में द्वितीय विश्व युद्ध शुरू हुआ और यहीं से उसके जीवन में नाटकीय मोड़ आने शुरू हो गये। देखते ही देखते उसकी पार्टियां राजनयिकों, जासूसों, पत्रकारों आदि के लिए आकर्षण का मुख्य केन्द्र बनने लगीं। यहीं से उसके महत्त्वपूर्ण बनने की प्रक्रिया आरंभ हुई। पर यहीं से जिंदगी का सबसे खतरनाक मोड़ भी शुरू हो चुका था। पर्ल हार्बर (Pearl Harbour) पर जापानियों ने जोरदार हमला किया। ब्रिटिश शासन के पैर लड़खड़ा उठे। हालैंड नाजियों के चंगुल में फंस गया। जापानी तूफान की तरह बढ़ते चले गए। वे इंडोनेशिया में तीन स्थानों पर उतरे—रेमबैंग, पीसरपुटिक और टेनगेरैंग। जापानियों ने वहां के निवासियों को सारी सुख-सुविधाएं देने का वचन दिया।

इंडोनेशिया में जापानियों का आतंक था। उस समय बांडा अपने स्कूल में बच्चों को सिखाया करती थी, "दबे हुए लोग भी एक दिन ऊपर उठकर उनको दबा सकते हैं, जिन्होंने आज उन्हें दबाया हुआ है।" जापानियों को जब पता चला कि बांडा अपने स्कूल में बच्चों को इस तरह भड़काती है, तो उन्होंने उसका स्कूल बन्द करवा दिया।

अचानक एक दिन बांडा का एक चाचा उसके पास आया। वह डच था लेकिन जापानी नौसेना की यूनिफार्म में था। बांडा उसके बारे में बस इतना जानती थी कि वह जापानी सेना में है। लेकिन वह बांडा के पास क्यों आया था? शायद वह बांडा और उसकी मां के बारे में सब कुछ जानता था। बांडा के मन में भी तरह-तरह के सवाल उठने लगे।

बांडा के मन में डर था कि 'कहीं यह आदमी मुझसे जापानियों की मदद करने के लिए न कहे।' और हुआ भी यही। उसने बांडा से कहा कि अगर तुम अपने रहस्य को छुपाये रखना चाहती हो, तो अपनी पार्टियां आदि फिर शुरू करो और उन सभी लोगों को बुलाओ, जो उनमें आते थे। बांडा जानती थी कि वह आदमी उसे ब्लैकमेल कर रहा है, लेकिन वह कर भी क्या सकती थी।

बांडा के घर पार्टियों का दौर फिर से शुरू हो गया। उनमें प्लैटो से लेकर शापनहावर तथा दांते से लेकर टैगोर तक—सभी पर बहसें होतीं। जापानी और इंडोनेशियाई मिलते-जुलते। इससे जापानी अधिकारी बांडा से बहुत खुश हुए। बांडा का घर अब आकर्षण का एक प्रमुख केन्द्र बन गया। जापानी एक ऐसी होमगार्ड (Homeguard) टुकड़ी की स्थापना करना चाहते थे, जिसमें

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इंडोनेशिया के लोग ही हों, ताकि वे जापानियों के खिलाफ बगावत न करें। इसके लिए नेताओं का चुनाव होने लगा। यह चुनाव भी बांडा के घर पर ही होना था।

तभी उसकी मुलाकात अब्दुल नाम के एक युवक से हुई (अब्दुल का असली नाम कुछ और था)। अब्दुल कम उम्र का एक आकर्षक नवयुवक था। ऊपर से वह होमगार्ड का सिपाही था लेकिन वास्तव में वह भूमिगत क्रांतिकारियों के संगठन का एक प्रमुख नेता था। वह चाहता था कि जापानियों ने जो होमगार्ड बनाई है, वह जापानियों के खिलाफ लड़े क्योंकि जापानी डचों से भी ज्यादा अत्याचारी और शोषक साबित हो रहे थे। उनके सारे वादे झूठे साबित हो चुके थे। वे खुले रूप से निरंकुशता पर उतर आए थे।

जब अब्दुल ने अपनी असलियत बांडा को बताई, तो उसने उसे भरपूर सहयोग देने का वचन दिया। यही सहयोग कालांतर में प्यार में भी बदल गया। अब हजारों इंडोनेशियाई होमगार्ड में भर्ती होने लगे। जापानियों से मुक्ति के लिए संघर्ष की कहानी का आगाज यहीं से हुआ। अब्दुल इस मुक्ति आंदोलन का आध्यात्मिक नेता बन गया। उसने होमगार्ड को ही इस आंदोलन का केन्द्र बनाया। इसमें बांडा ने उसकी पूरी मदद की। अब वह डबल एजेंट के रूप में काम करने लगी थी।

एक तरफ वह जापानियों को सूचनाएं देती, दूसरी तरफ जापानियों के रहस्य अब्दुल तक पहुंचाती। अब्दुल ने जापानी तानाशाही से मुक्ति के लिये बहुत तेजी से कार्य शुरू किया। उसने इस समय के भारतीय नेताओं—गांधी और नेहरू से भी संपर्क किया क्योंकि भारत में भी उस समय स्वतंत्रता आंदोलन तेजी से चल रहा था। जासूसी के काम में तो बांडा ने अपनी मां माता हारी को भी मात दे दी। बांडा के पास जापानियों की सैनिक शक्ति की पूरी जानकारी थी। वह जापानियों की हर योजना का पता बड़ी आसानी से लगा लेती थी।

ब्रिटेन और अमरीकी गुप्तचर विभागों ने बांडा के बारे में सुन तो रखा था, पर उन्हें इस बात की जानकारी नहीं थी कि बांडा अपने समय की प्रसिद्ध जासूस माता हारी की ही बेटी है। उन्हें तो बस खुफिया सूचनाएं मिल रही थीं। बांडा अपना काम इतनी सावधानी से करती थी कि जापानियों को आखिर तक भी उस पर शक नहीं हुआ। लेकिन अब्दुल के ऊपर उन्हें संदेह हो गया, फिर भी वे उससे मित्रता बनाये रहे, क्योंकि जरा सी सख्ती से काम बिगड़ सकता था। आखिर सन् 1945 में ब्रिटिश सेनाएं जावा में उतरीं और उसने आठ-नौ शहरों को जापानियों के कब्जे से मुक्त करा लिया।

बांडा के घर कॉकटेल पार्टियों का दौर चलता रहा। अब उसकी गुप्त सेवा और भी प्रभावशाली हो गई थी। उसके सूचनाओं के स्रोतों में मैटो नाम का एक कोरियाई भी था, जो डच गवर्नर के आफिस में काम करता था।

19 दिसंबर, 1948 को डचों ने यह कहकर इंडोनेशिया पर हमला किया कि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

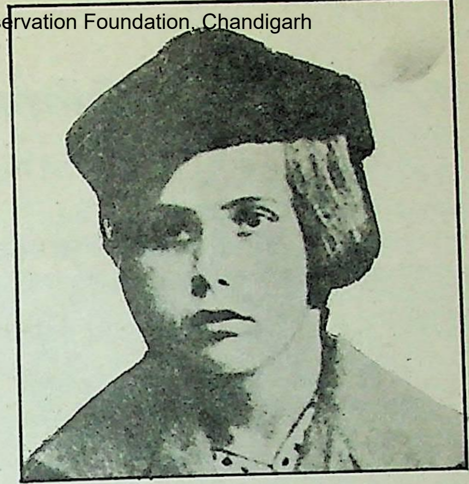

बांडा

इंडोनेशिया के लोग अपना शासन खुद नहीं चला सकते। पर उन्हें सफलता न मिल सकी।

बांडा अमरीका गई। वह इंडोनेशिया के लिये बहुत सी सहायता लेकर वापस बटाविया (नया नाम जकार्ता) लौटी। उसने इंडोनेशिया को स्वतंत्र कराने में जी-जान से मदद की। लेकिन बांडा का काम शायद अभी खत्म नहीं हुआ था। उसकी जिंदगी का आखिरी नाटक बाकी था। अमरीका से एक संदेशवाहक ने आकर बताया कि 'अमरीका को उसकी सेवाएं चाहिए।' वह चुपचाप अमरीका चली गई। जब वह अमरीका में थी तभी वहां के गुप्तचर विभाग ने बांडा के बारे में सब कुछ जान लिया था।

बांडा अमरीका के लिये जासूसी करने चीन पहुंची। वहां कम्युनिस्टों के साथ काम करने लगी और अमरीका को सूचनाएं देती रही। उसने बहुत सी महत्त्वपूर्ण सूचनाएं एकत्र कीं। उसी ने यह सूचना दी थी कि च्यांग काई शेक (Chiang Kai-Shek) की सेनाएं पराजित हो जाएंगी और च्यांग काई शेक चीन में नहीं रह पाएंगे। चीन में बहुत दिनों तक काम करने के बाद उसे कोरिया जाने का आदेश दिया गया। यह बात सन् 1950 की है। कोरिया पहुंचकर उसने अमरीकियों को बताया कि रूस और चीन की सहायता से उत्तरी कोरिया दक्षिणी कोरिया पर हमला करने वाला है। राजनीतिज्ञों ने बांडा की सूचना को मखौल समझकर उड़ा दिया, क्योंकि उनका विचार था कि उत्तरी कोरिया वाले इसकी हिम्मत ही नहीं कर सकते। लेकिन कुछ दिनों बाद कोरिया में युद्ध शुरू हो गया। दुर्भाग्य की काली छाया बांडा के सिर पर मंडराने लगी। वहां उसे मैटो ने देख लिया। मैटो वही था, जो कभी डच गवर्नर के कार्यालय में काम करता था। वह बांडा के पीछे पड़ गया और उसके बारे में सारी जानकारी हासिल कर ली।

मां की तरह ही बेटी का भी अन्त हुआ। बांडा को गोली से उड़ा दिया गया और संयोग देखिए कि उस समय भी सुबह के पौने छः बजे थे। सन् 1917 में सुबह ठीक पौने छः बजे ही बांडा की मां माता हारी को भी गोली मारी गई थी। ■■

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सिंथिया
(Cynthia)

जिसने माता हारी को भी पीछे छोड़ दिया

सिंथिया के रूप में अंग्रेजों को एक ऐसी नायाब 'सेक्स स्पाई' मिल गई थी, जिसके मोहक रूप-रंग के आगे फ्रांसीसी, पोलिश और इतालवी राजनयिकों ने अपने ओहदे तक की गरिमा का ख्याल न रखते हुए हथियार डाल दिए और उसके हुस्न के गुलाम बनकर अपने देश से ही गद्दारी करने के लिए तैयार हो गए। सिंथिया ने हिटलर की कोड मशीन के बारे में मित्र राष्ट्रों को जानकारी दी, इटली के नौसैनिक कोड का पता लगाया और विशी फ्रेंच दूतावास में घुसकर रहस्य उड़ाए।

सिंथिया उन गिनी-चुनी महिला जासूसों में से एक थी, जिन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध की दिशा बदलने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। प्रथम विश्व युद्ध में माता हारी ने अपनी सुंदरता और यौन जासूसी के जरिए एक-से-एक बड़े-बड़े कारनामे अंजाम दिए थे। पर सन् 1937 से 1945 तक सिंथिया ने मित्र राष्ट्रों के हित में जो तहलका मचा देने वाले काम किए, उन्हें बेमिसाल कहा जा सकता है।

सिंथिया का असली नाम एमी एलिजाबेथ थोर्पे (Emy Elizabeth Thorpe) था। उसके माता-पिता अमरीकी थे। वह इन्द्र की अप्सरा मेनका के समान रूपवान थी। कोई भी पुरुष उसे एक नजर देखकर उसके लिए लालायित होकर अपना तप भंग कर सकता था। साथ-साथ वह अत्यन्त योग्य, प्रतिभाशाली और दुस्साहसी प्रवृत्ति की भी थी। एमी ने सन् 1930 के दशक के दौरान आर्थर पैक (Arthur Pack) नामक एक ब्रिटिश राजनयिक से विवाह किया। पैक और एमी का वैवाहिक जीवन जल्दी ही गड़बड़ा गया, क्योंकि दोनों के व्यक्तित्व में जमीन-आसमान का फर्क था। आर्थर शुष्क स्वभाव का और अमीरों की नकली औपचारिकता रखने वाला था, जबकि एमी बेहद खुले दिल की, जल्दी घुलमिल जाने वाली औरत थी। उसका मन ऊंची उड़ानें भरता था। वह कुछ कर गुजरने के लिए बेताब थी। विवाद के बावजूद दोनों में फौरन तलाक नहीं हुआ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

राजनयिक की पत्नी के रूप में सिंथिया को चिली, स्पेन और पोलैंड में रहने का मौका मिला। इसी बीच वह राजनीति के दांव-पेचों से भी अच्छी तरह वाकिफ हो गई। पोलैंड में पहली बार उसे एक ऐसा मौका मिला, जिससे वह अपनी मन में छिपी तमन्ना पूरी कर सकती थी। सन् 1937 में ब्रिटिश खुफिया विभाग ने उसे अपनी सीक्रेट एजेंट बन जाने का न्यौता दिया। एमी ने झटपट इस प्रस्ताव को दोनों हाथों से लपक लिया। उसका खुफिया नामकरण किया गया 'सिंथिया'।

सिंथिया ने अपनी खूबसूरती का पहला जाल वारसा में पोलिश विदेश मंत्रालय के एक ऊंचे अफसर पर फेंका। सिंथिया के खुले आमंत्रण को अस्वीकार करना उस अफसर के वश के बिलकुल बाहर की बात थी। अब स्थिति यह थी कि वह अफसर सिंथिया को अपने बिस्तर में पाकर अपनी किस्मत को धन्य समझता रहा और सिंथिया उससे जर्मनी और चैकोस्लोवाकिया की राजनीति के बारे में पूछताछ करती, अपना काम निकालती रही। इस तरह उसने अंग्रेजों के लिए काफी उपयोगी जानकारी प्राप्त की। इस दौरान उसे जो सबसे जबरदस्त जानकारी मिली, जिसने उसे विश्व की एक अविस्मरणीय जासूस बना दिया, वह थी कि पोलिश इंजीनियर किसी रहस्यमय कोड (Code) यानी कूट भाषा की मशीन बनाने की कोशिश कर रहे हैं और यह मशीन जर्मनों के लिए गोपनीय कार्यों में इस्तेमाल करने के लिए बनाई जा रही है। दरअसल यह जानकारी उस विश्व-विख्यात अभियान का पहला चरण थी, जिसके तहत ब्रिटिश जासूसों ने हिटलर का खुफिया कोड तोड़कर पूरी लड़ाई का रुख ही पलट दिया था।

सन् 1941 आते-आते सिंथिया न्यूयार्क पहुंच चुकी थी। अंग्रेज अपने 'ब्रिटिश सिक्यूरिटी कोऑर्डीनेशन' (British Security Coordination) के तहत उसे सबसे कामयाब सीक्रेट एजेंट मानते थे। कोऑर्डीनेशन के कर्ताधर्ता विलियम स्टीफेंसन (William Stephenson) को कुछ ऐसे एजेंटों की जरूरत थी, जो इटली और फ्रेंच दूतावासों से खुफिया सूचनाएं खोदकर निकाल सकें। सिंथिया ने पोलैंड में जो सफलता हासिल की थी, उनके कारण वह इस काम के लिए सबसे आदर्श एजेंट साबित हुई। उसे वाशिंगटन में एक आरामदेह घर दिया गया। सिंथिया ने अमरीकी राजधानी की काकटेल पार्टियों में भाग लेना शुरू किया। जल्दी ही उसने तमाम विदेशी राजनयिकों से दोस्ती गांठ ली। सभी लोग उसका सानिध्य पाने के लिए उतावले रहने लगे। सिंथिया ने इटली के एक राजनयिक एडमिरल अल्बर्टो लाइस से प्रेम की पींगें बढ़ाईं। लाइस मुसोलिनी का नौसैनिक अटैची था।

लाइस जब पूरी तरह से सिंथिया के प्रेम के जाल में फंस गया तो सिंथिया ने एक बड़ा विचित्र दांव खेला। पहले के सीक्रेट एजेंटों की तरह सिंथिया ने उससे अपने इरादे छुपाए नहीं। उसने खुल्लम-खुल्ला लाइस से साफ तौर पर कहा कि वह मित्र राष्ट्रों की जासूस है और इटली के खिलाफ उनकी मदद करना चाहती है। सिंथिया की सुंदरता की बेड़ियों में जकड़ा बेचारा एडमिरल इनकार न कर सका।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सिथिया ने उससे इटली द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले कोड और कूट भाषा की जानकारी मांगी। लाइस ने खुशी-खुशी सारे कोड सिंथिया के हवाले कर दिए। जब सिंथिया ने कोऑर्डीनेशन के लोगों को कोड दिए तो वे भी एकबारगी तो उसकी सफलता से भौंचक्के से रह गए। उन्हें यकीन ही नहीं हुआ कि लाइस जैसा वरिष्ठ और देशभक्त अधिकारी भावनाओं में बहकर ऐसा राष्ट्र-विरोधी कृत्य भी कर सकता है।

सिंथिया की इस जासूसी ने भूमध्य सागर में शत्रुओं से मुकाबलतन कमजोर और संख्या में कम ब्रिटिश बेड़े को धुरी राष्ट्रों की नौसेना के मुकाबले एक निर्णायक मदद पहुंचाई। सिंथिया के लाये हुए कोड ने उत्तरी अफ्रीका में मित्र राष्ट्रों की फौजों की बेशकीमती सहायता की। अपना मतलब निकालते ही सिंथिया ने इतालवी राजनयिक को अंगूठा दिखा दिया। उसने चालाकीपूर्वक फेडरल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टीगेशन (एफ.बी.आई.) को यह खबर कर दी कि एडमिरल लाइस को अमरीकी बंदरगाहों में तोड़-फोड़ की जानकारी है। इसलिए लाइस को इतालवी दूतावास पर दबाव डलवाकर इटली भिजवा दिया गया।

सिंथिया का अगला निशाना फ्रेंच दूतावास था। हिटलर ने फ्रांस पर कब्जा करके वहां अपनी कठपुतली सरकार स्थापित कर दी थी। राजदूत का प्रेस अधिकारी एक पूर्व पायलट कैप्टन चार्ल्स ब्राउसे था। युद्ध के पहले वह ब्रिटिश खुफिया विभाग के लिए काम कर चुका था, लेकिन सन् 1940 में ईरान में फ्रांसीसी नौसेना पर ब्रिटिश युद्धपोतों के आक्रमण के बाद से उसे अंग्रेजों से चिढ़ सी हो गई थी। वह अमरीकनों से भी नफरत करता था। वह उन्हें असभ्य और अश्लील मानता था। उसका ख्याल था कि अमरीकी लोग फ्रांस की राजनैतिक पेचीदगियों को समझने में नाकामयाब हैं।

सिंथिया ने धीरे-धीरे ब्राउसे से मुहब्बत का रिश्ता कायम किया। ब्राउसे उसके मोहजाल में फंसा इस हद तक राजी हो गया कि उसके साथ सिंथिया आकर उस होटल में रहने लगी जहां वह अपनी तीसरी पत्नी के साथ रह रहा था। उसने सिंथिया को मातीनिक द्वीप पर छिपे फ्रांसीसी सोने के खजाने की सूचना भी दी। ब्रिटिश जासूस सिंथिया से खबर मिलते ही द्वीप पर पहुंचे और नाजियों के हाथों में पड़ने से पहले ही उन्होंने सोने पर अपना कब्जा जमा लिया। बाद में इसी सोने को जमानत के रूप में प्रयोग करके ब्रिटेन ने अमरीका से युद्ध के लिए कर्जा लिया। ब्राउसे ने सिंथिया को यह भी बताया कि उत्तरी और दक्षिणी अमरीका में जर्मन एजेंटों की कार्यप्रणाली क्या है।

इसके बाद सिंथिया की जिंदगी का सबसे कठिन काम उसके सामने आया। सवाल यह था कि फ्रांसीसी नौसैनिक कोड कैसे प्राप्त किए जाएं? ये कोड दूतावास के स्ट्रांग रूम (Strong-room) में बंद थे और ब्राउसे की पहुंच से भी बहुत दूर थे। ब्राउसे और सिंथिया ने मिलकर एक योजना बनाई। दूतावास के रात के चौकीदार को दोनों ने यह कहकर धोखा दिया कि दोनों एक दूसरे से प्यार करते हैं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और उनके पास मिलने की कोई जगह नहीं है। इसलिए उन्हें दूतावास की इमारत में रातें गुजारने दी जाएं। इसके लिए चौकीदार को शराब की बेहोशी की दवा मिली बोतलें और मोटी रकम रिश्वत के तौर पर दी गई। दोनों ने कई रातें दूतावास में गुजारीं। उनका वहां रात में आना-जाना आम बात हो गई। नशे के प्रभाव में चौकीदार खर्राटे भरता रहता और अंदर सिंथिया की रातें रंगीन होती रहतीं। उधर ब्रिटिश जासूस दूतावास का स्ट्रांग रूम खोलकर फ्रांसीसी नौसैनिक कोड की नकल उतारते रहते। ताला खोलने के विशेषज्ञ बड़ी सफाई के साथ वॉल्ट खोलते और उसी खूबी के साथ बंद कर देते। एक दिन रात को पहरेदार की आंख खुली तो उसने उत्सुकतावश उस कमरे के दरवाजे के की होल से झांक कर देखा कि दोनों प्रेमी क्या कर रहे हैं। उसने देखा कि हरी आंखों वाली वह सुंदरी एक कोच पर पूरी तरह निर्वस्त्र लेटी हुई है। उसका शक मिट गया और वह वापस जाकर सो गया।

'ब्रिटिश सिक्यूरिटी कोऑर्डीनेशन' के अफसरों ने बाद में माना कि अगर सिंथिया न होती तो फ्रांस और जर्मनी में मित्र राष्ट्रों की विजय बहुत मुश्किल हो जाती। एक लेखक ने बाद के दिनों में सिंथिया से पूछा कि क्या अपने शरीर का लालच देकर जासूसी करने के लिए वह शर्मिंदा नहीं है। सिंथिया का बेझिझक जवाब था, ''शर्मिंदा। कतई नहीं। मेरे अफसरों ने मुझे बताया है कि मेरे कामों से हजारों अमरीकनों और अंग्रेजों की जिंदगी बची।''

सिंथिया ने युरोप में जासूसी करने के लिए खुद को पेश किया। जर्मन फौजों की कतारों के पीछे वह पैराशूट से उतर कर जासूसी करना चाहती थी। उसके अफसरों ने इस योजना को बेहद खतरनाक बताया और इजाजत नहीं दी।

सन् 1945 के बाद ब्राउसे ने अपनी तीसरी पत्नी को तलाक दे दिया। सिंथिया के पति की मृत्यु हो गई। ब्राउसे और सिंथिया ने विवाह कर लिया। दोनों सन् 1963 तक फ्रांस के दक्षिण में बने एक किले में रहते रहे। जीवन के अंतिम दिनों में सिंथिया को कैंसर हो गया और उसी से दुनिया की इस सबसे सुंदर और कामोत्तेजक 'सेक्स स्पाई' का अंत हो गया। ■■

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तेनिया

(Tenia)

जिसने एक साथ तीन देशों के लिए जासूसी की

तेनिया को पूर्वी जर्मनी की सीक्रेट सर्विस ने प्रशिक्षित किया था। लैटिन अमरीकी मामलों, वहां की भाषा आदि की अच्छी जानकार होने के कारण इस निपुण महिला जासूस की पूर्वी जर्मनी के गुप्तचर संगठन एम.एफ.एस. ने के.जी.बी. से सिफारिश की। अब वह रूस के लिए जासूसी करने लगी थी। इसके बाद उसे क्यूबा के क्रांतिकारी गुरिल्ला नेता चे ग्वेवारा से प्रेम हो गया। तेनिया ने चे के लिए भी जासूसी करनी शुरू कर दी।

दुनिया की मशहूर "सेक्स स्पाइज" (Sex Spies) में माता हारी तथा सिंथिया के बाद तमारा बुके यानी तेनिया सबसे अधिक चर्चित रही है। तेनिया एक बहुत ही सफल और कुशल जासूस थी, जिसने एक साथ तीन देशों के लिए जासूसी की। उसने अपने समय के सबसे लोकप्रिय क्यूबा के क्रांतिकारी गुरिल्ला योद्धा चे ग्वेवारा (Che Guevara) से प्रेम किया और उनके लिए जासूसी भी की। साम्राज्यवादी देश उसे चे की हत्या के लिए जिम्मेदार ठहराते रहे हैं, पर कम्युनिस्ट उसे एक परम साहसी गुरिल्ला योद्धा और देशभक्त का सम्मान देते हैं। माना जाता है कि उसने भी गुरिल्ला क्रांति में चे ग्वेवारा के साथ अपना बलिदान दिया।

क्यूबा के बाद चे लेटिन अमरीका के पूरे उपमहाद्वीप में छापामार युद्ध द्वारा कम्युनिस्ट शासन स्थापित करना चाहते थे। उन्होंने पहले बोलीविया (Bolivia) में और फिर अर्जेंटीना में क्रांति की योजना बनाई। तेनिया ने इसमें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण योगदान दिया था। पर यह योजना सफल न हो सकी।

एक अमरीकी पत्रकार डेनियल जेम्स (Denial James) के अनुसार तेनिया पूर्वी जर्मनी के गुप्तचर संगठन एम.एफ.एस. और रूस के के.जी.बी. की जासूस थी, जिसे कास्त्रो और चे की गतिविधियों और उनकी योजनाओं पर नजर रखने का काम सौंपा गया था। तेनिया ने इनकी जासूसी करने के साथ-साथ चे के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लिए भी बोलीविया में जासूसी की। डेनियल जेम्स का कहना है कि तेनिया ऊपरी तौर पर चे से प्रेम जरूर करती थी पर वह चे की प्रेमिका नहीं बल्कि नंबर एक की दुश्मन और हत्यारी थी।

19 नवंबर, 1937 में अर्जेंटीना के ब्यूनोस आयर्स (Buenos Aires) में जन्मी तेनिया बचपन से ही कम्युनिस्ट थी। उसके पिता बर्लिन (पूर्वी जर्मनी) के एक प्रोफेसर तथा माता पोलैंड की एक यहूदी थी। ये दोनों नाजियों की यातना से बचने के लिए सन् 1935 में अर्जेंटीना भाग आए थे। सन् 1952 में ये लोग फिर पूर्वी जर्मनी लौट गए। पंद्रह वर्ष की तेनिया को यहां एक क्रांतिकारी कम्युनिस्ट के रूप में बाकायदा प्रशिक्षण मिला। स्टेट जिमनेजियम (State Gymnasium) की स्नातक बनने के बाद उसने बर्लिन विश्वविद्यालय में मार्क्सवादी दर्शन का गहन अध्ययन किया। अपने विद्यार्थी जीवन में वह फ्री जर्मन यूथ (Free German Youth) नामक संगठन की सक्रिय कार्यकर्ता रही और आगे चल कर इस संगठन की लेटिन अमरीकी यूथ ब्यूरो की पदाधिकारी बनी। उस समय वह लेटिन अमरीका आने वाले राजनयिकों के लिए दुभाषिए का काम करती थी। 21 वर्ष की उम्र में वह एम.एफ.एस. की एजेंट बनकर तमारा से तेनिया बनी। इस बीच वह मास्को, प्राग और वियना बराबर आती-जाती रही। वह जल्दी ही रूस के गुप्तचर विभाग के.जी.बी. की निगाहों में चढ़ गई। रूस को उस वक्त एक ऐसे एजेंट की आवश्यकता थी, जो लेटिन अमरीका में उसके लिए काम कर सके। एम.एफ.एस. ने के.जी.बी. को तेनिया का नाम सुझाया और तेनिया इस काम के लिए तैयार हो गई।

इसी बीच सन् 1959 में चे से उसकी मुलाकात उस समय हुई जब वह क्यूबा के सरकारी राष्ट्रीय बैंक के प्रेसीडेंट की हैसियत से कास्त्रो सरकार के लिए पूर्वी जर्मनी से एक बहुत बड़ा कर्जा—लगभग एक करोड़ डॉलर हासिल करने के लिए आए थे। एम.एफ.एस. द्वारा तेनिया को चे का दुभाषिया बनाया गया। यहीं तेनिया चे के प्रति और चे तेनिया के प्रति आकर्षित हुआ।

तेनिया को सन् 1961 में मास्को में जासूसी का बड़ा कड़ा प्रशिक्षण देने के बाद पूर्वी जर्मनी के दौरे पर आए क्यूबा के एक बैले नर्तक दल के साथ क्यूबा की राजधानी हवाना (Havana) पहुंचा दिया गया। चे की पहल पर उसे एक सरकारी सांस्कृतिक अतिथि का दर्जा मिला और बाद में चे की कोशिशों से ही उसे क्यूबा के शिक्षा मंत्रालय में नौकरी भी मिल गई। चे ने उसे क्यूबा की महिलाओं के अर्धसैनिक संगठन में शामिल करा दिया।

जब चे ने बोलीविया में गुरिल्ला विद्रोह की योजना बनाई तो उसके लिए व्यवस्था व जासूसी का काम तेनिया को सौंपा। इस तरह तेनिया चे की जासूस होकर बोलीविया की राजधानी ला पेज़ (La Paz) जा पहुंची। यहां तेनिया लोगों के सामने एक दूसरे ही रूप में आई। वह अमरीकन-इंडियन लोक संगीत की मर्मज्ञ,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

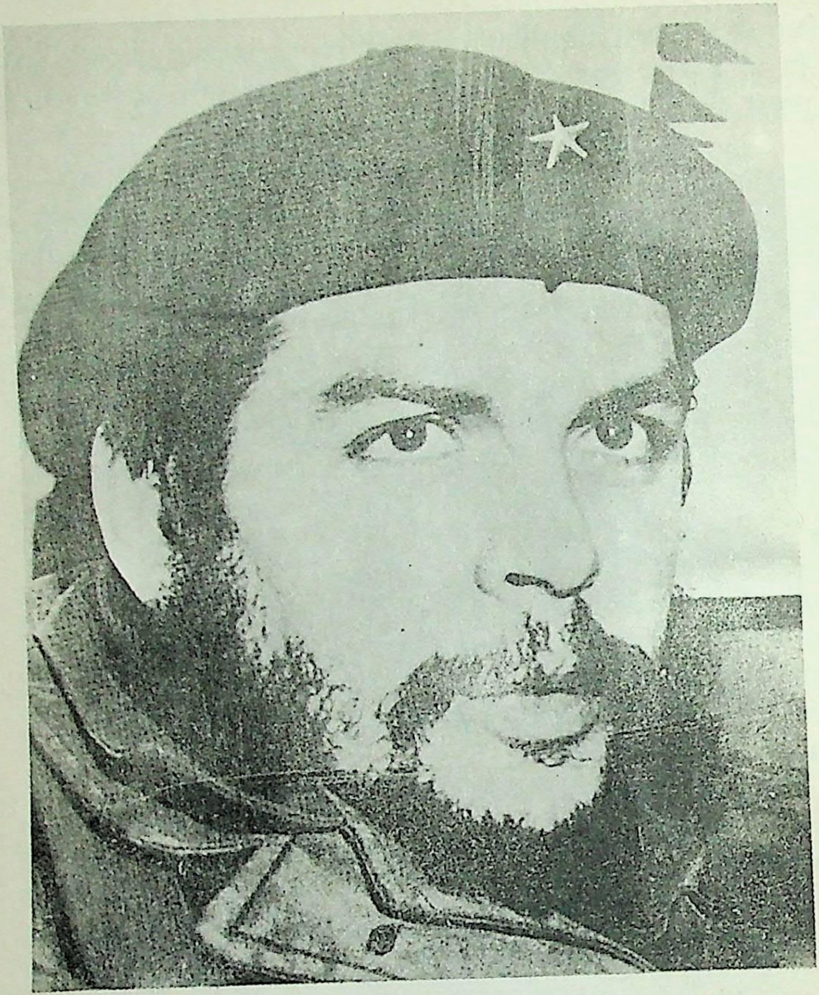

चे ग्वेवारा

सिरेमिक्स की कलाकार और बोलीविया के मानव प्रकृति विज्ञान की अध्ययनकर्ता छात्रा और अध्यापक बन गई। उसे हिप्पियों जैसा उन्मुक्त जीवन पसंद था। अपने रहन-सहन और व्यवहार से वह जल्दी ही युवा-वर्ग के कलाकारों, बुद्धिजीवियों और राजनेताओं द्वारा पसंद की जाने लगी।

तेनिया ने अपने सामाजिक और कलाकार जीवन के छद्म आवरण में चे के लिए वे सारी व्यवस्थाएं कीं, जो एक सफल विद्रोह के लिए आवश्यक होती हैं। उसने वहां कम्युनिस्ट पार्टी से भी संपर्क साधा। जंगल में सक्रिय गुरिल्लों और बाहरी दुनिया के बीच संपर्क स्थापित करने वाली वह एक महत्त्वपूर्ण कड़ी थी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उसने ला पेज़ से गुरिल्लों को भोजन सामग्री, दवाएं, धन, हथियार और नए भर्ती किए गए गुरिल्ले भिजवाए। सही कहा जाए तो तेनिया पर ही सारी योजना का दारोमदार टिका हुआ था।

तेनिया को अपने काम के लिए वहां की नागरिकता और पासपोर्ट की आवश्यकता थी, जिससे वह देश भर में जहां चाहे घूम-फिर सके। इसके लिए उसने सन् 1966 में वहां के एक युवक से यकायक शादी कर ली, जिससे उसे वहां की नागरिकता और पासपोर्ट मिल गया। इसके बाद उसके पति ने उसे बल्गारिक सरकार की एक छात्रवृत्ति दिलवाकर सोफिया (Sofia) भेज दिया। अब उसके लिए पति का कोई उपयोग न रहा। उसने उसे तलाक दे दिया।

चे के लिए सब कुछ करते हुए भी आखिर में तेनिया ने कुछ ऐसी गलतियां कीं जो उस जैसी कुशल जासूस द्वारा नहीं की जानी चाहिए थीं। इससे शक होता है कि उसने जानबूझ कर ऐसी गतिविधियां की, जिससे फौज का ध्यान चे की तरफ आकर्षित हुआ। चे ने विद्रोह के लिए 23 मार्च का दिन तय किया था। सारी तैयारी पूरी थी कि इससे दस दिन पहले ही बोलीवियाई फौज ने हमला बोल दिया। पहले हमले में छापामारों ने सात फौजी मार डाले, लेकिन इस समय से पूर्व की जाने वाली कार्रवाई ने सारी योजना को गड़बड़ा दिया और गुरिल्लों को जंगल में भागना पड़ा। वहां वे चार महीने तक भटकते रहे। अंत में उन्हें फौजी मुठभेड़ में अपनी जानें गंवानी पड़ी।

तेनिया की जिंदगी के अंतिम दिन बहुत ही दुखद और दर्दनाक बीते। चे ने सारी योजना को गड़बड़ा देने का दोषी तेनिया को ठहराया था। जब वे दोनों मिले तो चे ने तेनिया को इतना डांटा कि वह रो पड़ी। सभी गुरिल्ले उसे धोखेबाज समझने लगे। वह गुरिल्लों के साथ जंगल में भागने के लिए मजबूर हो गई। उसे 102 डिग्री बुखार में भी चलना पड़ा। तेनिया अधभूखी और अधनंगी अवस्था में महीनों तक जंगलों में भटकती रही। उसकी मानसिक और शारीरिक हालत बुरी तरह से बिगड़ गई थी।

31 अगस्त, 1967 को वह गुरिल्लों की अंतिम टुकड़ी के साथ मसीकूरी नदी पार करते समय बोलिवियाई फौज की गोलाबारी का शिकार हो गई। उसकी लाश नदी में बह गई, जो आठ दिन बाद निकाली जा सकी। उसकी लाश की पहचान भी उसके पहचानपत्र और पासपोर्ट से हो सकी। इस प्रकार इस जासूस सुंदरी तेनिया का अंत हुआ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

निकोलाई खोखलोव
(Nicolai Khochlov)

के.जी.बी. का जासूस हत्यारा

किसी ने ठीक ही कहा है कि ये दुनिया एक चक्कर है। इस दुनिया में एक और दुनिया है—जासूसी की दुनिया—वो तो एक चक्कर पर भी चक्कर है। अब आप निकोलाई खोखलोव साहब की जिंदगी को ही लीजिए। ये विभूति लावरेंती बेरिया की 'डेथ स्क्वॉड' (Death Squad) यानी "मौत की नींद सुलाने वाले सौदागरों" में से एक थे। बस बेरिया की एक उंगली हिली; और पहुंचा दिया इन्होंने एक जिंदगी को जहन्नुम में। लेकिन एक दिन न जाने भाग्य ने कैसा चक्कर चलाया कि इस "मौत के सौदागर" के साथी ही इसकी मौत के ग्राहक बन गए....।

निकोलाई खोखलोव की कहानी अंतर्राष्ट्रीय जासूसी के क्षेत्र की सबसे सनसनीखेज कहानियों में से एक है। रूसी सीक्रेट सर्विस के सबसे कामयाब हत्यारे के रूप में खोखलोव ने कई ऐसे कुख्यात कारनामे किए थे,जिनके कारण उसका नाम विश्व के अत्यंत महत्त्वपूर्ण सीक्रेट एजेंटों की सूची में शामिल किया जाने लगा था। वह के.जी.बी. के चीफ लावरेंती बेरिया (Lavrenti Beria) की उस 'डेथ स्क्वॉड' स्मर्श (Smersh) को चलाता था जो युरोप में अपने उन एजेंटों को भेजती थी, जिनका सिर्फ एक ही काम होता था—सोवियत व्यवस्था के आलोचकों का सफाया करना—यानी उन्हें मौत की नींद सुलाना। पर एक दिन ऐसा भी आया जब खोखलोव ने खून-खराबे के इस घिनौने अनवरत क्रम से अपना पिंड सदा के लिए छुड़ाना चाहा। उसने अपने एक शिकार के सामने यह भेद खोल दिया कि वह कौन है और किस तरह से उसकी हत्या करने के लिए भेजा गया है। इसके बाद से ही खोखलोव की जिंदगी और मौत का संघर्ष शुरू हो गया। उसे सजा के रूप में खाने के साथ इतना भयानक जहर दिया गया कि पलक झपकते ही पेट में भयानक दर्द और मितली आने की वजह से वह बेहोश हो गया। उसके पूरे शरीर पर गहरे-भूरे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

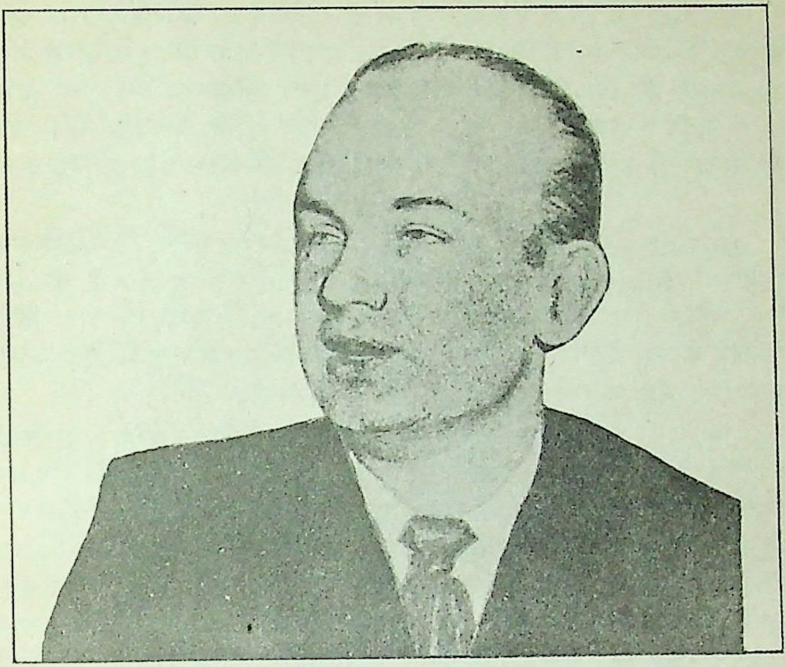

निकोलाई खोखलोव

चकत्ते पड़ गए। बदन जगह जगह से काला और नीला होकर गुब्बारे की तरह सूज गया और उसकी सूखी हुई खाल के पोरों से बूंद-बूंद खून रिसने लगा।

जर्मन डाक्टरों ने हजार कोशिशें कीं पर वे खोखलोव के शरीर से वह जहर नहीं निकाल पाए। खोखलोव के बाल लगातार गिर रहे थे और हड्डियों का क्षय होता जा रहा था। बाद में एक अमरीकी फौजी शिविर में छः सर्जनों ने लगातार एक हफ्ते तक खोखलोव को कॉर्टीसन (Cortisone), विटामिन (Vitamins), स्टीराइड (Steroids) इत्यादि के इंजेक्शन देकर जिंदा रखा। इस इलाज से वह धीरे-धीरे ठीक हो गया। बाद में पता चला कि उसे एटमी विकिरण से प्रभावित किए गए थैलियम(Thallium)का जहर दिया गया था, जिससे शरीर के श्वेत रक्त कण (white blood-cells) खत्म होने लगते हैं।

हत्याओं से मोहभंग होने के बाद ही खोखलोव ने अपना पिंड छुड़ाने के लिए जासूसी के काम में दिलचस्पी लेनी शुरू कर दी थी। सन् 1951 में खोखलोव के अधिकारी ने उससे कहा कि उसे फ्रांस, डेनमार्क और आस्ट्रिया की यात्रा पर जाकर वहां जासूसी करनी होगी। सबसे पहले वह डेनमार्क गया। वहां खोखलोव ने अपना नाम बदलकर हौफबेएर रख लिया। छह महीने के युरोप प्रवास के बाद वह अपनी रिपोर्ट पेश करने के लिए मास्को लौट आया। इस रिपोर्ट में कोई विशेष महत्त्वपूर्ण जानकारी पेश नहीं की गई थी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सन् 1952 के बसंत में खोखलोव के अधिकारी मेजर जनरल सूदोप्लातोव ने उसे फ्रांस जाने का आदेश दिया। उसे स्विस पासपोर्ट दिया गया तथा पेरिस में एक रूसी प्रवासी की हत्या का काम सौंपा गया। मगर खोखलोव अब और अधिक हत्याएं नहीं करना चाहता था। उधर उसकी पत्नी गर्भवती थी। उसने सूदोप्लातोव से कहा कि मेरी मानसिक स्थिति इस समय इस काम के लायक नहीं है।

खोखलोव को डर था कि कहीं उसके इस इनकार पर उसको गिरफ्तार करके साइबेरिया (Siberia) के बेगार शिविरों (Labour Camps) में न भेज दिया जाए। लेकिन ऐसा नहीं हुआ और उसे पूर्वी जर्मनी में रूसी गुप्तचर सेवा के कार्यालय में स्थानांतरित कर दिया गया। खोखलोव समझ गया कि यह युरोप में उसके लिए मौत के एक नए मिशन की शुरुआत है।

सन् 1952 के अंत में खोखलोव को स्विटजरलैंड में स्थित रूसी जासूस गिरोह का मुखिया बना दिया गया। इस बार गुप्तचर सेवा ने उसे अपनी पत्नी और बच्चे को साथ ले जाने की अनुमति भी दे दी। मार्च, 1953 के अंत में खोखलोव की पत्नी पूर्वी बर्लिन (East Berlin) पहुंचने ही वाली थी कि उसी समय स्तालिन का देहांत हो गया और खोखलोव की सारी योजना पर पानी फिर गया। उसे मास्को वापस बुला लिया गया। वहां गुप्तचर सेवा के सर्वोच्च अधिकारी लावरेंती बेरिया की गिरफ्तारी और फिर मृत्युदंड के कारण सारा वातावरण अनिश्चित सा हो गया था।

हालात संभलने के बाद खोखलोव को जर्मनी जाकर फ्रैंकफुर्त (Frankfurt) में जार्जी आकोलोविच (Georgi Okolovich) नामक प्रवासी रूसी की हत्या करने का आदेश दिया गया। आकोलोविच वहां साम्यवाद-विरोधी आंदोलन का मुखिया था। वह पत्रकार था और रूसी प्रवासियों का मुखिया भी था। खोखलोव जानता था कि इस बार इनकार का बिलकुल साफ-साफ, एक ही अर्थ होगा—मौत। इसलिए उसने आवश्यक कागजात ले लिए तथा हत्या के इस मिशन को स्वीकार कर लिया। हत्या करने के लिए उसे एक ऐसा रिवाल्वर दिया गया जिसे चलाते समय जरा भी आवाज नहीं होती थी। इसके अलावा उसे सिगरेट की डिब्बी जैसा एक नए-किस्म का अनोखा शस्त्र भी दिया गया, जिसकी तली दबाने पर उसमें से पोटेशियम साइनाइड के जहरीले घोल में डुबाए गए डमडम छर्रे छूटते थे। खोखलोव को साफतौर पर बता दिया गया कि यदि वह पकड़ा जाए तो उसे किसी हालत में अपना भेद नहीं खोलना तथा यह नहीं बताना कि रूसी गुप्तचर सेवा ने उसे यह काम सौंपा है। बेशक इसके लिए उसे अपनी जान ही क्यों न देनी पड़े और अगर ऐसा उसने न किया, तो खोखलोव अच्छी तरह से जानता था कि के.जी.बी. फिर उसे कैसी भयानक मौत देगी। इस बात की केवल कल्पना मात्र से उसके शरीर में सिहरन दौड़ गई। खोखलोव को यह निर्देश भी दिया गया कि वह प्लान के अनुसार दो जर्मन जासूसों के जरिए यह हत्या करवाएगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

खोखलोव ने मन ही मन सारी योजना तैयार कर ली और जर्मन जासूसो से कहा कि ओकोलोविच की हत्या मैं स्वयं करूंगा। यह सुनकर जर्मन जासूस हक्के-बक्के रह गए, लेकिन वह कुछ कह नहीं पाए। उधर खोखलोव यह बात अच्छी तरह से जानता था कि जर्मन जासूस उसके इस निश्चय की रिपोर्ट रूसी गुप्तचर सेवा को अवश्य देंगे और वह रिपोर्ट फौरन हत्या विभाग 'स्मर्श' (Death Department Smersh) की निदेशिका तमाशनिकोआचेवना की मेज पर पहुंचेगी, जो उच्च अधिकारियों को सूचित करेगी और अंततः खोखलोव का इस दुनिया से पत्ता साफ करने के आदेश जारी कर दिए जाएंगे।

उसे फ्रैंकफुर्त आए दो महीने भी नहीं बीते थे कि एक दिन वह जार्जी ओकोलोविच के घर पहुंचा और उसने बाएं हाथ से दरवाजा खटखटाया। उस समय उसका दाहिना हाथ उसकी जेब में रखे रिवाल्वर पर था।

दरवाजा खुला....। खोखलोव के सामने ओकोलोविच खड़ा था–बिलकुल निहत्था। खोखलोव अपने शिकार से बोला–''मैं रूसी गुप्तचर सेवा का कैप्टन खोखलोव हूं। मुझे आपकी हत्या के लिए भेजा गया है। मैं यह काम नहीं कर सकता। मैं निहत्थे आदमी पर गोली नहीं चला सकता। आप मुझ पर विश्वास करें। मैं आप से निवेदन करता हूं कि आप मुझे सरकारी अधिकारियों तक पहुंचा दें, जिससे कि मैं आत्मसमर्पण कर सकूं।''

ओकोलोविच एकदम से बिलकुल भौंचक्का रह गया। उसके मन में फौरन ख्याल आया कि कहीं यह कोई चाल तो नहीं है? रूसी गुप्तचर अक्सर पश्चिमी देशों में शरण नहीं लेते। तब तक ऐसा कोई उदाहरण सुनने में नहीं आया था। ओकोलोविच ने कहा, ''कैप्टन खोखलोव, आप भीतर आएं और प्रतीक्षा करें। मैं अपना कोट पहनकर आता हूं। उसके बाद हम आपकी इच्छा के अनुसार कार्य करेंगे।''

30 मिनट से भी कम समय के भीतर ओकोलोविच और उसका अनिच्छुक हत्यारा फ्रैंकफुर्त पुलिस के प्रधान कार्यालय जा पहुंचे। पुलिस ने खोखलोव को अमरीकी गुप्तचर अधिकारियों के हाथ सौंप दिया, जिन्होंने उसे पूरा संरक्षण दिया। लेकिन रूसी गुप्तचर सेवा ने खोखलोव का पीछा कहीं पर भी नहीं छोड़ा तथा आखिर में मौका ढूंढ़कर उन्होंने 20 सितंबर, 1957 को उसे विष दे दिया। आज तक यह ज्ञात नहीं हो सका कि फ्रैंकफुर्त के उस रेस्तरां में, जहां खोखलोव भोजन कर रहा था, उसे विष किसने दिया। खैर, कुछ भी हो, नियती को कुछ और मंजूर था। उसने जैसे खोखलोव के प्रायश्चित् से खुश होकर अमरीकी चिकित्सकों के भागीरथी प्रयासों के द्वारा खोखलोव को उसकी जिंदगी वापस लौटा दी थी।

खोखलोव अब फ्रैंकफुर्त की एक प्रकाशन संस्था के लिए वैदेशिक प्रतिनिधि के रूप में काम करता है। ■■

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

किम फिल्बी

(Kim Philby)

दुनिया का सबसे कामयाब डबल एजेंट

सन् 1930 के जमाने में सारी दुनिया के युवक नाजीवाद के खिलाफ प्रगतिशील विचारधाराओं से सराबोर हो रहे थे। इन्हीं दिनों ब्रिटेन के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में अध्ययन कर रहे—किम फिल्बी, एलन बर्गेस, डोनाल्ड मैक्लीन तथा एंथनी ब्लंट नामक चार दोस्तों ने वामपंथ का रास्ता चुना। शीघ्र ही वे कम्युनिज्म के कट्टर समर्थक बन गए। आगे चलकर इन चारों ने ब्रिटिश खुफिया विभाग में घुसपैठ कर अपनी प्रतिभा तथा धूर्तता के बल पर ऊंचे-ऊंचे पद हथिया लिए। इसके साथ ही शुरू हो गया ब्रिटिश एजेंटों की खाल में सोवियत संघ के लिए जासूसी करने का एक खतरनाक सिलसिला, जिसने पश्चिमी जासूसी तंत्र की नींव को ही खोद डाला। इनमें सबसे ज्यादा कुशल, कामयाब, धूर्त और चालाक डबल एजेंट था—किम फिल्बी।

किम फिल्बी से बड़ा डबल एजेंट यानी कि दोगला जासूस दुनिया में शायद ही कोई हुआ हो। उसका पूरा नाम हैरल्ड एड्रियन रसेल फिल्बी (Harold Adrian Russell Philby) था। महान लेखक रुडयार्ड किपलिंग (Rudyard Kipling) की कहानियों के जासूस पात्र 'किम' के नाम पर उसने अपना यह नाम रखा था। उसे बचपन से ही जासूस बनने का बेहद शौक था। बड़े होकर उसके इस शौक में केवल एक चीज और जुड़ गई—वह थी कम्युनिज्म की तन-मन-धन से सेवा करने की प्रबल भावना। इन दोनों पहलुओं ने उसे ब्रिटिश सीक्रेट सर्विस का एक ऐसा अधिकारी बना दिया जो हर बात की सूचना सोवियत संघ पहुंचाता था। फिल्बी की जासूसी को पूंजीवादी देश गद्दारी का नाम देकर नफरत की निगाह से देखते हैं परन्तु उसने आरम्भ में ही अपना रास्ता चुन लिया था। वह कम्युनिज्म का भक्त था और अंत तक उसने अपने विचारों को नहीं बदला। इस रोशनी में उसे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

किम फिल्बी

गद्दार नहीं कहा जा सकता। इसीलिए कम्युनिस्ट रूस ने फिल्बी को आर्डर ऑफ लेनिन' (Order of Lenin) से विभूषित करके के.जी.बी. में महत्त्वपूर्ण पद भी प्रदान किया।

फिल्बी के पिता सेंट जान फिल्बी (St. John Philby) एक दुस्साही प्रवृति के सैलानी थे। भारत में ब्रिटिश राज की नौकरी से अवकाश लेने के बाद वे अरब देशों में जाकर शेखों के लिए काम करने लगे। फिल्बी का जन्म तो भारत में हुआ था लेकिन बचपन का बड़ा हिस्सा अरब देशों में बीता। सन् 1930 के दशक में फिल्बी ब्रिटेन के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में अध्ययन करने आया। वहीं उसकी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मुलाकात एलन बर्गेस, डोनाल्ड मैक्लीन और एंथनी ब्लंट से हुई। किसको पता था कि ये चारों दोस्त आगे चलकर के.जी.बी. के लिए युगपरिवर्तनकारी जासूसी कारनामे अंजाम देंगे। फिल्बी इनमें सबसे तेज-तर्रार लेकिन ठंडे दिमाग का आदमी था।

उन दिनों दुनिया में फासीवाद (Fascism) की लहर उठ रही थी। ब्रिटेन उसका मुकाबला करने की बजाए एक मूक दर्शक-सा साबित हो रहा था। स्पेन के गृह-युद्ध ने छात्रों में फासीवाद विरोधी भावनाएं भड़का दी थीं। वे पूंजीवादी विचारधारा में कोई ठौर न पाकर स्वाभाविक रूप से साम्यवाद की तरफ झुकने लगे थे। फिल्बी और उसके दोस्त भी इसी दौर में कट्टर कम्युनिस्ट बन गए। विश्वविद्यालय के कम्युनिस्ट अध्ययन केन्द्र में बहसों के दौरान सैमुअल कैहान (Samuel Cahan) नामक सोवियत रेजीडेंट डायरेक्टर ने एक कुशल जौहरी की तरह फिल्बी में छिपे प्रतिभा रूपी रत्न को पहचान लिया। सन् 1933 में लंदन सेफ हाउस (London Safe House) में फिल्बी और कैहान की मुलाकात हुई। यहीं से फिल्बी की जासूसी जिंदगी की नींव पड़ी।

कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में उन दिनों कम्युनिस्ट विचारधारा के लिए सहानुभूति रखने वाले छात्र तो बहुतेरे थे लेकिन फिल्बी को इनमें सबसे ज्यादा काबिल समझा गया। कैहान ने उसे खुफिया कार्रवाइयों के लिए चुना। फिल्बी ने अपनी मोटरबाइक पर युरोप में वियना की यात्रा की। उन दिनों वियना में गृह-युद्ध छिड़ा हुआ था। रूसियों की देखरेख में फिल्बी ने वियना के साम्यवादियों की सहायता की। सड़कों पर होने वाली मारकाट में फिल्बी की योग्यता और रणनीति बनाने की बेजोड़ क्षमता का कम्युनिस्टों ने भरपूर फायदा उठाया। इसी दौरान फिल्बी की मुलाकात लित्जी (Litzy) से हुई। इस यहूदी लड़की को फिल्बी ने अपनी पहली बीवी बनाया। लित्जी फिल्बी के मकान-मालिक की लड़की थी। बाप-बेटी, दोनों ही पक्के कम्युनिस्ट थे।

लंदन वापस आकर फिल्बी ने राजनीति में खुले तौर पर हिस्सा लेने की बजाय बड़ी चालाकी का परिचय देते हुए एक प्रतिष्ठित साप्ताहिक पत्रिका के लिए काम करना शुरू कर दिया। स्पेन में गृह-युद्ध शुरू हो चुका था। फिल्बी ने स्वतंत्र पत्रकार के रूप में गृह-युद्ध की रिपोर्टिंग करने के लिए स्पेन की राह पकड़ी। अपनी रिपोर्टिंग में फिल्बी ने जनरल फ्रांको (Franco) के नेतृत्व वाले फासिस्ट पक्ष की तरफदारी की। यह उसकी दूसरी चालाकी थी। वह चाहता था कि किसी को उसके कम्युनिस्ट होने पर जरा सा भी शक न हो। ठीक भी था, लोग कल्पना भी नहीं कर सकते थे कि कोई कम्युनिस्ट फासिस्टों का समर्थन भी कर सकता है। इस रिपोर्टिंग के जरिए फिल्बी ने काफी नाम कमाया। *लंदन टाइम्स (London Times)* ने उसे फ्रांस में अपना संवाददाता नियुक्त किया। लंदन लौटकर फिल्बी ने पाया कि उसके तमाम पुराने दोस्त अपनी कम्युनिस्ट पहचान छिपाकर सीक्रेट सर्विस और युद्ध संगठनों या विदेश मंत्रालय में भर्ती हो रहे हैं। फिल्बी ने एस.आई.एस. के तहत

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बने 'स्पेशल ऑपरेशन एक्सेक्यूटिव' (Special Operation Executive) में आसानी से नौकरी हासिल कर ली।

फिल्बी ने खुफिया एजेंट का प्रशिक्षण प्राप्त किया। उसके प्रशिक्षकों की निगाह में फिल्बी एक अत्यंत मेहनती और होशियार विद्यार्थी था। बिना हथियार लड़ने की कलाओं में उसने बड़ी जल्दी ही गजब की महारथ हासिल कर ली। फिल्बी को जोड़-तोड़ करने वाले एक दल का मुखिया बनाया गया। फिल्बी ने इस दल का संचालन इतनी खूबी से किया कि ब्रिटिश इंटेलीजेंस ने प्रभावित होकर उसे प्रतिजासूसी विभाग (Counter Espionage) में भेज दिया। फिल्बी के सोवियत संपर्कों के लिए यह एक जबरदस्त खुशखबरी थी। फिल्बी को ईरानी मामलों से संबंधित विभाग सौंपा गया। वह सारी महत्त्वपूर्ण सूचनाएं एकत्रित कर रूसियों को पहुंचा देता था। उन दिनों अमरीका में सी.आई.ए. का गठन नहीं हुआ था। 'आफिस ऑफ स्ट्रेटेजिक सर्विसेज' (Office of Strategic Services) के नाम से बने एक संगठन के तहत अमरीकी जासूसी होती थी। फिल्बी ने ओ.एस.एस. के सारे रहस्यों तथा गतिविधियों की जानकारी भी रूसी खुफिया विभाग को दे दी, जिससे सोवियत कम्युनिस्टों को भारी फायदा हुआ क्योंकि ओ.एस.एस. को ही बाद में सी.आई.ए. में बदला गया।

फिल्बी की गद्दारी से बेखबर ब्रिटिश खुफिया विभाग ने उसे और भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण गोपनीय जिम्मेदारियां देना जारी रखा। उसे एम.आई.-6 की सोवियत डेस्क (Soviet Desk) का इंचार्ज बना दिया गया। अब फिल्बी के हाथ में जैसे एक दोधारी तलवार लग गई। वह न केवल सोवियत संघ को महत्त्वपूर्ण सूचनाएं दे सकता था बल्कि सोवियत संघ में काम कर रहे ब्रिटिश जासूसों द्वारा भेजी गई जानकारी को दबा भी सकता था। तुर्की के रूसी काउंसल जनरल कोंस्तंतिन वोल्कोव (Konstantin Volkov) ने उन्हीं दिनों ब्रिटिश दूतावास को खबर भेजकर अनुरोध किया कि वह ब्रिटेन में काम कर रहे रूसी जासूसों का नाम बताने को तैयार है। फिल्बी को जैसे ही पता चला, उसने फौरन इसकी खबर के.जी.बी. को दे दी और वोल्कोव को अपने कब्जे में लेने और पूछताछ में जान-बूझकर इतनी देर की कि वोल्कोव को मास्को उड़ा ले जाने का रूसियों को पूरा-पूरा मौका मिल गया। अपनी इस चालबाजी के बावजूद फिल्बी को सन् 1946 में अपनी ''युद्धकालीन सेवाओं'' के लिए ओ.बी.ई. (Obedient of British Empire) का खिताब मिला। फिल्बी ने फौरन एक और चालाकी खेली। उसने अपनी कम्युनिस्ट पत्नी को तलाक दे दिया ताकि उस पर शक करने की रत्ती भर भी गुंजाइश न रह सके। फिल्बी की नई पत्नी का नाम था ऐलीन फर्से।

तीन साल बाद फिल्बी को अपने जीवन का सबसे ऊंचा पद मिला। उसे वाशिंगटन में तैनात किया गया, जहां उसका काम ब्रिटिश सीक्रेट सर्विस और सी.आई.ए. के काम के बीच तालमेल बैठाना था। फिल्बी ने जल्दी ही अमरीकी अधिकारियों से अच्छी-खासी पटरी बैठा ली। पर एक व्यक्ति का विश्वास जीतने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

में फिल्बी को कामयाबी नही मिल सकी। इसका नाम था—जेम्स एंगलटन (James Angleton)। एंगलटन ओ.एस.एस. का एक पुराना खुर्राट अधिकारी था और लम्बे अर्से से उसे फिल्बी की गतिविधियों पर शक था। सी.आई.ए. के प्रतिजासूसी विभाग के इंचार्ज के रूप में उसने फिल्बी को कभी मुंह नहीं लगाया। एंगलटन ने फिल्बी के स्टाफ के एक व्यक्ति को फोड़ लिया और उसे फिल्बी की हर गोपनीय गतिविधि की खबर मिलने लगी।

दरअसल एंगलटन का विचार था कि सन् 1946 में अल्बानिया में गुरिल्ला ऑपरेशन करवाने की ब्रिटिश कोशिशों को नाकाम करने के पीछे फिल्बी की शैतानी ही काम कर रही थी। अंग्रेजों की कोशिश थी कि अल्बानिया में स्थापित हुए नए कम्युनिस्ट शासन को उखाड़ फेंका जाए। इस अभियान में अंग्रेजों के साथ अमरीकन जासूस भी शामिल हुए। पर जब भी अल्बानिया में गुरिल्लों को पैराशूट के जरिए उतारा जाता, हर बार कम्युनिस्ट सैनिक उन पर हमला करने के लिए तैयार खड़े मिलते। इसके बाद ब्रिटिश और अमरीकी जासूसों ने मिलकर रूस के युक्रेन (Ukrane) नामक स्थान के निष्कासितों को वहां पैराशूट से उतारने की योजना बनाई पर उतरते ही वे लापता हो गए। बाद में उनके नेता स्टीफन बांदेरा (Stefan Bandera) का म्युनिख में के.जी.बी. ने कत्ल कर दिया। इन दोनों नाकामयाबियों के कारणों पर जब गौर हुआ तो एंगलटन को लगा कि ऐसा सब कुछ होने की एकमात्र वजह किम फिल्बी ही है। पर उन दिनों एंगलटन का सारा ध्यान फिल्बी के दोस्त डोनाल्ड मैक्लीन की ओर लगा हुआ था। एंगलटन चाहता था कि पहले मैक्लीन की गद्दारी की पोल खोली जाए और फिर फिल्बी के चेहरे पर पड़ा नकाब उतार फेंका जाए।

लेकिन फिल्बी को यह जानकारी भी मिल गई कि प्रतिजासूसी वाले मैक्लीन को गिरफ्तार करने ही वाले हैं। उन दिनों मैक्लीन लंदन में और एलन बर्गेस वाशिंगटन में काम कर रहे थे। मैक्लीन को सचेत करने के लिए फिल्बी ने बर्गेस को लंदन भेजा। बर्गेस ने लंदन में मैक्लीन के दफ्तर में जाकर चुपचाप उसके हाथ में एक चिट थमा दी। पर हुआ बिल्कुल उल्टा। भागना केवल मैक्लीन को चाहिए था पर योजना के विपरीत बर्गेस भी उसके साथ रूस भाग लिया। इससे पूरा शक फिल्बी पर गया क्योंकि बर्गेस वाशिंगटन में फिल्बी के फ्लैट में ही रहता था। ब्रिटिश संसद में मार्कुस लिप्टन (Marcus Lipton) नामक सांसद ने आरोप लगाया कि मैक्लीन और बर्गेस को भगाने में एक तीसरे आदमी का हाथ है और उस तीसरे आदमी का नाम है—किम फिल्बी। फिल्बी को फौरन लंदन बुलाया गया। एस.आई.एस. के अधिकारियों ने फिल्बी से जबरदस्त पूछताछ की पर वे उससे कुछ भी नहीं उगलवा पाए। फिल्बी बात करते समय कभी-कभी हकलाता था। उसने अपनी इस कमजोरी को हथियार की तरह इस्तेमाल किया। जब भी वह किसी सवाल का जवाब देने में गड़बड़ाता, फौरन हकलाने का अभिनय करने लगता।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बहरहाल फिल्बी को इस्तीफा देना पड़ा। परन्तु *आब्जर्वर (Observer)* और *एकानोमिस्ट (Economist)* नामक पत्र-पत्रिकाओं के प्रतिनिधि के रूप में उसे बेरुत में काम करते देखकर सीक्रेट सर्विस ने उससे एक स्वतंत्र जासूस के रूप में फिर काम लेना शुरू कर दिया। बेरुत में फिल्बी की गतिविधियां पूरी तरह पत्रकारों जैसी थीं। वह सस्ते बार में बैठकर धुआंधार शराब पीता और जासूसी करता। उन्हीं दिनों उसने *न्यूयार्क टाइम्स (New York Times)* के सैम पोप (Sam Pope) की पत्नी को अपने मोहजाल में फंसाकर अपनी तीसरी शादी रचाई।

सन् 1962 में एस.आई.एस. के एक जासूस निकोलस इलियट (Nicholas Elliott) ने बेरूत जाकर फिल्बी के खिलाफ सारे प्रमाण पेश करने की जिम्मेदारी ली। इलियट बेरूत तो पहुंच गया पर फिल्बी को पकड़ न सका। फिल्बी ने भांप लिया कि उसकी दाल अब और नहीं गलने वाली। एक डबल एजेंट के रूप में उसका जीवन खत्म हो चुका है। जनवरी, 1963 की एक रात किम फिल्बी को सपत्नीक एक ब्रिटिश राजनयिक के फ्लैट पर डिनर लेने आना था। वह ब्रिटिश राजनयिक अपने मेहमान की प्रतीक्षा ही करता रह गया। अपनी पत्नी को बीच रास्ते में कार में बैठी छोड़कर एक सोवियत वाणिज्य मिशन के जरिए फिल्बी मास्को रवाना हो चुका था। यह आज तक पता नहीं चल पाया कि फिल्बी समुद्र के रास्ते से भागा या हवाई रास्ते से।

फिल्बी की तीसरी पत्नी जब उससे मिलने मास्को पहुंची तो पाया कि उसके पति को 'आर्डर ऑफ लेनिन' की उपाधि मिल चुकी है। उधर ब्रिटेन में फिल्बी का ओ.बी.ई. का खिताब छीन लिया गया था। रूस पहुंचते ही फिल्बी को के.जी.बी. में एक बड़ा पद दे दिया गया था। श्रीमती फिल्बी को यह जानकर सबसे ज्यादा निराशा हुई कि रूस में डोनाल्ड मैक्लीन की पत्नी फिल्बी के साथ पत्नी के रूप में रह रही है। बाद में फिल्बी ने एक रूसी महिला से विवाह कर लिया। आखिरी खबर मिलने तक वह उसी महिला के साथ रह रहा था।

सोवियत संघ में के.जी.बी. के एक बड़े अधिकारी के रूप में किम फिल्बी के काम का लोगों को बहुत कम पता है। यह जरूर माना जाता है कि के.जी.बी. के चीफ यूरी आंद्रोपोव (Yuri Andropov) के साथ फिल्बी की बहुत पटती थी। आंद्रोपोव को रूसी कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव पद तक पहुंचाने के पीछे भी किम फिल्बी का हाथ माना जाता है। रूस पलायन के बाद फिल्बी को एक बार दमिश्क (सीरिया) में देखा गया, जहां ब्रिटिश और अमरीकन एजेंटों ने उसकी हत्या करने की कोशिश की पर चालाक फिल्बी उनके इरादों को फौरन भांपकर वहां से फरार हो गया।

फिल्बी ने मास्को पलायन करने के पच्चीस वर्ष बाद, पहली बार फिलिप नाइटले (Philip Knightley) को दिए गए एक इण्टरव्यू में अपनी चुप्पी तोड़ी। उसने नाइटले को बताया कि वह आज भी अपने कम्युनिस्ट विचारों पर उतना ही

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

फिल्बी मास्को की एक सड़क पर

दृढ़ है, जितना कि वह कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के छात्र के रूप में था। उसने यह भी रहस्योद्घाटन किया कि ब्रिटिश सरकार ने उसे जानबूझकर मास्को भागने दिया, ताकि सरकार सुरक्षा काण्ड के बखेड़े और सनसनीखेज मुकदमेबाजी से बच सके। फिल्बी ने अपनी जिंदगी पर एक पुस्तक भी लिखी है—माई साइलेंट वार (*My Silent War*)

कुछ भी हो, फिल्बी को द्वितीय विश्व युद्ध के बाद का सबसे मशहूर और सनसनीखेज जासूस माना जा सकता है। जहां तक ब्रिटिश खुफिया विभाग का सवाल है, फिल्बी के मामले में उससे पहली सबसे बड़ी गलती यह हुई कि विश्व युद्ध के बाद फिल्बी को नियमित जासूस के रूप में बिना किसी जांच-पड़ताल किए हुए भर्ती कर लिया गया। किम फिल्बी का नाम जहां ब्रिटिश और अमरीकी खुफिया विभाग के नाम पर लग्गा काला धब्बा है, वहां के.जी.बी. के लिए वह एक चमकते हुए लाल सितारे के समान है। ■■

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

डोनाल्ड मैक्लीन
(Donald Maclean)

फिल्बी का साथी डबल एजेंट

मैक्लीन पैसे के लिए नहीं वरन् अपनी विचारधारा के लिए डबल एजेंट बना था। विद्यार्थी जीवन में उसने एक मजदूरों के राज्य का सपना देखा और उसी को साकार करने के लिए उसने पूंजीवादी देशों के खिलाफ सोवियत संघ के लिए जासूसी करना स्वीकार किया....।

डोनाल्ड डुअर्ट मैक्लीन (Donald Duart Maclean) छः फुट लम्बा, सुनहरे बालों और सुंदर आंखों वाला एक बेहद आकर्षक व्यक्तित्व का जासूस था। वह किम फिल्बी की परंपरा के उन चार ब्रिटिश डबल एजेंटों में से एक था, जिन्होंने मार्क्सवाद के प्रति समर्पण की भावना के कारण सोवियत संघ के लिए जासूसी करते हुए गद्दार होने की तोहमत तक मंजूर की।

एक प्रभावशाली राजनैतिक नेता का पुत्र डोनाल्ड मैक्लीन कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में अध्ययन करते समय मार्क्सवादी विचारधारा के सम्पर्क में आया। उसे लगा कि रूस मजदूरों का स्वर्ग और एक आदर्श देश है। वह ब्रिटेन छोड़कर रूस में रहने और वहीं काम करने को तैयार हो गया पर लंदन में कम्युनिज्म की दीक्षा देने वाले व्यक्ति ने उससे कहा कि उसकी उपयोगिता सोवियत संघ में न होकर ब्रिटेन में ही है। उसे चाहिए कि सारे जीवन दिखावे के लिए कम्युनिज्म की निंदा करके ब्रिटिश विदेश सेवा में ऊंचे पदों पर अपनी जगह बनाए और वहीं से सोवियत संघ की मदद करे। साफ तौर पर यह सीधे-सीधे सोवियत संघ के लिए जासूसी करने का आह्वान था। मैक्लीन ने पूरे प्राण-प्रण से इसे स्वीकार कर लिया।

विदेश सेवा में नौकरी की शुरुआत करके मैक्लीन ने खुद को बहुत मेहनती और योग्य अफसर साबित किया। उसमें कुछ दुर्गण थे, जैसे—अंधाधुंध शराब पीना, समलैंगिक मैथुन का आदी होना और बहस-मुबाहिसे में लड़ बैठना। उसने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

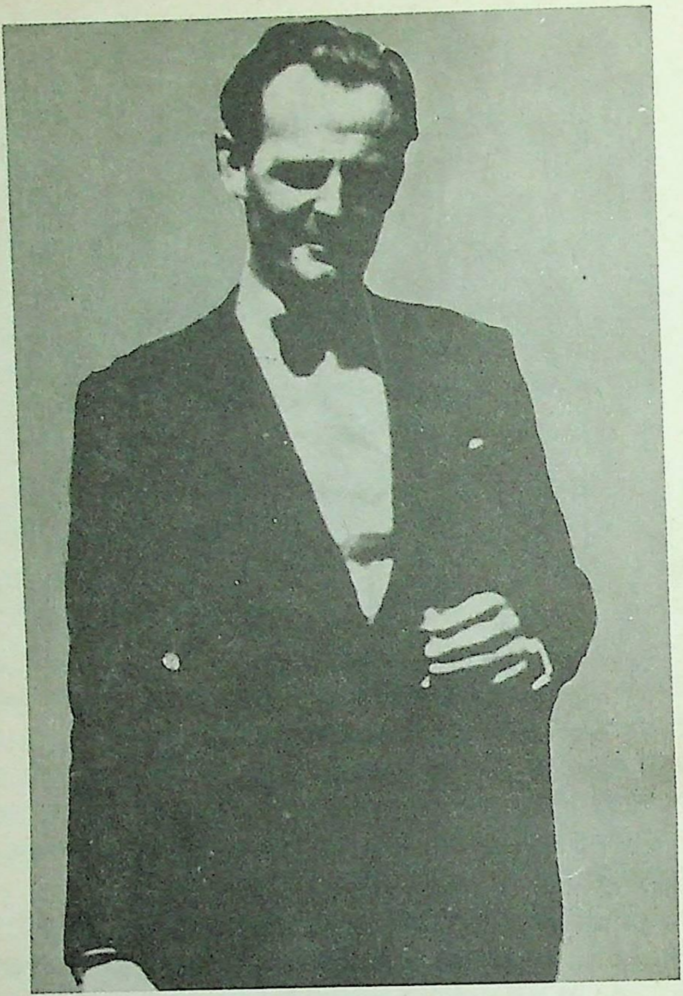

डोनाल्ड मैक्लीन

एक अमरीकी लड़की से शादी की पर उसकी पत्नी इस बात से बहुत परेशान रहती थी कि मैक्लीन अक्सर अमरीकी पूंजीवाद की निंदा करते-करते अमरीकियों की ही खिंचाई करने लगता था। जैसे-जैसे मैक्लीन विदेश सेवा में ऊपर चढ़ने लगा वैसे-वैसे वह रूसियों के लिए काम का आदमी बनता चला गया। मैक्लीन कहीं उन्हें धोखा न दे इसलिए उसे दबाव में रखने के लिए रूसियों ने उसकी ऐसी तस्वीरें उतरवा ली थीं, जिनमें वह किसी और पुरुष के साथ अप्राकृतिक मैथुन कर रहा था। दरअसल मैक्लीन को यह गंदी आदत डलवाने की जिम्मेदारी एलन बर्गेस की थी, जो फिल्बी, मैक्लीन और एंथनी ब्लंट की श्रृंखला का चौथा डबल एजेंट था। बर्गेस ने ही मैक्लीन के आपत्तिजनक चित्र खींचे थे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सन् 1944 में मैक्लीन की योग्यता से प्रभावित होकर उसे वाशिंगटन में ब्रिटिश दूतावास का प्रथम सचिव बनाया गया। अमरीकनों, केनेडियनों और अंग्रेजों के साथ मिलजुल कर बनाई गई संयुक्त 'परमाणु विकास समिति' में मैक्लीन ही एकमात्र ब्रिटिश प्रतिनिधि था। इसी हैसियत के कारण मैक्लीन एटम बम बनाने की तैयारियों से जुड़ी जानकारी रूस को देने लायक स्थिति में आ गया था। अमरीका के 'परमाणु ऊर्जा आयोग' में कभी भी जा सकने के लिए मैक्लीन को एक पास दिया गया था। मैक्लीन वहां अक्सर जाता था और दफ्तर के घंटे खत्म होने के बाद भी देर तक रुका रहता था। सप्ताह में दो बार मैक्लीन न्यूयार्क के सोवियत दूतावास में जाता। इसी दौरान वह सारी जानकारी रूसियों के हवाले कर देता। रूसी दूतावास से कूट भाषा में मैक्लीन की रिपोर्ट मास्को भेज दी जाती। मैक्लीन की यह जासूसी रूसियों के लिए जितनी कीमती साबित हो रही थी, उतनी ही ब्रिटेन और अमरीका के लिए नुकसानदेह।

रूसी इतिहासकार राय मेडवेडेव (Roy Medvedev) ने लिखा है कि संभवतः मैक्लीन ने ही मास्को को कोरियाई युद्ध के बारे में जानकारी दी। अमरीकी राष्ट्रपति हैरी ट्रूमैन (Harry Truman) ने जनरल मैक आर्थर (Mac Arthur) को आदेश दिया था कि वे चीनी क्षेत्र में युद्ध न छेड़ें। मैक्लीन को जैसे ही यह खबर मिली, वैसे ही मास्को के जरिए इसका पता चीन के नेता माओ त्से-तुंग (Mao Tse-tung) को चल गया। इससे पहले माओ को अमरीका के चीन पर हमले का डर था। इसलिए उन्होंने कोरिया में दखलंदाजी नहीं की थी, पर यह सूचना मिलते ही चीनी फौजों ने कोरियाई अभियान के लिए क़ूच क़र दिया।

मेडवेडेव ने यह शक भी जाहिर किया कि सोवियत संघ को अमरीकी परमाणु बम के निर्माण की पूरी खबर देने में भी मैक्लीन का ही हाथ था। पोट्सडम (Potsdam) सम्मेलन में राष्ट्रपति ट्रूमैन ने जब परमाणु बम बनाने की घोषणा की तो सोवियत नेता स्तालिन (Stalin) कतई प्रभावित नहीं हुए क्योंकि उन्हें मैक्लीन के जरिए पहले ही सारी जानकारी मिल चुकी थी।

सन् 1944 से सन् 1949 तक मैक्लीन की जासूसी से संबंधित सभी गतिविधियां बेरोक-टोक चलती रहीं पर धीरे-धीरे सी.आई.ए. को मैक्लीन पर शक होने लगा। सी.आई.ए. को लगा कि एटमी ऊर्जा आयोग में आने-जाने के पास का मैक्लीन द्वारा दुरुपयोग किया जाता है। इसलिए वह पास रद्द कर दिया गया। सी.आई.ए. को यह संदेह एक और ब्रिटिश डबल एजेंट द्वारा दी गई सूचना के आधार पर हुआ। इस एजेंट ने मैक्लीन की एटमी जासूसी करने में मदद की और दूसरी ओर अमरीकी एजेंटों को भी इशारा कर दिया। पर इससे भी ज्यादा ठोस सबूत सी.आई.ए. को रूसी दूतावास से सप्ताह में दो बार मास्को जाने वाली ढेर सारी सूचनाओं में मिला। सी.आई.ए. को यह भी शक हुआ कि अचानक मास्को जाने वाली सूचनाओं की संख्या क्यों बढ़ गई। सी.आई.ए. के कूट भाषा विश्लेषकों ने पाया कि सोवियत दूतावास के कूट भाषा लिपिक ने कुछ सरल कोड में खुफिया

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

संदेश भेजे हैं। दरअसल यह उस क्लर्क की गलती थी। उसे आदेश था कि मैक्लीन की सूचनाएं सरल कोड में न भेजी जाएं। इससे पहले भी मैक्लीन की रिपोर्ट उच्चस्तरीय कोड में भेजी जाती थी। सी.आई.ए. के कूट भाषा विशेषज्ञों ने ब्रिटिश कूट भाषा विद्नों की मदद से इस सरल कोड को तोड़ लिया। उन्होंने पाया कि सप्ताह में दो बार जब-जब मैक्लीन सोवियत दूतावास के चक्कर लगाता तभी सूचनाएं मास्को भेजी जातीं और सूचनाओं से पता चला कि उनका स्रोत ब्रिटिश दूतावास है और सूचनाएं देने वाले की पत्नी गर्भवती है।

ये सारे तथ्य मानो चीख-चीखकर मैक्लीन की तरफ इशारा करते थे। सी.आई.ए. के प्रतिजासूसी विभाग के मुखिया जेम्स एंगलटन ने इन जानकारियों को भविष्य के इस्तेमाल के लिए सुरक्षित कर लिया लेकिन ब्रिटिश सरकार तब तक किसी हालत में भी यह बात पचाने को तैयार नहीं थी कि उनका गणमान्य प्रथम सचिव एक रूसी भेदिया भी हो सकता है। इसी बीच किम फिल्बी को अपने सूत्रों के जरिए मालूम पड़ चुका था कि मैक्लीन पर सरकार का शक गहरा होता जा रहा है। उसने के.जी.बी. को चौकन्ना किया कि वह मैक्लीन से सूचनाएं लेना बंद कर दे लेकिन रूसियों के मुंह तो जैसे खून लग चुका था। उन्हें इतनी महत्त्वपूर्ण सूचनाएं मिल रही थीं कि वे मैक्लीन की जासूसी को हर कीमत पर चालू रखना चाहते थे। फिल्बी ने तय किया कि जैसे भी हो मैक्लीन को इस संबंध में चेतावनी दी जानी चाहिए। उधर अपने ऊपर बढ़ते हुए शक के दबाव को देखकर मैक्लीन ने और भी ज्यादा शराब पीनी शुरू कर दी। उसकी नशाखोरी देखकर मैक्लीन को अमरीका से हटाकर काहिरा भेज दिया गया, जहां उसने और भी ज्यादा गैर-जिम्मेदारी का परिचय दिया। उसका मानसिक संतुलन लगभग बिगड़ सा गया। कुछ ठीक होने पर सन् 1951 में मैक्लीन को लंदन में विदेश विभाग के अमरीकी हिस्से का मुखिया बनाया गया। ब्रिटिश विदेश विभाग के कर्ताधर्ता तब तक भी मैक्लीन पर पूरा भरोसा करते थे।

मई, 1951 में फिल्बी को अमरीका में पता चला कि एम.आई.-5 के पूछताछ करके अपराध कबूलवाने में कुशल विलियम स्कार्डन (William Skardon) को मैक्लीन की जांच करने की जिम्मेदारी दी गई है। उसका माथा ठनका और उसने अपने साथ रह रहे और काम कर रहे एलन बर्गेस को फौरन लंदन भेजकर मैक्लीन को अंतिम चेतावनी दी। एंथनी ब्लंट की मदद से बर्गेस और मैक्लीन समुद्री रास्ते से रूस भागने में सफल हो गए।

मास्को पहुंचकर मैक्लीन से के.जी.बी. के एजेंटों ने तमाम पूछताछ की। मैक्लीन ने उन्हें संतुष्ट कर दिया। मैक्लीन को के.जी.बी. में कर्नल की रैंक मिली। विदेशी पुस्तकों से भरी अलमारियों वाला एक आरामदेह मकान मिला और मास्को के बाहर एक आरामगाह भी उसे भेंट में दी गई। मास्को में मैकलीन का नाम मार्क पेत्रोविच फ्रेजर (Mark Petrovich Frazer) रखा गया।

मैक्लीन की मृत्यु सन् 1983 में हुई। मृत्यु के समय वह निपट अकेलेपन का

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मेलिंडा मैक्लीन

शिकार हो चुका था। वैसे उसके पास विदेश मंत्रालय के सलाहकार का पद था लेकिन 69 साल की आयु और निरंतर शराबखोरी ने उसे तकरीबन रिटायर सा ही कर दिया था। उसकी पत्नी मेलिंडा (Melinda) उसे छोड़कर बाद में मास्को भागकर आए किम फिल्बी के साथ रहने लगी थी। मैक्लीन अपना ज्यादातर वक्त अपनी आरामगाह में बागवानी करते हुए बिताता था। उसे कोई तनख्वाह नहीं दी जाती थी, लेकिन अंत में उसे के.जी.बी. की पेंशन अवश्य प्रदान की गई थी। सन् 1948 में उसने अपनी वसीयत लिखी थी, जिसके अनुसार उसके लंदन बैंक एकाऊंट में पड़े 5,000 पौंड उसकी पत्नी मेलिंडा को मिलने वाले थे लेकिन तब तक ब्रिटिश सरकार मैक्लीन का वह एकाऊंट जब्त कर चुकी थी। ■■

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

'सर' एंथनी ब्लंट

('Sir' Anthony Blunt)

फिल्बी के बाद दूसरे नंबर का डबल एजेंट

एंथनी ब्लंट ने किम फिल्बी, बर्गेस और मैक्लीन की तरह रूस भागना मंजूर नहीं किया। इस कला के इतिहासविद् को पूरा यकीन था कि ब्रिटिश खुफिया विभाग कभी भी उसका पर्दाफाश नहीं कर सकता। खुद को बचाने के लिए ब्लंट ने शाही परिवार की प्रतिष्ठा तक दांव पर लगा दी थी। पर अंत में उसका भेद खुल ही गया। बेशक तब तक बहुत देर हो चुकी थी....।

ब्रिटेन में सोवियत संघ के लिए काम करने वाले डबल एजेंटों में किम फिल्बी के बाद 'सर' एंथनी फेड्रिक ब्लंट (Sir Anthony Fredrick Blunt) का नाम आता है। ब्लंट और फिल्बी में अंतर यह था कि पोल खुल जाने के डर से ब्लंट ने कभी भी सोवियत संघ भागना मंजूर नहीं किया। फिल्बी, डोनाल्ड मैक्लीन और एलन बर्गेस जैसे डबल एजेंट जहां गिरफ्तारी की नौबत आने पर मास्को फरार हो गए, वहां ब्लंट ने ब्रिटिश खुफिया विभाग की पूछताछ और लगातार जांच-पड़ताल को अपनी चालाकी के जाल में फंसाकर गुमराह किए रखा। ब्लंट का भांडा फूटा लेकिन बहुत देर से। उस समय तक ब्रिटेन की रानी ब्लंट को 'सर' की उपाधि तक दे चुकी थी। सन् 1930 के दशक में ब्लंट ने रूसियों के लिए काम करना शुरू किया था और नवंबर, 1979 में संसद में एक प्रश्न का उत्तर देते हुए प्रधानमंत्री मार्गरेट थैचर (Margaret Thetcher) ने कहा कि "यूनाइटिड किंगडम (United Kingdom) की सुरक्षा के संबंध में जिस व्यक्ति की गतिविधियों पर शक जाहिर किया गया है, उसका नाम सर एंथनी ब्लंट है।" इसी के कुछ दिन बाद ब्लंट से उसकी सारी उपाधियां छीन ली गईं और चार साल बाद 76 वर्ष की आयु में ब्लंट की मृत्यु हो गई। ब्लंट की कहानी चालबाजी और धोखाधड़ी से भरी एक ऐसी सनसनीखेज दास्तान है, जिसकी मिसाल और कहीं मिलना असंभव है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सन् 1926 में युवा ब्लंट ने ब्रिटेन के मशहूर ट्रिनिटी कालेज (Trinity College) में दाखिला लिया और जल्दी ही एक प्रभावशाली अध्येता के रूप में सभी पर अपना सिक्का जमा लिया। उसे वहीं अध्यापक बनाने की पेशकश की गई। उन दिनों ब्रिटेन के छात्रों में फासीवाद विरोधी और वामपंथ समर्थक लहर फैली हुई थी। ब्लंट भी इसी दौर में मार्क्सवाद के सम्पर्क में आया। ट्रिनिटी कालेज में ही ब्लंट की एलन बर्गेस से दोस्ती हुई। सोवियत जासूसों के तत्कालीन मुखिया ने ब्लंट को काम सौंपा कि वह प्रतिभाशाली छात्रों को कम्युनिज्म में दीक्षित करे ताकि आगे चलकर कभी उनका जासूसी के काम में इस्तेमाल हो सके।

सन् 1939 तक ब्लंट ने कला के इतिहासविद् के रूप में ख्याति हासिल कर ली थी और उसे कोर्टोल्ड इंस्टीट्यूट ऑफ आर्ट के उपनिदेशक पद पर नियुक्ति भी मिल गई थी। द्वितीय विश्व युद्ध शुरू होते ही ब्लंट ने फौज की नौकरी के लिए आवेदन किया पर छात्र जीवन में मार्क्सवादी होने के कारण उसे फौज में जगह नहीं मिली। आश्चर्य की बात यह थी कि ब्लंट को ब्रिटिश सीक्रेट सर्विस एम.आई.-5 में नौकरी फौरन मिल गई। अगले पांच साल तक ब्लंट ने एम.आई.-5 के प्रतिजासूसी अभियान (Counter Espionage Campaign) की हर खबर रूसियों को देना जारी रखा।

सबसे पहली महत्त्वपूर्ण सूचना ब्लंट ने रूसियों को यह दी कि रूसी कम्युनिस्ट पार्टी के पोलित ब्यूरो के सदस्य अनस्तास मिकोयान के दफ्तर में एक ब्रिटिश जासूस छुपा बैठा है। दूसरी सूचना थी कि एम.आई.-5 ने ब्रिटिश कम्युनिस्ट पार्टी के दफ्तर में ट्रांसमीटर फिट कर रखे हैं ताकि वहां होने वाली हर बातचीत को सुना जा सके। ब्लट ने सोवियत खुफिया विभाग को यह भी बता दिया कि ब्रिटिश कम्युनिस्ट पार्टी के दफ्तर की निगरानी कौन-कौन लोग कर रहे हैं।

एम.आई.-5 ने ब्लंट को तटस्थ दूतावासों के खिलाफ जासूसी की जिम्मेदारी दी। ब्लंट का काम था उन दूतावासों की चिट्ठी-पत्री खोलकर पढ़ना और उनके टेलीफोन टेप करना। ब्लंट ने इस दौरान प्राप्त की गई सारी जानकारी रूसी जासूसों को दे दी। विश्व युद्ध खत्म होते ही एंथनी ब्लंट ने एम.आई.-5 की नौकरी छोड़ दी। कला-इतिहासविद् के रूप में ब्लंट को किंग जार्ज षष्टम (King George VI) के लिए चित्रों के सर्वेक्षक का काम मिल गया। ब्लंट ने सोवियत जासूसों के लिए संदेशवाहक का कांम करने, गोपनीय दस्तावेज और रकम इधर से उधर करने और एम.आई.-5 के अपने पूर्व साथियों से अनौपचारिक वार्ता के दौरान प्राप्त सूचनाओं को सप्लाई करने का काम जारी रखा। ब्लंट ने धीरे-धीरे शाही परिवार से अपने सम्पर्क बढ़ाए। बर्गेस और मैक्लीन जब ब्रिटेन छोड़कर भागे तो ब्लंट ने ही फिल्बी को शक के दायरे से निकालने में मदद की।

सन् 1951 में जब सीक्रेट पुलिस एलन बर्गेस के लंदन स्थित फ्लैट की तलाशी ले रही थी, ब्लंट ने चुपचाप फ्लैट में रखे तीन पत्रों को जेब में डाल लिया। ये पत्र फिल्बी और बर्गेस की गद्दारी के सबूत थे। यंह ब्लंट का दुस्साहस था कि उस

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

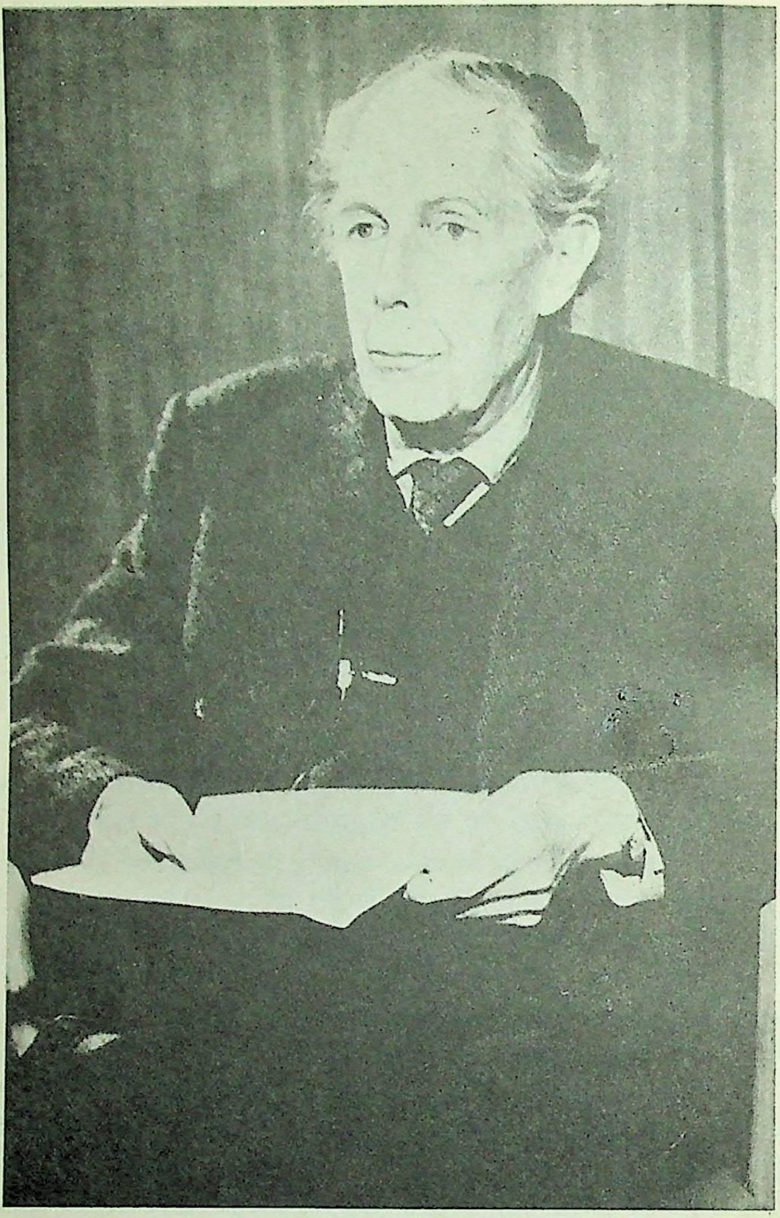

'सर' एंथनी ब्लंट

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

फ्लैट की चाबी सीक्रेट पुलिस को खुद उसी ने दी थी। रूसियों ने ब्लंट से कहा कि अगर वह चाहे तो उसके रूस भागने का इंतजाम किया जा सकता है पर ब्लंट ने जवाब दिया कि उससे कुछ नहीं कबुलवाया जा सकता। यही हुआ। अगले 12 साल तक एम.आई.-5 अपने पूर्व एजेंट एंथनी ब्लंट से हजार पूछताछ करने के बावजूद उसके खिलाफ एक सबूत भी नहीं प्राप्त कर सकी। सन् 1954 में ब्लंट ने अपनी कोशिशों से फिल्बी को बेरूत में फिर से सक्रिय किया। यह ब्लंट का ही कमाल था कि ब्रिटेन में सक्रिय सोवियत संघ के जासूसों की लगातार मदद करते रहने के बावजूद भी ब्रिटिश खुफिया विभाग उस पर हाथ नहीं डाल सका।

ब्लंट की किस्मत ने उसे पहली बार सन् 1963 में दगा दिया। माइकल व्हिटनी स्ट्रेट (Michael Whitney Straight) नामक अमरीकी कला अध्येता ने एफ.बी.आई. को बताया कि वह और ब्लंट मिलकर रूसियों के लिए काम करते रहे हैं। एफ.बी.आई. ने यह जानकारी ब्रिटेन को दे दी। एम.आई.-5 के एजेंट आर्थर मार्टिन (Arthur Martin) ने अप्रैल, 1964 के एक दिन ब्लंट के घर का दरवाजा खटखटाया। मार्टिन ने ब्लंट को बताया कि उसके डबल एजेंट होने का आखिरी सबूत मिल गया है। अगर वह सब कुछ कबूल कर ले तो एटार्नी जनरल सर जान होब्सन (Sir John Hobson) ने उस पर मुकदमा न चलाने का वायदा किया है। इसी वायदे के तहत एम.आई.-5 ने ब्लंट को राष्ट्र विरोधी जासूसी के आरोपों से मुक्त कर दिया। ब्रिटेन में आज भी यह सवाल पूछा जाता है कि आखिर इतनी जबरदस्त गद्दारी के बावजूद भी ब्लंट को खुला क्यों छोड़ दिया गया?

इसका उत्तर ब्लंट और शाही परिवार के ताल्लुकातों में खोजा जाता है। सन् 1946 में ब्लंट को शाही परिवार की ओर से एक खुफिया काम के लिए जर्मनी भेजा गया था। ब्लंट की जिम्मेदारी थी कि ड्यूक ऑफ विंडसर (Duke of Windsor) और (Hitler) के बीच सन् 1937 में हुई बातचीत का रिकार्ड वापस ब्रिटेन ले आए। अगर बातचीत के ये अंश किसी तरह प्रेस के हाथ लग जाते तो शाही परिवार को शर्मिंदगी का सामना करना पड़ता। अपनी इसी सेवा के उपलक्ष में ब्लंट को पहले "रॉयल विक्टोरियन ऑर्डर" (Royal Victorian Order) का पुरस्कार मिला और मई, 1956 में नाइटहुड (Knighthood) अर्थात् 'सर' की उपाधि मिली। ड्यूक ऑफ विंडसर मौजूदा रानी के चाचा थे। सन् 1983 में जासूसी की दुनिया के मशहूर रिपोर्टर चैपमेन पिंचर (Chapman Pincher) ने जब डेली *एक्सप्रेस (Daily Express)* में यह रहस्योद्घाटन किया तो ब्लंट ने फौरन इससे इनकार कर दिया। ब्लंट का कहना था कि वह तो रानी विक्टोरिया के उन पत्रों को हासिल करने गया था, जो उन्होंने अपनी बेटी और प्रशिया की साम्राज्ञी फ्रेड्रिक (Fredrick) को लिखे थे। ब्लंट की सफाई पर किसी ने यकीन नहीं किया।

ब्लंट को माफी मिलने का सबसे बड़ा कारण यही था कि 60 के दशक की शुरुआत में शाही परिवार को जासूसी के मुकदमे में लपेटने से ब्रिटेन का राष्ट्रीय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अहित ही होता क्योंकि उन्हीं दिनों ब्रिटेन वैसे भी गद्दार जासूसों के खिलाफ चलाए जा रहे कई मुकदमों में फंसा हुआ था। सन् 1978 तक ब्लंट बाकायदा राजमहल की नौकरी का मजा लूटता रहा लेकिन तभी एंड्रयू बोयल (Andrew Boyle) ने अपनी मशहूर किताब *द क्लाइमेट ऑफ ट्रेज़न (The Climate of Treason)* प्रकाशित की। मानहानि के मुकदमे के डर से इस किताब में ब्लंट का नाम तो नहीं लिखा गया था पर उसमें जिस गद्दारी का वर्णन था, वह ब्लंट की ही थी। ब्लंट को उस किताब में 'मौरिस' (Maurice) नाम दिया गया था। बर्गेस, फिल्बी और मैक्लीन की गद्दारी की कहानी में इस नए 'मौरिस' नामक डबल एजेंट के जुड़ने से चारों तरफ हंगामा मच गया। इसी पुस्तक के रहस्योद्घाटनों के आधार पर श्रीमती थैचर को संसद में मानना पड़ा कि मौरिस कोई और नहीं बल्कि एंथनी ब्लंट का ही एक नकली नाम है। बाद में चैपमेन पिंचर ने एक और किताब *देयर ट्रेड इज ट्रैचरी (Their Trade is Treachery)* लिखकर ब्लंट की गद्दारी के कुछ और नये अध्याय खोलने की कोशिश की।

ब्लंट का दृढ़ विश्वास था कि केवल सोवियत संघ ही दुनिया को पूंजीवाद और फासीवाद की बुराइयों से बचा सकता है। इसलिए उसने ऐसा कोई मौका नहीं छोड़ा, जिसमें सोवियत संघ की मदद की जा सकती हो। जिन दिनों वह एम.आई.-5 छोड़ चुका था और उसके हाथ में सीधे-सीधे गुप्त दस्तावेज नहीं लगते थे, उन दिनों उसने राजनैतिक और खुफिया अफवाहबाजी की रूसियों को जानकारी दी ताकि उन्हें ब्रिटेन के राजनैतिक माहौल की अंदरूनी हवा मिल सके।

अपराधी साबित होने पर टी.वी. दर्शकों के सामने ब्लंट ने अपनी रक्षा में केवल इतना कहा—"मैंने अपनी आत्मा के साथ कभी धोखा नहीं किया।" ब्लंट की चेतना कम्युनिस्ट विचारधारा की अनुयायी थी और उसी ने उसे डबल एजेंट बनने पर मजबूर किया। ■■

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जार्ज ब्लैक
(George Blake)

जो डबल एजेंट बनते-बनते ट्रिपल एजेंट बन गया

अंग्रेजों का ख्याल था कि जार्ज ब्लैक उनकी ओर से सोवियत जासूसी तंत्र में घुसपैठ कर रहा है। पर असलियत इससे ठीक उलटी थी। ब्लैक दरअसल एक रूसी जासूस था जिसने एक दीमक की तरह उल्टे इंग्लैंड के ही जासूसी तंत्र को खोखला कर दिया। कम्युनिस्टों को 'ऑपरेशन गोल्ड' से संबंधित महत्त्वपूर्ण सूचनाएं देकर उसने ब्रिटेन और अमरीका को जो घोर नुकसान पहुंचाया, उसकी केवल कल्पना ही की जा सकती है।

22 अक्तूबर, 1967 को लंदन की वॉर्मवुड स्क्रब्स (Wormwood Scrubs) जेल की खिड़की तोड़कर एक महत्त्वपूर्ण कैदी फरार हो गया। जेल अधिकारियों ने पाया कि खिड़की की सलाखें मजबूती से सीमेंट में नहीं गड़ी हुई थीं। इस कैदी को सोवियत संघ के लिए जासूसी के आरोप में छह साल पहले 42 साल की सजा दी गई थी। थोड़े दिनों बाद यह भगोड़ा कैदी मास्को में देखा गया। इस खतरनाक कैदी का नाम था जार्ज ब्लैक। जार्ज ब्लैक के.जी.बी. के लिए इतना महत्त्वपूर्ण डबल एजेंट था कि उसे जेल से फरार करवाने में सोवियत एजेंटों ने काफी जोखिम उठाया।

ब्लैक का जन्म रोट्टरडम, हॉलैंड (Rotterdam, Holland) में सन् 1922 में हुआ था। उसके पिता का नाम अल्बर्ट विलियम बेहर (Albert William Behar) था। बेहर मिस्र का रहने वाला एक यहूदी था। एक डच महिला से शादी करने के कारण यहूदी समाज ने उसका हुक्का-पानी तकरीबन बंद सा ही कर दिया था। किशोर जार्ज बेहर (George Behar) ने हॉलैंड पर नाजी कब्जे के खिलाफ हुए प्रतिरोध-संघर्ष में जमकर हिस्सा लिया पर बाद में उसे मजबूर होकर ब्रिटेन भागना पड़ा। वहां पहुंचकर बेहर ने अपना नाम बदलकर ब्लैक रख लिया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

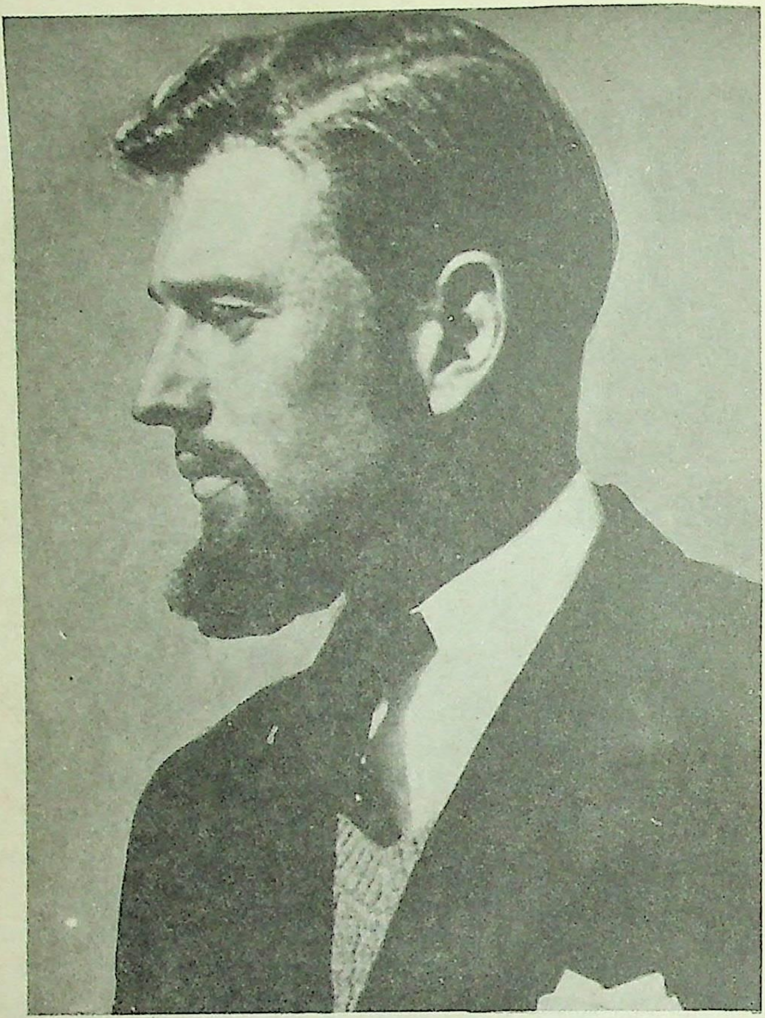

एम.आई.-6 का जासूस जार्ज ब्लैक

विभिन्न भाषाओं पर असाधारण अधिकार होने के कारण उसे शाही नौसेना के खुफिया विभाग में आसानी से नौकरी मिल गई।

युद्ध के बाद ब्लैक को विदेश विभाग में स्थानांतरित कर दिया गया। यहां भी ब्लैक के बहुभाषाविद् होने की योग्यता काम आई। उन दिनों डा. क्लाउस फुश (Klaus Fuchs) की गिरफ्तारी और एटम बम का फार्मूला सोवियत संघ पहुंच जाने के कारण ब्रिटेन में नियम बना दिया गया था कि सभी सरकारी नौकरों को ब्रिटिश मूल का ही होना चाहिए। पर जब तक यह कानून लागू होता, तब तक ब्लैक को विदेश विभाग में जगह मिल चुकी थी। उसे कोरिया में विदेश विभाग के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वाइस काउंसलर के रूप में भेजा जा चुका था। वाइस काउंसलर का पद तो एक आवरण मात्र था। असल में वह ब्रिटिश सीक्रेट सर्विस एम.आई-6 (M.I.-6) का एजेंट था।

कोरिया में काम करते हुए ब्लैक को कम्युनिस्टों ने गिरफ्तार कर लिया। उसे जेल में भयानक यातनाएं दी गईं। बाद में ब्रिटिश खुफिया विभाग को शक हुआ कि शायद कोरिया में ही ब्लैक को तकलीफें देकर कम्युनिस्टों ने अपनी ओर मिला लिया होगा। पर ब्लैक के साथी कैदियों का कहना था कि भीषण यातनाएं भी ब्लैक को रत्ती भर तोड़ नहीं पाई थीं।

सन् 1953 में ब्लैक को बर्लिन (Berlin) में एम.आई-6 की ओर से एक विशेष मिशन पर भेजा गया। उसका मिशन था सोवियत जासूसी तंत्र में घुसपैठ करना। यह एक अत्यंत कठिन तथा जोखिम भरा काम था। ब्लैक को ब्रिटेन ने इजाजत दी कि वह कुछ मामूली किस्म के रहस्य रूसियों को देकर उनका विश्वास जीते और डबल एजेंट का ढोंग रचकर सारी जानकारियां इकट्ठी करे। उन दिनों बर्लिन कम्युनिस्टों और पूंजीवादी देशों के शीत-युद्ध का केन्द्र बना हुआ था। चार साल तक एम.आई-6 ब्लैक के काम से संतुष्ट रही। एजेंसी को यकीन रहा कि वह जितने रहस्य रूसियों के सामने ब्लैक के जरिए चारे के रूप में डलवा रही है, उससे कहीं ज्यादा रहस्य उसे हासिल हो रहे हैं। असलियत कुछ और थी। डबल एजेंट का ढोंग करते-करते ब्लैक दरअसल 'ट्रिपल एजेंट' के रूप में अपना कायाकल्प कर चुका था।

सन् 1961 में एक जर्मन जासूस को ब्रिटेन में गिरफ्तार किया गया। थोड़े दिनों बाद एक पोलिश जासूस 'डिफेक्टर' (defector) बनकर ब्रिटेन चला आया। इन दोनों ने एम.आई-6 को बताया कि जार्ज ब्लैक के.जी.बी. का एजेंट बन चुका है। उन दिनों ब्लैक बेरूत में था। पोर्टलैंड स्पाई रिंग (Portland Spy Ring) का एजेंट गोर्डन लोंसडेल (Gorden Lonsdale) गिरफ्तार होने को था। ब्लैक ने यह सूचना सोवियत संघ भेजी। यह संदेश बीच में ही पकड़ लिया गया। इससे एम.आई-6 का शक यकीन में बदल गया कि ब्लैक सचमुच गद्दार हो गया है। इससे पहले कि ब्लैक को अपनी पोल खुलने का शक हो पाता उसे लंदन बुलाकर गिरफ्तार कर लिया गया।

ब्लैक के ऊपर गोपनीय तौर पर मुकदमा चलाया गया। दरअसल एम.आई-6 की जबरदस्त पूछताछ के जवाब में उसने अपने गुनाह कबूल कर लिए थे, इसलिए उसके ऊपर लंबा खुला मुकदमा चलाने की कोई जरूरत नहीं रह गई थी। दूसरे, तत्कालीन ब्रिटिश प्रधानमंत्री हैरल्ड मैकमिलन (Harold Mcmillan) का कहना था कि अगर ब्लैक पर खुला मुकदमा चलाया जाएगा तो सारी दुनिया में फैले हुए ब्रिटिश एजेंटों के नाम खुलने का खतरा पैदा हो जाएगा। उन्हें या तो गिरफ्तार कर लिया जाएगा या फिर गोली से उड़ा दिया जाएगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यह अलग बात है कि मैकमिलन की यह सतर्कता ज्यादा काम नहीं आ पाई। ब्लैक ने पहले ही के.जी.बी. को 40 कम्युनिस्ट विरोधी एजेंटों की शिनाख्त करवा दी थी। बर्लिन में ब्लैक की डेस्क पर आए हर खुफिया दस्तावेज की फोटो कॉपी के.जी.बी. के हवाले की जा चुकी थी। दोपहर के भोजन के वक्त ब्लैक दफ्तर में ही छिप जाता और जब पहरेदार दरवाजा बाहर से बंद कर देता तो ब्लैक इत्मीनान से दस्तावेजों की नकल उतारता रहता। ब्लैक ने ही के.जी.बी. को उन पूर्वी जर्मनों के बारे में बताया जो पश्चिम जर्मनी को 'डिफेक्ट' (defect) कर गए थे। के.जी.बी. ने इन जर्मनों का अपहरण करके वापस पूर्वी जर्मनी भेज दिया। ब्लैक ने जो सबसे बड़ी गद्दारी की, वह थी 'ऑपरेशन गोल्ड' (Operation Gold) के बारे में के.जी.बी. को सूचना दे देना।

'ऑपरेशन गोल्ड' सी.आई.ए. और एम.आई-6 ने मिलकर शुरू किया था। इसका मकसद था रूस और पूर्वी जर्मनी के खुफिया संदेशों को बीच में पकड़ लेना। दिसंबर, 1953 में इसकी योजना बनाई गई। तीन महीने तक धीरे-धीरे सुरंग खोदी गई। इसकी गहराई सड़क के तल से 7.3 मीटर थी। सुरंग में 2.1 मीटर व्यास के लोहे के पाइपों को बड़े-बड़े चैम्बरों से जोड़ा गया था। इन चैम्बरों में मॉनीटरिंग (monitoring) उपकरण, टेलीफोन एक्सचेंज का स्विचबोर्ड और एक एयर कंडीशनिंग प्लांट था। इसके अलावा 'ऑपरेशन गोल्ड' में अत्याधुनिक माइक्रोफोन, एम्पलीफायर, टेप रिकार्डर, टेलीप्रिंटर और ट्रांसफॉर्मर इस्तेमाल किए गए जिससे एक बार में 400 जगह हो रही बातचीत को सुना जा सकता था। पूर्वी जर्मनी के सरकारी कार्यालयों, कार्ल्सहार्स्ट में बने के.जी.बी. मुख्यालय और मास्को व दूसरे वारसा संधि देशों को जोड़ने वाली सोवियत आर्मी कमांड पोस्ट (Soviet Army Command Post) की सारी लाइनें इस सुरंग के जरिए टेप कर ली गईं।

सर्दी आई और सुरंग के ऊपर धरती पर बर्फ जमी। सुरंग से निकलने वाली गर्मी से कुछ दिनों में यह बर्फ पिघलने लगी। इसे रोकने के लिए सुरंग की छत पर रेफ्रीजरेशन सिस्टम लगाया गया। इतनी सतर्कता के बावजूद 22 अप्रैल, 1956 को पूर्वी जर्मनी के सीमा रक्षकों और सोवियत खुफिया विभाग ने सुरंग के पूर्वी हिस्से के ऊपर खुदाई शुरू कर दी। यह देखकर सुरंग के अंदर काम कर रहा स्टाफ फौरन फरार हो गया, पर सुरंग कम्युनिस्टों के कब्जे में पहुंच गई। इसका रूसियों ने जबरदस्त फायदा उठाया। उन्होंने सारी दुनिया में जमकर प्रचार किया कि उनके खिलाफ कैसे-कैसे हथकंडे अपनाए जा रहे हैं। वे तकरीबन 40 हजार विशिष्ट लोगों को सारी दुनिया से छांटकर वहां लाए और उन्हें सुरंग दिखाई। कम्युनिस्ट विरोधी जासूसी तंत्र की यह बहुत बड़ी असफलता थी।

सी.आई.ए. को कुछ महीने पहले ही शक हो गया था कि शायद रूसियों को सुरंग का पता चल गया है। जिन दफ्तरों की लाइनें टेप की गई थीं, उन पर बहुत कम बातचीत होने लगी थी। गिरफ्तारी के बाद ब्लैक ने कबूल किया कि सुरंग खुद

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

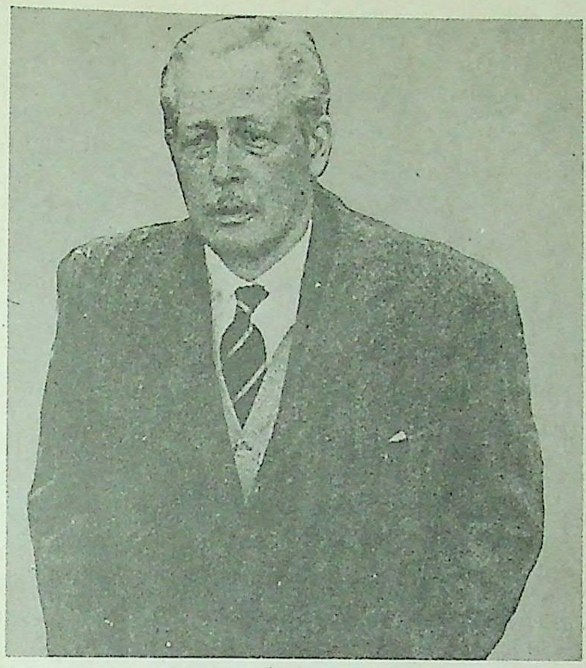

प्रधानमंत्री हेरल्ड मैकमिलन

कर पूरी होने से पहले ही उसने मास्को को 'ऑपरेशन गोल्ड' की जानकारी भेज दी थी।

ब्लैक ने मध्य पूर्व एशिया में अपनी नियुक्ति के दौरान भी रूसियों के लिए जासूसी जारी रखी। सन् 1958 में मिस्रियों ने उस पूरे इलाके में ब्रिटिश जासूसों का जाल छिन्न-भिन्न कर दिया। इसके पीछे भी ब्लैक का हाथ था। कुछ एजेंट गिरफ्तार कर लिए गए और कुछ को वापस बुलाना पड़ा।

कहा जाता है कि जार्ज ब्लैक के कम्युनिस्टों का जासूस बनने के पीछे उसकी मौसी के पति हेनरी कुरील (Henri Curiel) का हाथ था। हेनरी कुरील एक रहस्यमय व्यक्ति था। उसने पहले मिस्र की कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना में हाथ बटाया। बाद में वह फ्रांस चला गया, जहां उसने न केवल के.जी.बी. के लिए काम किया बल्कि कई आतंकवादी संगठनों और मुक्ति आंदोलनों में भी मदद पहुंचाई। कुरील को सन् 1978 में कुछ अज्ञात हत्यारों ने ठिकाने लगा दिया। कुरील जब काहिरा में रहता था, तभी ब्लैक को भी किशोरावस्था में उसके साथ रहने का मौका मिला था। यहीं पर ब्लैक का कम्युनिस्ट विचारधारा से पहला सम्पर्क हुआ जो बाद में गहरा होता चला गया। कहा जाता है कि जाज ब्लैक ने ब्रिटिश सीक्रेट सर्विस को मशहूर जासूस किम फिल्बी (Kim Philby) से भी ज्यादा नुकसान पहुंचाया। ■■

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एमिल क्लाउस जूलियस फुश
(Emil Klaus Julius Fuchs)

एटम बम का जासूस

क्लाउस फुश न तो कोई पेशेवर जासूस ही था और न ही उसने कभी पैसे आदि के लिए जासूसी की। लेकिन फिर भी इस वैज्ञानिक ने जो कारनामा कर दिखाया वह सारी जासूसी के इतिहास में एक बिलकुल अलग ही स्थान रखता है। उसने अमरीका के परमाणु बम का रहस्य रूस को पहुंचाकर सारी दुनिया की राजनैतिक स्थिति को पलट के रख दिया। उसके इस कारनामे के फलस्वरूप एक और तो रूस सारी अनुसंधान की जहमत से बचकर परमाणु शक्ति के रूप में आ खड़ा हुआ, दूसरी ओर अमरीका के लिए इस क्षेत्र में अपना एकाधिकार खत्म हो जाने की वजह से यह एक बहुत बड़ा धक्का सिद्ध हुआ। पकड़े जाने पर फुश ने बिना किसी लाग-लपेट के अपना अपराध स्वीकार कर लिया और मुकदमे के दौरान न्यायालय में कहा—"मैंने तो ऐसा केवल भविष्य के शक्ति संतुलन और विश्व शांति के लिए किया है।"....

सन् 1949 में अमरीकी जासूसों को पता चला कि रूस भी एटम बम बना रहा है और उसके बम अमरीकी बमों के मुकाबले अधिक ताकतवर होंगे। इसी आधार पर तत्कालीन अमरीकी राष्ट्रपति हैरी ट्रूमैन (Harry Truman) ने मान लिया कि एटम बम पर से अमरीका का एकाधिकार समाप्त हो गया है और सन् 1952 तक रूस भी एटम बम बना लेने में अवश्य कामयाब हो जाएगा।

जासूसों को शक हुआ कि हो-न-हो एटम बम का रहस्य रूस ने अमरीका से ही उड़ाया है। इसी के बाद अमरीका के कई एटमी संस्थानों में काम करने वाले वैज्ञानिकों के बारे में खुफिया जांच-पड़ताल जोरो से शुरू हो गई। इससे पता चला कि लोस अलामौस (Los Alamos) प्रयोगशाला में काम करने वाला परमाणु वैज्ञानिक (nuclear scientist) क्लाउस फुश कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य रह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्लाउस फुश

चुका है। फुश ब्रिटिश नागरिक था और उन दिनों वह लोस अलामौस से लौटकर ब्रिटेन के हारवेल (Harwell) संस्थान में शोध कार्य के लिए लौट गया था।

तभी एफ.बी.आई. के महानिदेशक जे. एडगर हूवर (J. Edgar Hoover) को मालूम हुआ कि फुश के बूढ़े पिता एमिल फुश (Emil Fuchs) को पूर्वी जर्मनी के एक विश्वविद्यालय में प्राध्यापक बनाया गया है। हूवर को आश्चर्य हुआ कि पूर्वी जर्मनी में धर्मशास्त्र विभाग की स्थापना होना तथा उसके प्राध्यापक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के पद पर फुश के पिता की नियुक्ति होना—सभी घटनाएं संदेह पैदा करने वाली थीं।

हूवर ने इस मामले की पूरी छानबीन करने की ठानी तथा अपने जासूसों को तैनात कर दिया। उस समय क्लाउस फुश इंग्लैंड के हारवेल एटमी संस्थान के सैद्धांतिक भौतिकी विभाग का अध्यक्ष था। अमरीकी जासूसों ने जांच का काम ब्रिटिश जासूसों को सौंप दिया और ब्रिटिश जासूस फुश के पीछे लग गए। उन्होंने उससे पूछताछ शुरू कर दी। एम.आई.-5 के पूछताछ विशेषज्ञ विलियम स्कार्डन (William Skardon) ने फुश पर इतना अधिक मानसिक दबाव डाला कि एक दिन टूटकर फुश ने सब कुछ स्वीकार कर लिया।

क्लाउस फुश का जन्म सन् 1911 में जर्मनी के फ्रैंकफुर्त नगर के निकट रसेलहाइम (Russelheim) में हुआ था। उसके पिता प्रोटेस्टेंट पादरी थे। फुश जब थोड़ा बड़ा हुआ तो उसने जर्मनी की हार देखी और यह भी देखा कि जो जर्मनी उसके बचपन में खुशहाल था, वही युद्ध के बाद भूख और गरीबी का बुरी तरह से शिकार हो गया। इसी समय उसके पिता कील (Kiel) विश्वविद्यालय में धर्मशास्त्र के प्राध्यापक बन गए और वह उनके साथ, वहां चला गया। उस जमाने में जर्मनी के युवकों के सामने केवल दो आकर्षण थे—हिटलर का नाजीवाद या लेनिन के समर्थन से बनी जर्मनी की कम्युनिस्ट पार्टी। जो युवक हिटलर की नाजी पार्टी से बचते वे कम्युनिस्ट पार्टी में चले जाते और उनके मन में रूस के प्रति भक्तिभाव पैदा हो जाता।

फुश भी धीरे-धीरे पक्का साम्यवादी हो गया और सन् 1930 में कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य भी बन गया। जल्दी ही नाजियों से बचने के लिए उसे इंग्लैंड भागना पड़ा, जहां उसे शरण मिल गई। उसने एडिनबरा (Edinbergh) विश्वविद्यालय से भौतिकी में शोध करके डॉक्टरेट प्राप्त कर ली। इसी समय दूसरा विश्व युद्ध छिड़ गया। ब्रिटेन ने अपने यहां बसे हुए जर्मन नस्ल के तमाम लोगों को कनाडा भेज दिया, जहां उन्हें युद्ध बंदी शिविर में रखा गया। सन् 1941 में ब्रिटिश सुरक्षा अधिकारियों ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि फुश नाजी नहीं है। फुश को छोड़ दिया गया।

इस समय फुश एक राष्ट्रविहीन नागरिक था, उसने ब्रिटेन की नागरिकता ग्रहण की। एटमी प्रयोगशाला में काम करते-करते एक दिन फुश के मन में ख्याल आया कि वह विश्व के जिस प्रथम परमाणु बम का आविष्कार कर रहा है, वह तो अमरीका को बहुत ताकतवर बना देगा। तब रूस का क्या होगा? उसे लगा कि अमरीका और रूस की दोस्ती सिर्फ जापान के खिलाफ लड़ने तक ही है और उसके बाद अगर रूस के पास परमाणु बम नहीं हुआ तो निश्चय ही कम्युनिज्म नहीं टिक पाएगा तथा विश्व शक्ति-संतुलन में अस्थिरता आ जाएगी।

अमरीका में सोवियत जासूसों का इंचार्ज सोवियत कौंसल अनातोली याकोवलेव (Anatoli Yakovlev) था। उसने एक दिन क्लाउस फुश से कहा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कि उसे फलां-फलां तारीख और वक्त पर न्यूयार्क की एक निश्चित जगह पर पहुंच जाना है। उसे अपने हाथ में टेनिस की गेंद पकड़े रहना है। वहां उसे दस्ताने पहने और हाथ में हरे कवर की किताब लिए एक व्यक्ति मिलेगा। यह मुलाकात जनवरी, 1944 के किसी दिन की है। फुश का यह मुलाकाती फिलाडेल्फिया का रसायनशास्त्री (Chemist) हैरी गोल्ड (Harry Gold) था जो कई साल से रूस के हाथों अमरीकी रहस्य बेच रहा था। एक टैक्सी में बैठकर वे दोनों थर्ड एवेन्यू (Third Avenue) के एक रेस्तरां में गए। गोल्ड ने फुश से अपनी सही पहचान छिपाई और कहा कि उसका नाम रेमंड (Raymond) है। मगर फुश ने साफ दिल से अपना सही-सही परिचय उसे दे दिया।

इस समय तक परमाणु बम के सफल परीक्षण में अभी डेढ़ वर्ष की देरी थी। फुश ब्रिटिश वैज्ञानिक मिशन के साथ एटमी अनुसंधान में लगा हुआ था। उसने तब तक के अनुसंधानों की पूरी जानकारी रेमंड को दी और रेमंड उर्फ गोल्ड ने उस जानकारी को रूस भेज दिया। दोनों अपने-अपने घर लौट गए। गोल्ड अपने पिता के घर 6823, किंड्रेड स्ट्रीट, फिलाडेल्फिया में रहता था।

हैरी गोल्ड का जन्म सन् 1907 में स्विटजरलैंड के बर्न (Barne) नगर में हुआ था। उसके माता-पिता रूसी मूल के थे। उसका जन्म का नाम हाइनरिख गोलोदनोत्स्की (Heinrich Golodnotsky) था। तीन वर्ष बाद उसके माता-पिता फिलाडेल्फिया (Philadelphia) जा बसे थे, वहां उसका नया नामकरण किया गया—हैरी गोल्ड।

29 वर्ष का हैरी गोल्ड जिन दिनों पेंसिलवानिया शुगर कम्पनी में काम कर रहा था उन्हीं दिनों उसके मित्र ट्राय नाइल्स (Troy Niles) ने उसका परिचय रूसी जासूस पाल स्मिथ (Paul Smith) से कराया जो एमत्रोंग कार्पोरेशन नामकः रूसी व्यावसायिक संस्था के प्रतिनिधि के लबादे में अमरीका में रूस के लिए औद्योगिक जासूसी कर रहा था। स्मिथ ने एक दिन गोल्ड से कहा कि तुम इथाइल अल्कोहल बनाने के नए तरीके के बारे में रहस्यों का पता लगाओ। गोल्ड इस काम में तो सफल न हो सका पर उसने लैनोलीन साबुन तथा कुछ और रासायनिक वस्तुओं के सूत्र (formulae) स्मिथ को दिए। स्मिथ ने खुश होकर गोल्ड से कहा कि तुम सिनसिनाटी के जेवियर विश्वविद्यालय में रसायनशास्त्र का उच्चतर अध्ययन करो, तुम्हारा सारा खर्च रूस उठाएगा। पढ़ाई खत्म करके गोल्ड फिलाडेल्फिया के हृदय संबंधी अनुसंधान केंद्र की जैविक प्रयोगशाला का अध्यक्ष बना। यहां पहुंचकर उसे क्लाउस फुश के साथ संपर्क करने और रहस्यों को रूस पहुंचाने का काम सौंपा गया।

इसके बाद फुश को लौस अलामौस की परमाणु निर्माणशाला में भेज दिया गया और करीब एक साल तक गोल्ड से उसकी मुलाकात नहीं हो सकी। लेकिन उसके पास रूस भेजने के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण रहस्य इकट्ठे हो गए थे,अतः उसने गोल्ड को पत्र लिखकर उसके साथ मिलने का समय और स्थान तय किया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जून, 1945 के पहले शनिवार को गोल्ड शिकागो से अल्बुकर्क (Albuquerque) तक रेलगाड़ी से और वहां से बस पकड़कर सांटा फे (Santa Fe) पहुंचा। लोगों से रास्ता न पूछना पड़े, इस ख्याल से गोल्ड अपने साथ सड़क का नक्शा लेता गया और उसकी मदद से कास्टिलो स्ट्रीट ब्रिज (Castillo Street Bridge) के निश्चित स्थल पर पहुंचा, जहां पर फुश के साथ उसकी मुलाकात हुई।

फुश ने गोल्ड को कुछ नए एटमी रहस्य दिये और बताया कि लौस अलामौस में काफी जोर-शोर से काम हो रहा है, फिर भी इतनी जल्दी शायद ही बम बन पाए कि उसका प्रयोग जापान के ऊपर किया जा सके। उसका यह अनुमान गलत निकला। दो महीने बाद ही 7 और 9 अगस्त को हिरोशिमा (Hiroshima) और नागासाकी (Nagasaki) पर बम गिराकर अमरीका ने जापान को आत्मसमर्पण के लिए मजबूर कर दिया।

19 सितंबर को (हिरोशिमा और नागासाकी की दुर्घटना के बाद) वे दूसरी बार मिले। इस बार फुश ने अमरीका के तब तक के परमाणु शक्ति सूत्र और रहस्य एक पैकेट में रखकर गोल्ड को थमा दिए। इन्हीं सूचनाओं के आधार पर रूस एटम बम बनाने में सफल हुआ।

गिरफ्तारी के बाद अपने मुकदमे के दौरान उसने ओल्ड बेली (Old Bailey) अदालत के सामने कहा, ''जब मैंने अमरीका की प्रयोगशाला में अपने काम की सही प्रकृति को समझा तो मैंने उसके परिणामों के बारे में रूस को सूचित करने का फैसला कर लिया और कम्युनिस्ट पार्टी के एक सदस्य के माध्यम से रूसियों के साथ संपर्क स्थापित किया। उस समय से उनके साथ मेरा संपर्क लगातार बना रहा है। मैं उन लोगों की बाबत इसके सिवाय और कुछ भी नहीं जानता कि मैं उन्हें जो भी जानकारी दूंगा, उसे वे रूस पहुंचा देंगे। मैंने यह काम संसार में शांति स्थापना और उसकी स्थायी सुरक्षा के लिए आवश्यक शक्ति संतुलन के लिए किया है।''

इंग्लैंड के अटार्नी जनरल सर हार्टले शा क्रास ने न्यायालय से कहा कि फुश एक कम्युनिस्ट है और इस व्यक्ति के कामों को जानने के लिए सिर्फ इतना ही जानना काफी है। फुश के वकील ने कहा कि उसका व्यक्तित्व विभाजित है, उसका आधा भाग ब्रिटेन के प्रति निष्ठावान है और आधा कम्युनिज्म के प्रति।

मुख्य न्यायाधीश लार्ड गोडार्ड (Lord Goddard) का कहना था, ''इस सब दार्शनिक चर्चा से मैं कुछ भी नहीं समझ पा रहा हूं। मेरा विचार है कि मुझे यह सब समझने की कोशिश भी नहीं करनी चाहिए'' उन्होंने फुश को 14 वर्ष की सजा सुनाई। उन्होंने फुश से कहा, ''तुमने हमारे देश और महान अमरीकी गणराज्य के बीच मधुर रिश्तों के लिए खतरा पैदा कर दिया है। अमरीका हमारा दोस्त है। अपने इस आचरण से तुमने शरण पाने के उस अधिकार को भी खतरे में डाल दिया है, जिसे हमारा देश अभी तक मान्यता देता रहा है। क्या हम उन राजनैतिक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शरणार्थियों को शरण देने का साहस फिर कर पाएंगे, जो इस देशद्रोही सिद्धांत में विश्वास रखते हैं और अपने रक्षक के ही हाथ काटने के लिए भेस बदलकर हमारे यहां आना चाहते हैं?''

नौ साल की सजा भुगतने के बाद फुश जेल से छूट गया। हवाई जहाज द्वारा उसे पूर्वी जर्मनी भेज दिया गया। वहां फुश का स्वागत एक हीरो की तरह हुआ तथा उसे ड्रेस्डेन (Dresden) के पास रोजेनडॉर्फ (Rossendorf) के केंद्रीय एटमी भौतिकी संस्थान का महानिदेशक बना दिया गया। फुश का इरादा जो भी रहा हो, पर उसकी मदद के कारण सोवियत संघ ने एटमी ताकत हासिल करने के काम में तीन से सात साल तक की बचत कर ली।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जूलियस रोजेनबर्ग
(Julius Rosenberg)

जिसको दिया गया मृत्यु-दंड आज तक विवादास्पद है

रोजेनबर्ग का दावा था कि उसे झूठे आरोप में फंसाकर मृत्यु-दंड दिया गया है, जबकि एफ.बी.आई. खम ठोक कर कहती थी कि अमरीका से एटमी रहस्यों को सोवियत संघ भेजने वाले जासूस गिरोह में रोजेनबर्ग की केन्द्रीय भूमिका थी। एफ.बी.आई. अपने जरियों से इस निष्कर्ष पर पहुंची थी कि रूसी सीक्रेट सर्विस के मुखिया लावरेंती बेरिया (Lavrenti Beria) ने रोजेनबर्ग को खुद इस काम के लिए चुना था।

जूलियस रोजेनबर्ग और उसकी पत्नी ईथल रोजेनबर्ग (Ethel Rosenberg) को जासूसी के आरोप में 35 साल पहले दिया गया मृत्यु-दंड अमरीका में आज तक विवाद का विषय बना हुआ है। एफ.बी.आई. का कहना था कि रोजेनबर्ग दम्पत्ति ने अपने संबंधी डेविड ग्रीनग्लास (David Greenglass), उसकी पत्नी रूथ (Ruth), एलिजाबेथ बेंटले (Elizabeth Bentley), हैरी गोल्ड (Harry Gold), क्लाउस फुश (Klaus Fuchs) और रूसी दूतावास के अधिकारी अनातोली याकोवलेव (Antoli Yakovlev) के साथ मिलकर अमरीकी एटम बम के रहस्य चुराकर रूस को देने की गद्दारी की थी। रोजेनबर्ग डेविड ग्रीनग्लास का बहनोई था पर उसी की गवाही के आधार पर ही अदालत ने रोजेनबर्ग को अपराधी माना था। उधर रोजेनबर्ग का आखिर तक कहना था कि वे अमरीकी फासीवाद (American Fascism) के पहले शिकार हैं और उन्हें बेहद गंदे तरीके से फंसाया गया है और वे बेकसूर हैं।

यह उस जमाने की बात है जब अमरीका में थोड़ा भी वामपंथी और रेडीकल विचारधारा का होना एक अक्षम्य अपराध माना जाता था। एक ओर सीनेटर मैकार्थी (McCarthy) जैसे लोग गैर अमरीकी गतिविधियों के लिए बनी सीनेट कमेटी (Senate Committee) के जरिए और दूसरी ओर एफ.बी.आई. के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जूलियस रोजेनबर्ग

प्रधान जे. एडगर हूवर (J. Edgar Hoover) ऐसे लोगों की खोज-खोजकर पकड़-धकड़ कर रहे थे और जो भी ठीक-ठीक इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे पाता था कि "क्या तुम अब या कभी कम्युनिस्ट थे"—उसकी शामत आ जाती थी। इन हालात में रोजेनबर्ग की आवाज नक्करखाने में तूती की तरह किसी को भी सुनाई नहीं दी। एफ.बी.आई. का दावा था कि मुकदमे के दौरान जेल में कार चोर के रूप में अपना मुखबिर भेज कर उसने रोजेनबर्ग से सब कुछ उगलवा लिया था। बहुत से अमरीकी अभी तक यह मानते हैं कि रोजेनबर्ग भले ही दोषी हो पर उसकी पत्नी ईथल को तो जासूसी के बारे में कुछ भी पता नहीं था। फिर भी ईथल को रोजेनबर्ग पर दबाव डालने के उद्देश्य से गिरफ्तार करके मृत्यु-दंड दे दिया गया। यह अलग

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बात है कि इससे एफ.बी.आई. को रत्ती भर भी फायदा नहीं हुआ था। रोजेनबर्ग ने पूरे मुकदमे के दौरान एक बार भी कबूल नहीं किया कि उसने एटमी जासूसी की है।

जिस समय अमरीकी सेनाएं प्रशांत महासागर में जापानी समुद्री बेडे का सामना कर रही थीं, ठीक उसी समय रोजेनबर्ग आर्मी सिगनल कोर (Army Signal Corps) के ब्रुकलिन सप्लाई कार्यालय में सहायक इंजीनियर के पद पर काम कर रहा था। सन् 1943 में वह इंजीनियर इंस्पेक्टर बन गया। एफ.बी.आई. का दावा है कि सन् 1944 में उसने रूस के लिए जासूसी करनी आरम्भ कर दी थी।

सन् 1945 में जब सरकार को यह पता चला कि जूलियस रोजेनबर्ग कट्टर साम्यवादी रहा है तो उसने उसकी सेना से छुट्टी कर दी। वहां से हटते ही उसे इमरसन रेडियो कंपनी (Emerson Radio Company) में नौकरी मिल गई। रूसी सीक्रेट सर्विस के अध्यक्ष लावरेंती बेरिया ने रोजेनबर्ग को अमरीका के एटमी रहस्य उड़ाकर रूस भेजने के लिए चुना। उन्हीं दिनों रोजेनबर्ग का साला डेविड ग्रीनग्लास शादी करके सेना में भर्ती हो गया था और कुछ समय बाद ही लॉस अलामौस (Los Alamos) की एटम निर्माणशाला में मशीनमैन का काम करने के लिए भेज दिया गया था। डेविड को इतना तो मालूम था कि उस कारखाने में कोई अत्यन्त गोपनीय चीज तैयार की जाती है लेकिन उसे यह अनुमान न था कि वहां अमरीका के लिए परमाणु बम तैयार किया जा रहा है।

डेविड अपनी पत्नी रूथ को साथ नहीं ले गया था। वह न्यूयार्क में ही रही। रोजेनबर्ग दम्पत्ति अक्सर रूथ से मिलने आते। एक मुलाकात में रूथ ने उन्हें डेविड की नई नौकरी के बारे में जानकारी दी। इस समाचार को सुनते ही रोजेनबर्ग की बांछें खिल गईं। उसने अपने जासूसी संपर्कों के आधार पर यह बात पहले से ही मालूम कर रखी थी कि लॉस अलामौस में परमाणु बम तैयार किये जाते हैं।

अब रोजेनबर्ग ने नित नए तरीकों से रूथ पर दबाव डालना शुरू किया कि तुम लॉस अलामौस जाकर डेविड ग्रीनग्लास से एटम बम के रहस्य लाकर दो। रूथ न साम्यवाद का अर्थ समझती थी न रूस के प्रति उसके मन में कोई हमदर्दी ही थी। अब रोजेनबर्ग ने नया हथकंडा अपनाया। उसने रूथ का मनोबल तोड़ने के लिए उसके हाथ पर 150 डॉलर रख दिए और उससे कहा कि जाओ तुम अपने पति से मिल आओ।

डेविड ने पहले तो रोजेनबर्ग का प्रस्ताव ठुकरा दिया पर वह भी एक जमाने में कोम्सोमोल यानी तरुण कम्युनिस्ट लीग का सदस्य रह चुका था इसलिए वह अपने बहनोई के आग्रह की ज्यादा देर तक उपेक्षा न कर सका। उसने रूथ के द्वारा यह जानकारी भेजी कि आजकल प्रख्यात परमाणु विज्ञानी डा. नील्स बोहर लॉस अलामौस में निकोलस बेकर के नाम से काम कर रहे हैं। रूस के लिए यह जानकारी महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुई।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इसी बीच खाना बनाते वक्त रूथ के गाउन में आग लग गयी और उसके शरीर का काफी भाग बुरी तरह से झुलस गया। उसे अस्पताल में भर्ती होना पड़ा।

रूथ को अस्पताल से लौटे अभी दो दिन ही हुए थे कि 18 मई को रोजेनबर्ग उनके घर आया। उसके हाथ में अखबार था, जिसके मुखपृष्ठ पर ही हेरी गोल्ड उर्फ रेमंड (Raymond) का फोटो छपा था। उसे गिरफ्तार कर लिया गया था। वह समाचार दिखाकर रोजेनबर्ग ने डेविड और रूथ को समझाया कि बस यह आखिरी कड़ी है, अगर तुम फौरन देश से नहीं भागे तो पकड़ लिए जाओगे।

डेविड भागने के लिए तैयार हो गया। रोजेनबर्ग ने उसे एक हजार डॉलर दिए और कहा कि तुम अपने, रूथ और दोनों बच्चों के चित्र खिचवा कर उनकी पांच-पांच प्रतियां करा लो और टीके का प्रमाणपत्र ले लो। बाकी काम पूरा करा दिया जाएगा। पासपोर्ट मिलते ही तुम लोगों को मैक्सिको जाना होगा, जहां से तुम रूसी राजदूत के सचिव को पत्र लिखोगे और एक गाइड बुक में आंखें गड़ाए प्लाजा द कोलोन में क्रिस्टोफर कोलंबस की प्रतिमा के सामने खड़े हो जाओगे। वहां तुम्हें एक व्यक्ति मिलेगा जो आगे की यात्रा के लिए पासपोर्ट और रकम का बंदोबस्त कर देगा।

फरार होने की यह योजना रूथ के गले नहीं उतरी। उसने डेविड को रोक लिया। 15 जून को एफ.बी.आई. के एजेंटों ने डेविड के घर धावा बोला। डेविड ने उन्हें सब कुछ सच-सच बता दिया। अगले दिन ही एफ.बी.आई. के जासूस न्यूयार्क के पास निकाबोकर गांव पहुंचे, जहां रोजेनबर्ग रहता था। रोजेनबर्ग से कहा गया, ''तुम्हारे साले ने हमें बताया है कि तुमने उससे रूस की खातिर एटमी रहस्य मांगे थे।'' रोजेनबर्ग ने साफ इनकार करते हुए जवाब दिया—''क्या यह बात वह मेरे सामने कह सकता है? यदि डेविड मेरे बारे में इस तरह की बात कहेगा तो मैं उसके मुंह पर उसे झूठा कहूंगा। मुझे जाने दो। मैं अपने वकील से सलाह लेना चाहता हूं।'' इसके बाद रोजेनबर्ग अपने वकील से मिलने चला गया।

अब रोजेनबर्ग दम्पत्ति को देश छोड़कर भागने की सूझी। उन्होंने अपने तथा दोनों बच्चों के 36 चित्र खिंचवाए, लेकिन इससे पहले कि वे फरार हो पाते पुलिस ने अमरीका के परमाणविक रहस्यों की चोरी करने के आरोप में 17 जुलाई को रोजेनबर्ग दम्पत्ति को गिरफ्तार कर लिया। लेकिन वे दोनों पूरी तरह खामोश रहे। उनका साथी इलेक्ट्रिकल इंजीनियर और राडार विशेषज्ञ मोर्टन सोबेल (Morton Sobell) भी पकड़ा गया। वह जान बचाने के लिए उसी मार्ग से भाग रहा था जो रोजेनबर्ग ने डेविड को सुझाया था।

मुकदमा चला। 29 मार्च, 1953 को सजाएं सुनाई गई। डेविड ग्रीनग्लास को 15 वर्ष और सोबेल को 30 वर्ष का कठोर कारावास दिया गया। रोजेनबर्ग दम्पत्ति को 5 अप्रैल को मृत्यु-दंड सुनाया गया। उन्होंने इस सजा के विरुद्ध सात बार अपील न्यायालय में अपील की और सात बार सर्वोच्च न्यायालय में लेकिन परिणाम कुछ न निकला। उन्होंने दो राष्ट्रपतियों से तीन बार दया की याचिकाएं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कीं, अंततः राष्ट्रपति आइजनहावर (Eisenhower) ने उन्हें सूचित किया कि अगर तुम लोग इस षड्यंत्र के बारे में मुझे सच-सच बातें बता दोगे तो मैं मृत्यु-दंड को आजीवन कारावास में बदल दूंगा। उनके आदेश पर सिंग-सिंग (Sing-Sing) जेल में रोजेनबर्ग दम्पत्ति के कमरों और राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति के सोने के कमरे के बीच हर समय टेलीफोन लाइन चालू रखी गयी। जिससे यदि रोजेनबर्ग चाहें तो राष्ट्रपति से बात कर सकें। संसार के अनेक धार्मिक नेताओं, पोप आदि ने उनके लिए याचना की। उनसे बार-बार सब कुछ कबूल करने को कहा गया। लेकिन उन्होंने अंत तक अपने होंठ नहीं खोले। वे एक दूसरे को भी जो पत्र लिखते उनमें भी मौन रहने का ही निर्देश होता। वे हमेशा एक ही वाक्य दोहराते "कहने को कुछ है ही नहीं।" 19 जून को ठीक उनके विवाह की चौदहवीं वर्षगांठ के दिन जूलियस और ईथल रोजेनबर्ग को सिंग-सिंग जेल में ही बिजली की कुर्सियों पर बैठाकर मृत्यु-दंड दे दिया गया। रोजेनेबर्ग ने न तो यह माना कि उन्होंने एटमी जासूसी की और न यह कि वह कभी कम्युनिस्ट भी था। पर उसने यह जरूर स्वीकार किया कि सोवियत संघ ने हिटलर को खत्म करने में काफी बड़ी भूमिका निबाही है। हिटलर ने 60 लाख यहूदियों की हत्या की थी। रोजेनबर्ग भी यहूदी था इसलिए भावनात्मक रूप से रूस की तरफ उसका झुकाव होना स्वाभाविक ही था। जो भी हो उसको मिला मृत्यु-दंड हमेशा विवादास्पद बना रहेगा। ■■

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जे. एडगर हूवर
(J. Edgar Hoover)

जिन्होंने लगातार 50 वर्ष तक एफ.बी.आई. का नेतृत्व किया

एक बेताज बादशाह की तरह एफ.बी.आई. पर राज करने वाले जे. एडगर हूवर ने जब केवल 29 वर्ष की आयु में एफ.बी.आई. का नेतृत्व संभाला था, तब यह एजेंसी बुरी तरह से टूटी हुई अपने अस्तित्व तक के लिए जूझ रही थी। ऐसे समय में हूवर ने अपने सशक्त नेतृत्व के बल पर बुरी तरह से टूटी हुई इस एजेंसी को न केवल सहारा देकर खड़ा किया बल्कि जल्दी ही उसे राजनीतिक कुचक्र से निकालकर संगठित गिरोहों तथा अपराधों से निपटने वाली एक ऐसी एजेंसी के रूप में स्थापित कर दिया, जिसके नाम से ही बड़े-बड़े अपराधी कांपने लगे। शीत-युद्ध के दौरान उन्होंने अमरीका को विदेशी जासूसों से मुक्त रखने की भी भरपूर कोशिश की। उनकी छवि कुछ ऐसे रूप में स्थापित हो गई कि उनके बिना एफ.बी.आई. के अस्तित्व की कल्पना मात्र करना भी असंभव सा प्रतीत होने लगा....

अमरीका की मशहूर खुफिया एजेंसी एफ.बी.आई. यानी फेडरल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टीगेशन (Federal Bureau of Investigation) को मौजूदा रूप देने का श्रेय जे. एडगर हूवर के सफल नेतृत्व को जाता है। हूवर ने एफ.बी.आई. का इस्तेमाल न सिर्फ अपराधियो के खिलाफ किया बल्कि अमरीका को विदेशी जासूसों से मुक्त कराने के लिए भी इसका एक कारगर हथियार के रूप में प्रयोग किया।

हूवर ने लगभग आधी शताब्दी तक सफलतापूर्वक एफ.बी.आई. का नेतृत्व किया। केवल 29 साल की आयु में जब हूवर के मजबूत कंधों पर एफ.बी.आई. के नेतृत्व का भारी बोझ डाला गया तब एजेंसी के सामने अपने अस्तित्व की रक्षा करने का विकट प्रश्न एक हौवे की तरह खड़ा था। एफ.बी.आई. राजनीतिक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

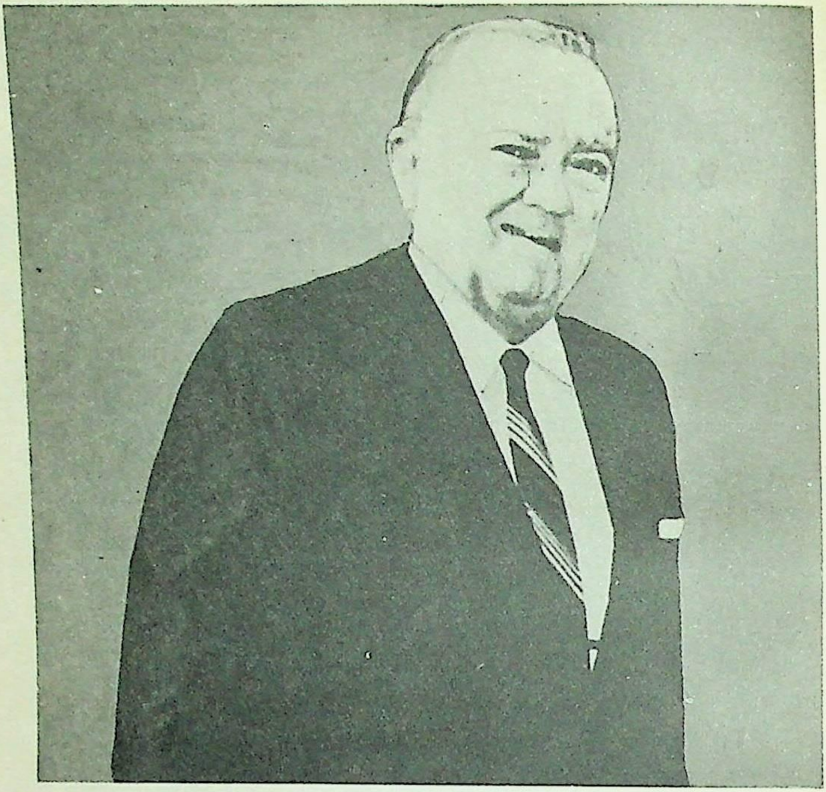

जे. एडगर हूवर

कुचक्र में बुरी तरह फंसी हुई, छटपटाकर शिकंजा तोड़ देना चाहती थी। उसके मूल संगठन में भी क्रांतिकारी परिवर्तन किए जाने की घोर आवश्यकता थी। शीघ्र ही हूवर ने एक खेले हुए खिलाड़ी की तरह जबरदस्त प्रशासनिक योग्यता तथा अप्रतिम सूझबूझ तथा दूरदर्शिता का परिचय देते हुए एजेंसी को गिरे हुए मनोबल की गर्त से बाहर निकाला तथा यह सिद्ध कर दिखाया कि सचमुच ही एजेंसी के लिए मुखिया के पद पर उनका अवतरण मानों एक अवतार के रूप में हुआ है। उन्होंने ''सार-सार को गहि रहे, थोथा दियो उड़ाए'' की उक्ति को पूर्णतया चरितार्थ करते हुए गजब की परिपक्वता तथा विवेक का परिचय देते हुए न केवल अक्षम अधिकारियों को निकाल बाहर फेंका अपितु योग्य व्यक्तियों को शानदार तरक्की भी प्रदान की। इससे एजेंसी के एजेंटों का मनोबल बढ़ा तथा एक नए उत्साह के साथ एजेंसी दिन-दूनी रात-चौगुनी तरक्की करने लगी।

शीघ्र ही हूवर ने अपनी अप्रतिम योग्यता तथा कार्य के प्रति धर्म के समान निष्ठा रखने की प्रवृत्ति के बल पर इतनी लोकप्रियता तथा सफलता प्राप्त की कि उनके बिना एफ.बी.आई. के अस्तित्व की ही कल्पना करना नितांत असंभव प्रतीत

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

होने लगा। एक के बाद एक नए-नए राष्ट्रपति आते-जाते रहे, परन्तु हूवर एक शिला की भांति अपने पद पर अडिग रहे।

सन् 1930 के दशक में एफ.बी.आई. ठांय-ठांय करती, संगठित गिरोहें तथा अपराधों से निपटने वाली एजेंसी के रूप में मशहूर हो गई।

अवैध शराब का धंधा करने वाले गिरोहें तथा विशाल जुआघरों के संचालकों, जिन्हें अपराधों की दुनिया में ''डॉन्स'' (Dons) कहा जाता है, से निपटने के लिए हूवर ने अपने एजेंटों को विशेष प्रशिक्षण तथा अत्याधुनिक हथियारों से लैस किया। अपने शराब-बंदी के इस अभियान के दौरान एफ.बी.आई. के एजेंट 'जी. मेन' (G Man) यानी 'सरकारी आदमी' के नाम से मशहूर हो गए थे। वे न तो बदमाशों से हथियारबंद मुठभेड़ करने में कतराते और न अदालत में सफाई के वकीलों की जिरह से घबराते। इसके साथ-साथ एफ.बी.आई. ने प्रतिजासूसी का काम भी अपने जिम्मे ले रखा था। हूवर ने अमरीका से जर्मन जासूसों का सफाया करने का जोरदार अभियान शुरू किया। इस काम में भी उनका तरीका बिलकुल वही था जो उन दिनों अपराधी गिरोहों के खिलाफ इस्तेमाल किया जा रहा था। हूवर विदेशी जासूसों की फाइलें बनाते और उनके खिलाफ पुख्ता सबूतों सहित अदालती मुकदमे तैयार करते ताकि उन्हें शीघ्रातिशीघ्र सजा दिलवाई जा सके। यह तरीका हमेशा अच्छे नतीजे नहीं देता था। शुरुआत में जब अमरीका खुलेआम युद्ध में नहीं कूदा था, एफ.बी.आई. को प्रतिजासूसी के काम में बहुत परेशानी हुई। क्योंकि सारे काम को बहुत गोपनीय तरीके से किए जाने की आवश्यकता थी। जबकि एफ.बी.आई. सूचनाओं का विश्लेषण करने वाली सीक्रेट सर्विस न होकर जांच करने वाली एजेंसी भर थी और तिस पर हूवर के धर-पकड़ और कोर्टबाजी के चक्कर फौरन हर बात को प्रकाश में ला देते थे।

इन सीमाओं के दायरे में भी हूवर ने अपना काम बखूबी करना जारी रखा। सन् 1940 में उन्होंने ब्रिटिश सिक्यूरिटी कोऑर्डीनेशन (British Security Coordination) के मुखिया विलियम स्टीफेंसन (William Stephenson) के साथ मिलकर काम करना शुरू किया। इस संगठन का दफ्तर न्यूयार्क के राकफेलर प्लाजा (Rockefeller Plaza) में था। इसमें लगभग दो हजार लोग काम करते थे। चर्चिल (Churchill) और रूजवेल्ट (Roosevelt) इस बात के लिए तैयार हो गए थे कि ब्रिटिश और अमरीकी जासूस नाजी एजेंटों को पकड़ने के लिए एक दूसरे की भरपूर मदद करेंगे।

इस सहयोग के कई फायदे हुए पर दिक्कत यह आई कि हूवर के पुलिसिया तौर-तरीके कभी भी ब्रिटिश सीक्रेट एजेंट स्वीकार नहीं कर पाए। अंग्रेजों का कहना था कि अगर किसी पर विदेशी जासूस होने का शक होता है तो उसे तुरन्त गिरफ्तार करने की बजाय उस पर निगरानी रखी जानी चाहिए ताकि सही मौके का इंतजार कर उसके जरिए विदेशी जासूसों के पूरे जाल को छिन्न-भिन्न किया

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जा सके। इसके बावजूद हूवर ने ही पहली बार ब्रिटिश सीक्रेट सर्विस में मैकलीन (Maclean), बर्गेस (Burgess) और फिल्बी (Philby) की गद्दारी को सूंघा। हूवर की हमेशा पूरी कोशिश होती कि ज्यादा से ज्यादा विदेशी जासूस पकड़ कर अदालतों में पेश किए जाएं और उन्हें फौरन सजा हो जिससे एफ.बी.आई. का नाम रोशन हो सके। हूवर को डबल एजेंटों से सख्त चिढ़ थी। शायद इसीलिए उन्होंने जर्मनों और अंग्रेजों के लिए एकसाथ काम कर रहे डबल एजेंट डस्को पोपोव (Dusko Popov) की इस सूचना पर विश्वास नहीं किया कि जापानी पर्ल हार्बर (Pearl Harbour) पर हमला करने वाले हैं। पर्ल हार्बर की घटना से सबक सीखकर ही अमरीकी सरकार ने विलियम दोनोवान (William Donovan) के नेतृत्व में ओ.एस.एस. (O.S.S.) का संगठन बनाया जो बाद में सी.आई.ए. के रूप में परिवर्तित हो गया। हूवर ने ओ.एस.एस. के निर्माण का जमकर विरोध किया। उन्हें लगता था कि इससे एफ.बी.आई. के अधिकार कम हो जाएंगे। इस चक्कर में हूवर की ब्रिटिश कोऑर्डीनेशन के मुखिया स्टीफेंसन से भी बिगड़ गई। हूवर ने ब्रिटिश सीक्रेट एजेंटों को अमरीका में मिलने वाली सुविधाओं पर रोक लगा दी।

हूवर ने एक पत्रिका में लेख लिखकर दावा किया कि सबसे पहले एफ.बी.आई. ने ही 'माइक्रोडॉट' (Microdot) के रहस्य का पता लगाया था। असलियत यह थी कि जर्मनों ने डस्को पोपोव को पहली बार माइक्रोडॉट के जरिए संदेश भेजने की प्रणाली का इस्तेमाल करने की इजाजत दी थी। पोपोव ने ही यह जानकारी मित्र राष्ट्रों के हवाले की थी। पर्ल हार्बर की घटना और माइक्रोडॉट के मुद्दे को लेकर पोपोव ने हूवर की जो आलोचना की उसका जवाब वे आखिर तक नहीं दे सके।

शीत युद्ध के जमाने में हूवर को पूरा यकीन हो चला था कि अमरीकी वामपंथी सोवियत संघ के एजेंट हैं। नागरिक अधिकार संगठनों, युद्ध विरोधी संगठनों और वामपंथी संगठनों का दमन करने के लिए हूवर ने 'कोइनटेलप्रो' (Cointelpro) नामक प्रतिजासूसी कार्यक्रम चलाया। इसमें इन संगठनों के टेलीफोन टेप करने से लेकर उनके कागजातों की चोरी करने तक का काम शामिल था। इन हरकतों के कारण जे. एडगर हूवर का नाम अमरीका के उदारतावादियों की सूची में जनता के शत्रु नं. एक के रूप में दर्ज हो गया। इसके बावजूद हूवर प्रतिजासूसी के काम में पूरे उत्साह से लगे रहे।

एफ.बी.आई. की खराब होती छवि देखकर और जनता के बीच बढ़ते विरोध के कारण सन् 1971 में हूवर को प्रतिजासूसी का यह काम बंद कर देना पड़ा। अपने जीवन के अंतिम दिनों में हूवर ने एफ.बी.आई. को वाटरगेट कांड (Watergate Scandle) में उलझने से बचाया। सन् 1972 में उनकी मृत्यु हो गई। ■■

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वोल्फगैंग लोत्ज
(Wolfgang Lotz)

इजराइल का जासूस नं. 1

इजराइल से सन् 1967 में मिस्र को छह दिनों के युद्ध में बुरी तरह से मुंह की खानी पड़ी थी। इस युद्ध में इजराइल को भारी जीत दिलाने में केवल उसके सैनिक तथा आधुनिक हथियार ही काम नहीं आए थे—इसमें उस्तरे की धार के समान तेज वोल्फगैंग लोत्ज की जासूसी ने बड़ी निर्णायक भूमिका निभाई थी। लोत्ज ने एक भूतपूर्व नाजी अधिकारी का रूप धरकर मिस्र में घुसपैठ की तथा चार साल तक अपने व्यक्तित्व के बल पर तथा अपनी "शैम्पेन पार्टियों" के द्वारा मिस्री सैनिक अधिकारियों को पटाकर ढेरों गुप्त सूचनाएं प्राप्त कीं। वह पूरे विश्व में "शैम्पेन स्पाई" (Champagne Spy) के नाम से मशहूर है।

वोल्फगैंग लोत्ज का असली नाम जीव लोत्ज था। उसके माता-पिता अभिनय के पेशे से जुड़े थे। सन् 1933 में पिता की मृत्यु के बाद लोत्ज की मां फिलिस्तीन जाकर रहने लगी। जब लोत्ज को जासूसी का पहला काम मिला, उस समय उसकी उम्र मात्र 16 वर्ष की थी। बाद में वह तरक्की करता हुआ सेना में मेजर के पद तक पहुंचा। पर लोत्ज की असली उपलब्धि काहिरा में मिस्र के फौजी रहस्यों का पता लगाना था।

लोत्ज एक अत्यन्त चुस्त घुड़सवार था और महायुद्ध में अंग्रेज सेना की यहूदी टुकड़ी में बहादुरी से लड़ा था। वह मिस्र में भी चार साल तक रहा था और धाराप्रवाह अरबी बोलता था। सन् 1956 के युद्ध में वह इजराइल के लिए जासूसी करता रहा था।

मिस्र में जासूसी करने के लिए यह बहुत जरूरी था कि लोत्ज खुद को यहूदी विरोधी और एक कट्टर नाजी समर्थक के रूप में पेश करे। कुछ ही दिनों बाद जीव लोत्ज, वोल्फगैंग लोत्ज के नाम से पश्चिम बर्लिन के शरणार्थी शिविर में पहुंच

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

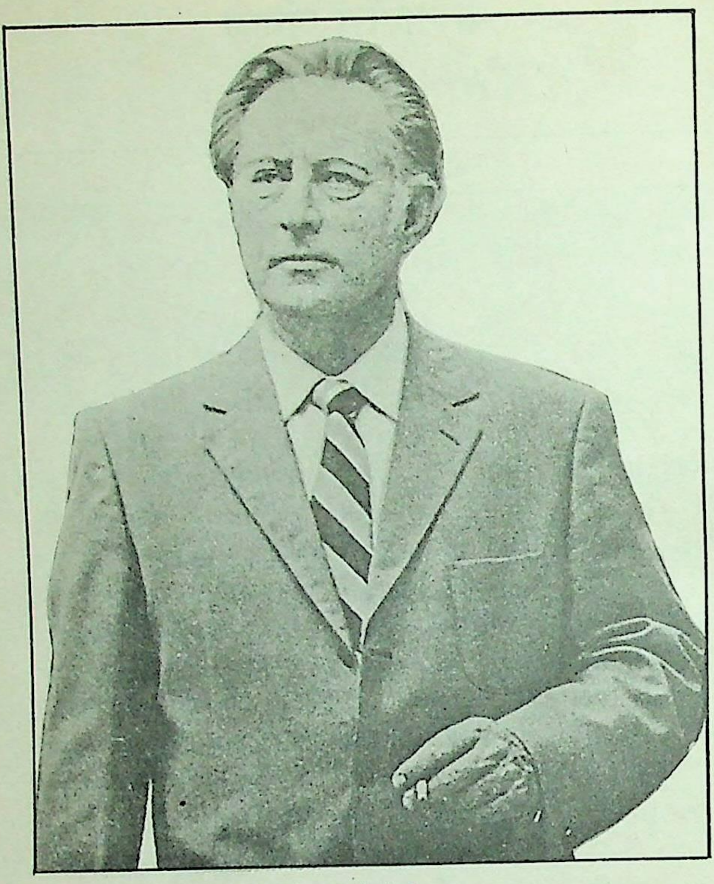

वोल्फगैंग लोत्ज

चुका था। उसने मैरीन शील्ड शिविर में पूर्वी जर्मनी से भागकर आए भूतपूर्व नाजी अधिकारी का नाटक खेला। सभी कानूनी कार्रवाइयों के बाद उसे पश्चिम जर्मनी के खुफिया विभाग गेहलन संगठन के सुपुर्द किया गया, जहां उसे ऐसे नकली दस्तावेज दिए गए, जिनसे यह सिद्ध होता था कि वह लीबिया में रोमेल (Rommel) की अफ्रीका कोर (Africa Corps) की 15वीं डिवीजन से कप्तान के रूप में लड़ा था। इसी डिवीजन के दो भूतपूर्व अधिकारियों ने लोत्ज को इस डिवीजन से संबंधित सभी किस्से अच्छी तरह से रटा दिए थे।

सन् 1961 में लोत्ज काहिरा पहुंच गया। स्थानीय जर्मन समाज ने उसका खुली बाहों से स्वागत किया। अपने कथित नाजीवाद और जर्मनों के लिए लड़ने के कारण शीघ्र ही वह केवलरी क्लब (Cavalry Club) का सर्वाधिक लोकप्रिय सदस्य बन गया। किन्तु एक बार उसका सामना एक ऐसे भूतपूर्व नाजी से हो गया,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जो वास्तव में रोमेल की अफ्रीका कोर से लड़ा था। यहां भी गेहलन संगठन का प्रशिक्षण उसे आराम से बचा ले गया। उसने अपने बारे में फैला रखा था कि युद्ध के बाद वह आस्ट्रिया में व्यापार करता रहा था।

लोत्ज ने कुछ दिनों के अंदर ही मिस्री सैनिक अधिकारियों को अच्छी तरह से पटा लिया। उसने एक घुड़सवारी स्कूल खोल रखा था। नासिर (Nasser) के सभी मुख्य सैनिक अधिकारी उसके शिष्य थे। किसी भी मिस्री अधिकारी ने लोत्ज के दर्जनों कैमरों और ट्रांसमीटरों पर शक नहीं किया क्योंकि उसने प्रसिद्ध कर रखा था कि उसे फोटोग्राफी और जर्मन संगीत सुनने का बेहद शौक है। लोत्ज आए दिन दावतें देता और मिस्री सैनिक अधिकारियों को पूरी तरह से शैंपेन में डुबो देता।

चार सालों तक लोत्ज अपनी जर्मन पत्नी के साथ काहिरा में मजे से गुलछर्रे उड़ाता रहा। यह भेद आज तक नहीं खुला कि उसकी पत्नी भी इस षड्यंत्र में शामिल थी या नहीं। वह अपने छोटे से ट्रांसमीटर पर इजराइल को सामरिक महत्त्व की अनेक गुप्त सूचनाएं लगातार पहुंचाता रहा। उसकी सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सूचनाएं रूसी मिसाइलों के बारे में थी। उसने तेल अबीव (Tel Aviv) को सूचित किया कि "रूसी मिसाइलों से डरने की कोई जरूरत नहीं है, क्योंकि उनकी मारकशक्ति अभी संदिग्ध है।" लोत्ज ने इसी दौरान यह भी बताया कि रूसी तकनीशियनों द्वारा संचालित शलूफ रॉकेट केन्द्र सर्वाधिक खतरनाक है। लोत्ज का अनुमान था कि स्वेज नहर पर ग्रेट बिटर लेक में स्थित यह अड्डा किसी भी इजराइली शहर को पलक झपकते ही खत्म कर सकता है।

लोत्ज ने अपना सबसे अजीज दोस्त जनरल उस्मान (Gen. Usman) को बना रखा था। इसका कारण यह था कि उस्मान वहां के सैनिक गुप्तचर विभाग का उपप्रमुख था। दोस्ती-दोस्ती में ही वह सभी सैनिक अड्डों पर लोत्ज को अपने साथ अक्सर घुमाने ले जाता था। उस्मान के साथ अपने इन गुप्त दौरों के दौरान हाथ लगी महत्त्वपूर्ण सैनिक सूचनाओं को लोत्ज इजराइल भेजता रहा। उसके दोस्तों में सैनिक अधिकारियों की सूची सबसे लम्बी थी। अब तक उसने अपने एजेंटों में मिस्री अधिकारियों के अतिरिक्त मोरक्कोवासी भी जोड़ लिए थे। इन्हीं दिनों लोत्ज की दोस्ती मिस्र स्थित गेहलन संगठन के जासूस गेहोद बुश (Gehod Bush) से हुई जो अलग से रूसियों के खिलाफ जासूसी कर रहा था। इसी के माध्यम से लोत्ज की पहचान दो भूतपूर्व नाजी अधिकारियों ए. ब्रुनर (A. Bruner) और डाक्टर एडोल्फ पिल्ज (Adolf Pilz) से हो गई, जो न्यूरंबर्ग मुकदमो से बचकर मिस्र में छिपे हुए थे। ब्रुनर अपने पुराने किस्से सुनाया करता था कि यहूदियों के हत्यारे आइखमैन (Eichmann) और उसमें कितनी गहरी दोस्ती थी। काहिरा में छिपे नाजियों में सर्वाधिक चर्चा का विषय आइखमैन पर इजराइल में चला मुकदमा था। इन बातों में पिल्ज अक्सर घमंड से अपने किस्से बखान करता था कि उसने किस-किस तरह से यहूदियों को मौत के घाट उतारा था।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

13 सितंबर, 1964 को ब्रुनर की बम से हत्या कर दी गई। यही प्रयास पिल्ज के साथ दोहराया गया। किस्मत से वह बच गया, पर उसकी सचिव पार्सल खोलते हुए विस्फोट से अंधी हो गई। यह सब कुछ बहुत सफाई से किया गया तथा लोत्ज पर किसी को लेशमात्र भी शक नहीं हुआ।

फरवरी, 1965 में पूर्वी जर्मनी के प्रधानमंत्री वाल्टर उलब्रेख्त मिस्र आने वाले थे। मिस्र वारसा संधि से संबंधित राष्ट्रों के काफी नजदीक आ चुका था। उनसे मिस्र ने कई समझौते किए थे। पूर्वी जर्मनी और चेकोस्लोवाकिया से उसे फौजी सहायता भी मिलने लगी थी। दूसरी ओर भूतपूर्व नाजी भी मिस्र की सहायता ले रहे थे। इसलिए तत्कालीन मिस्री पुलिस मंत्री योहद्दीन को पूरा अंदेशा था कि कहीं नाजी तत्त्व उलब्रेख्त की हत्या का प्रयास न करें। अत: मिस्री पुलिस ने सामान्य रूप से अनेक भूतपूर्व नाजियों के घर जाकर उनसे पूछताछ करनी शुरू कर दी।

जिस समय पुलिस लोत्ज के होलियो पोलिस स्थित बंगले पर पहुंची, उस समय वह कार्यवश बाहर गया हुआ था। नियमानुसार पुलिस ने उसके घर की सरसरी तौर पर तलाशी ली तो अचानक उनके हाथ गुप्तचरी के कुछ यंत्र लग गए। अब तलाशी कुछ ढंग से ली गयी। उसके घर से तीन ट्रांसमीटर, कोड पैड, माइक्रोफिल्में तथा सामरिक महत्त्व की जानकारियों के ढेरों दस्तावेज बरामद हुए। 22 फरवरी, 1965 को लोत्ज को स्वेज क्षेत्र से वापस आने पर गिरफ्तार कर लिया गया।

लेकिन गेहलन का प्रशिक्षण इन परिस्थितियों में भी लोत्ज के काम आया। उसने कड़ी पूछताछ के बावजूद यह कबूल नहीं किया कि वह यहूदी था। उसने गेहलन की बतायी एक और कहानी मिस्री अधिकारियों को सुना दी। उसने बताया कि वह पूर्व नाजी अधिकारी ही था, जो रोमेल की अफ्रीकन कोर में लड़ा था। आस्ट्रिया में वह इजराइली जासूसों की पकड़ में आ गया था। यहूदी उसे ब्लैकमेल कर रहे थे, यदि उसने उनके लिए काम नहीं किया, तो वे लोत्ज को युद्ध अपराधों के लिए गठित अदालत को सौंप देंगे। लोत्ज ने अपनी इस बात को स्थापित कर दिया और उसे फांसी नहीं हुई।

लोत्ज को 25 साल की सजा मिली। उसके कई साथियों को फांसी लगाई गई और अनेक नाजी अधिकारियों को मिस्र से निकाल दिया गया या गोली से उड़ा दिया गया। एक साल बाद ही सन् 1967 में मिस्र छह दिनों के युद्ध में इजराइल से बुरी तरह पिटा। अब मिस्र में 150 सैनिक अधिकारियों पर गद्दारी के मुकदमे चले। इनमें अधिक्रतर अधिकारी लोत्ज के दोस्त ही थे। लोत्ज के घनिष्ठ मित्र फील्ड मार्शल उमर ने आत्महत्या कर ली। एक साल बाद ही इजराइल और मिस्र में बंदियों की अदला-बदली हुई। पहले लोत्ज की पत्नी को इजराइल भेजा गया। फिर सन् 1968 के अंत में लोत्ज को नौ मिस्री जनरलों और चार हजार सैनिकों के बदले छोड़ दिया गया। इस प्रकार लोत्ज ने मात्र तीन साल ही जेल में गुजारे। ■■

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कारलो तुओमी
(Carlo Tuomi)

जिसके कारण के.जी.बी. की रहस्यमयी कार्यप्रणाली प्रकाश में आई

तुओमी कोई बहुत बड़ा जासूस न था। गरीबी और अंग्रेजी के ज्ञान के कारण वह के.जी.बी. की नौकरी पर मजबूर हुआ। तुओमी को अमरीका में जासूसी के लिए तैयार करने के लिए तीन साल तक मास्को में कठिन प्रशिक्षण दिया गया। एक शानदार कहानी गढ़कर उसे अमरीकन नागरिक सिद्ध कर दिया गया। पर के.जी.बी. की सारी मेहनत और चालाकी पर इस बार पानी फिर गया। एफ.बी.आई. ने तुओमी की असलियत को ताड़कर उसे चुपके से डबल एजेंट में बदल दिया....

कारलो रूडोल्फ तुओमी को के.जी.बी. ने शुरुआत में बहुत निचले स्तर की जासूसी करने के लिए भर्ती किया था। उसका काम उस स्कूल के अध्यापकों पर नजर रखना था, जिसमें वह अंग्रेजी पढ़ाता था। अंग्रेजी भाषा पर असाधारण अधिकार होने के कारण तुओमी को शीघ्र ही ज्यादा बड़ी जासूसी करने का मौका मिल गया। तुओमी को के.जी.बी. में लाने और प्रशिक्षण देकर अमरीका में जासूसी के लिए भेजने की दिलचस्प तथा अजीबो-गरीब कहानी दुनिया की सबसे बड़ी जासूसी संस्था के.जी.बी. की कार्यप्रणाली पर काफी हद तक रोशनी डालती है।

तुओमी अमरीका में पैदा हुआ था। पिता के देहान्त के बाद उसकी मां ने एक फिनलैंडवासी के साथ विवाह कर लिया था, जो एक कट्टर साम्यवादी था। सौतेले पिता ने उसके दिमाग में साम्यवाद के सिद्धांत ठूंस-ठूंसकर भर दिये। 16 साल की आयु में वह अमरीका के मिशीगन नगर से पिता के साथ रूस चला गया। मां और बहन का खर्चा चलाने की जिम्मेदारी अब तुओमी पर आ गयी। उसने लकड़हारे का मामूली धंधा शुरू किया। सन् 1939 में द्वितीय विश्व युद्ध छिड़ने पर तुओमी रूसी सेना में भर्ती हो गया। युद्ध समाप्त होने के बाद उसे पता चला कि उसकी बहन कहीं खो चुकी है और मां भूख से मर गई है। उसने अंग्रेजी का अध्यापक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

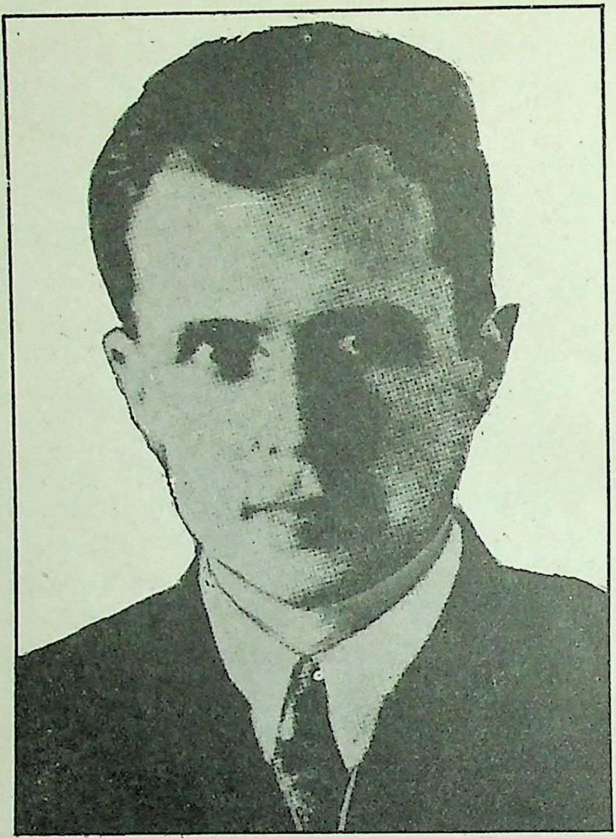

कार्लो तुओमी

बनने का निश्चय किया। शायद यह अमरीका में बिताए बचपन का असर था। अपनी इस आकांक्षा की पूर्ति के लिए तुओमी क़िरोव (Kirov) के शिक्षक महाविद्यालय में भर्ती हो गया।

गरीबी के कारण तुओमी लकड़ी काटकर बेचता और सवेरे-शाम लोगों के घर ताजा पेटी पहुंचाता। दिसंबर, 1947 में एक दिन बेकरी वाले ने उसके डिब्बे में 100 क्रीम रोल फालतू रख दिए। तुओमी यह देखकर ललचा गया। उसने वे क्रीम रोल बेच दिए और असली बात छिपा गया। दूसरी चोरी उसने अगले जाड़ों में बेकरी के मैनेजर के कहने पर की। ईंधन की बहुत तंगी थी, बेकरी में एक भी लकड़ी न थी। बेकरी के मैनेज़र ने तुओमी से कहा कि यदि तुम कहीं से सिर्फ एक ट्रक का इतजाम कर दो तो सरकारी लकड़ी गोदाम के चौकीदार को मैं पटा लूंगा और आधा ट्रक लकड़ी तुम्हें दे दूंगा। यही हुआ, चुराई गई आधी ट्रक लकड़ी तुओमी को मिल गई। मगर 8 दिसंबर, 1949 की रात को जब तुओमी अपना काम निपटाकर दुकान से निकला तो के.जी.बी. के एक जासूस ने तुओमी को अपना

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

परिचय पत्र दिखाया और कहा कि चुपचाप मेरे साथ चलो।

असलियत यह थी कि तुओमी के बारे में के.जी.बी. के एक अफसर मेजर सेराफिम को पहले से सब कुछ मालूम था। वह ठीक एक ऐसे ही व्यक्ति की तलाश में था। सेराफिम ने तुओमी को चोरी के इलजाम में जेल भेजने की धमकी देकर के.जी.बी. के लिए जासूसी करने के लिए राजी कर लिया।

अगली मुलाकात में सेराफिम ने तुओमी से कहा, ''तुम अपने विद्यालय के शिक्षकों के विचारों के बारे में सही-सही जानकारी हमें दो कि वे कम्युनिस्ट पार्टी की नीतियों, रूस की जीवन दिशाओं और पश्चिमी देशों की तारीफ अथवा उनके विरोध में क्या-क्या कहते हैं। तुम्हें उनके विचारों का मूल्यांकन करने की आवश्यकता नहीं है। तुम्हारे साथियों को तुम पर कतई भी संदेह नहीं होना चाहिए। जब कभी वे सोवियत संघ में कुछ भी कहें, तब ऐसा जताओ कि तुम उनके विचारों से सहमत हो, कभी-कभी मामूली आलोचना भी करो। पश्चिमी देशों के बारे में कभी-कभी अच्छी राय भी जाहिर कर सकते हो। जैसे-जैसे लोगों को तुम्हारे विचार मालूम होंगे, वे लोग भी तुम्हारे साथ सम्पर्क स्थापित करेंगे, जिनमें खुलकर सोवियत नीतियों की आलोचना करने का साहस नहीं है। धीरज से काम लेना होगा। बहुत खुलकर भी आलोचना मत करना, वरना आलोचक इसलिए तुम से दूर भागेंगे कि कहीं तुम उन्हें भी न फंसवा दो।''

तुओमी ने स्नातक की डिग्री ली, उसे उसी विद्यालय में नौकरी मिल गयी। अब तुओमी के लिए कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्यता ग्रहण करना अनिवार्य हो गया। कुछ समय बाद तुओमी को मास्को बुलाया गया और उससे कहा गया, ''हम तुम्हें एक महत्त्वपूर्ण जासूसी के लिए अमरीका भेजना चाहते हैं। हमने तुम्हारे अब तक के जीवन का संपूर्ण विश्लेषण कर लिया है और हमें पूरा विश्वास है कि तुम इस काम में सफल रहोगे। लेकिन इस बारे में अंतिम निर्णय तुम स्वयं ही करोगे कि तुम वहां जाना चाहते हो या नहीं? वहां के काम की कठिनाइयों को भी समझ लो। साधारण अमरीकी नागरिक की तरह रहने पर भी तुम्हारे सामने जान की जोखिम तो हरदम बनी रहेगी और तुम्हें एक लम्बे समय के लिए अपने पत्नी बच्चों से अलग भी रहना होगा।''

''कितने समय के लिए।''—तुओमी ने पूछा। के.जी.बी. के अधिकारी ने उसे बताया कि ''हम तीन वर्ष तक तुम्हें मास्को में प्रशिक्षण देंगे और तुम पर इतनी लागत लगा देने के बाद हम चाहेंगे कि तुम कम से कम तीन वर्ष अमरीका में जासूसी करो और यदि तुम अपने कार्य में सफल रहे तो यह समय अनिश्चित् काल तक लम्बा भी हो सकता है।''

''मेरे परिवार का क्या होगा?''—तुओमी ने पूछा। उत्तर मिला—''उन्हें किसी भी प्रकार की कोई तंगी नहीं रहेगी। उन्हें बड़ा मकान मिलेगा और तुम्हारा सारा वेतन भी, जो तुम्हारे वर्तमान वेतन का तीन गुना होगा। तुम्हारे खर्च के लिए हम तुम्हें अमरीकी डॉलरों में अलग से भी धन देंगे और तुम वहां अमरीकी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तौर-तरीकों से ही पूरी तरह आराम से रहोगे, सारा खर्च हम उठाएंगे।''

मई में जब तुओमी मास्को पहुंचा तो के.जी.बी. का एक कर्नल स्टेशन पर उसकी राह देख रहा था। कर्नल तुओमी को लेकर कुतुजोव्स्की-प्रास्पेट की एक इमारत में पांचवीं मंजिल के फ्लैट पर गया। वहां उसने एक अलमारी खोली और एक चोर खिड़की से होकर वे दोनों छठी मंजिल के एक फ्लैट पर जा पहुंचे जो शाही ढंग से सजा हुआ था। कर्नल ने उससे कहा कि यह तुम्हारा स्कूल है, आजकल सब लोग छुट्टी पर गए हैं, तुम भरपूर आराम कर सकते हो।

छह दिन के इस एकांतवास और विलासतापूर्ण जीवन के बाद उसे फोन पर यह संदेश मिला कि आज कहीं बाहर मत जाना, तुमसे मिलने कोई आने वाला है। थोड़ी ही देर में एक मोटा और भद्दा सा दिखने वाला व्यक्ति वहां आया और तुओमी से बोला कि मैं तुम्हारा मुख्य प्रशिक्षक और मार्गदर्शक अलैबसाई इवानोविक गैलकिन हूं। गैलकिन सन् 1951 से सन् 1956 तक संयुक्त राष्ट्र संघ के कर्मचारी का ढोंग करके अमरीका में जासूसी करता रहा था। अतः अमरीका के बारे में उसके पास काफी ताजा-तरीन जानकारी थी, इसी कारण उसे तुओमी का शिक्षक चुना गया था। गैलकिन ने तुओमी से कहा—''मैं तुम्हें जासूसी का शास्त्रीय और व्यावहारिक ज्ञान करा दूंगा। इसके अतिरिक्त तुम्हें शीघ्रलिपि, फोटोग्राफी और गुप्तलेखन (Code-writing) का भी अभ्यास कराया जाएगा। तुम्हें अमरीकी फिल्में भी दिखाई जाएंगी। हम तुम्हें ऐसे परिचय-पत्र देकर अमरीका भेजेंगे, जिससे तुम वहीं के नागरिक लगोगे। तुम्हें वहां धंधा भी मिल जाएगा। तुम्हारा काम ऐसे अमरीकियों की तलाश करना होगा जो हमारे लिए अपने देश में जासूसी कर सकें।''

इसके बाद फेन्ना सोलस्को नामक सुंदरी ने तुओमी से मुलाकात करके कहा—''मैं तुम्हें अमरीकी ढंग से अंग्रेजी बोलने और लिखने में कुशल बना दूंगी तथा वहां के रीति-रिवाज की भी पूरी जानकारी दूंगी।'' वह उसे सोने के कमरे में ले गयी और आदमकद शीशे के सामने खड़ा करके पीछे से उसकी टाई की गांठ ठीक करने लगी। वह तुओमी से एकदम सट गयी, जिसके कारण तुओमी उत्तेजित हो गया। यह देखकर फेन्ना ने उसे फटकारा। अपमानित और उत्तेजित तुओमी बड़ी मुश्किल से अपने ऊपर काबू कर पाया। फेन्ना यह देखती रही और अंत में उससे बोली, ''शाबाश, तुममें गजब का आत्म-संयम है। तुम जल्दी ही एक कुशल जासूस बन जाओगे।''

हर रोज सवेरे 9 बजे से लेकर शाम 5 बजे तक तुओमी का प्रशिक्षण चलता रहा। उसके सभी प्रशिक्षक अमरीका में जासूस रह चुके थे।

तुओमी को तकनीकी जानकारी भी दी गई। उसे माइक्रो-फोटोग्राफी (micro-photography) सिखाई गई, जिसके द्वारा एक पूरा पृष्ठ एक बिन्दु के रूप में उतारा जा सकता है। उसे अदृश्य रोशनाई का उपयोग भी सिखाया गया और दियासलाई की डिब्बी के आकार की एक गुप्त संकेत पुस्तिका भी दी गई।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एक दिन के.जी.बी. अधिकारी विक्टर कपालकिन तुओमी को अमरीकी वस्त्रालय में ले गया और उसके लिए अमरीकी ढंग की पोशाकें तैयार करायी गईं। अंत में पांच दिन तक तुओमी की कठोर परीक्षा ली गयी। गैलकिन ने परिणाम घोषित किया–श्रेष्ठ। एक सप्ताह बाद उसकी पत्नी और बच्चे उसके पास रहने के लिए आए। बाद में वह उन्हें लेकर एक मास का अवकाश मनाने काला सागर के तट पर गया। लौटने पर कर्नल फेडरोविच पोल्याकोव ने तुओमी से कहा, ''तुम न्यूयार्क जाओ और वहां से हमें न्यूयार्क हार्बर में राकेटों, युद्ध सामग्री और सैनिकों के आवागमन के बारे में सूचनाएं भेजो। साथ ही कुछ अमरीकियों के साथ भी संपर्क साधने की कोशिश करो।''

के.जी.बी. ने तुओमी के लिए एक पूरी कहानी गढ़ डाली, जिसमें उसे अमरीकी नागरिक सिद्ध किया गया। वह कहानी कुछ इस प्रकार थी–''तुओमी का जन्म मिशिगन में हुआ तथा उसका लालन-पालन राज्य के छोटे कस्बों में हुआ। सन् 1932 में उसकी बहन की मृत्यु के बाद उसके सौतेले पिता ने परिवार छोड़ दिया तथा इसके बाद उसका कोई पता न लग सका। अगले साल तुओमी और उसकी मां तुओमी की दादी के खेत में काम करने के लिए चले गए। पांच साल बाद वह छुट्टी मनाने मिशिगन लौटा जहां उसे बचपन की एक सहेली हेलेन बैटसन मिल गयी, जिससे उसका प्रेम और अंततः विवाह हो गया। सन् 1941 में जब फार्म की आय घटने लगी तो तुओमी काम की तलाश में न्यूयार्क चला गया जहां वह ब्रोक्स में रहा। उसे अपनी पत्नी, मां और बीमार दादी का भरण-पोषण करना पड़ता था, अतः उसे अनिवार्य सैनिक भर्ती से मुक्त कर दिया गया था।''

तुओमी को इन सब स्थानों की फिल्में दिखायी गईं और उससे कहा गया कि तुम अमरीका जाने पर स्वयं इन सब स्थानों पर जाकर परिचित हो जाना। जिन संस्थानों में तुओमी के काम करने की कहानी गढ़ी गयी थी, उनके भीतर के दृश्यों की फिल्में उतारकर लायी गयी थीं। उनके भीतर काम करने वालों के नाम और स्वभाव की पूरी जानकारी भी एकत्रित करके तुओमी को रटा दी गई थी। उसे वे सब फिल्में दिखाई गईं, ताकि वह कारखानों और दुकानों तथा उनमें काम करने वाले लोगों के चेहरों से अच्छी तरह परिचित हो जाए।

सन् 1959 में तुओमी पूरी तरह प्रशिक्षित होकर अमरीका पहुंचा। पर वह ज्यादा देर तक सफलतापूर्वक जासूसी नहीं कर पाया। एफ.बी.आई. ने जल्दी ही उसे पकड़ लिया। पर सजा देने के बजाय तुओमी को एफ.बी.आई. ने डबल एजेंट में बदल दिया। अब तुओमी अमरीकनों के लिए रूसियों के खिलाफ जासूसी करने लगा। सन् 1962 में के.जी.बी. ने उसे वापस बुलाया, पर तुओमी ने तय किया कि वह रूस नहीं जाएगा। वह अमरीका का नागरिक बन गया और वहीं बस गया। ■■

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यूरी आंद्रोपोव

(Yuri Andropov)

जिसने के.जी.बी. की छवि बदल दी

यूरी आंद्रोपोव ने रूसी खुफिया विभाग के.जी.बी. को बेरिया के पुलिसिया युग से निकालकर आधुनिक जासूसी युग में प्रवेश दिलाया। आंद्रोपोव के नेतृत्व में के.जी.बी. की गतिविधियां विदेशों में कई गुना अधिक बढ़ गईं। आंद्रोपोव ने के.जी.बी.को अफवाहें उड़ाने की एक जबरदस्त मशीन में बदल दिया, जिससे अंतर्राष्ट्रीय जासूसी में जलजला सा आ गया। देखते ही देखते के.जी.बी. की छवि एक चालाक लोमड़ी और खूंखार शेर के मिले-जुले रूप में स्थापित हो गई।

यूरी आंद्रोपोव का नाम जासूसी की दुनिया में कम और राजनीति की दुनिया में ज्यादा मशहूर है। केवल जानकार लोगों को ही ज्ञात है कि सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी का महासचिव बनने से पहले आंद्रोपोव के हाथ में तकरीबन डेढ़ दशक तक सोवियत राज्य सुरक्षा समिति यानी के.जी.बी. की बागडोर थी। दरअसल के.जी.बी. को मौजूदा रूप और आकार देने का श्रेय उन्हीं को जाता है। मोटे कांच के चश्मे के पीछे से झांकता आंद्रोपोव का सुसंस्कृत चेहरा के.जी.बी. की अंधेरी दुनिया से होता हुआ धीरे-धीरे राजनीति की सीढ़ियां चढ़ता रहा। के.जी.बी. में काम करते-करते आंद्रोपोव ने विदेश-नीति का इतना जबरदस्त अनुभव हासिल कर लिया था कि उनके लिए सोवियत राष्ट्रपति की भूमिका निभाना जरा भी मुश्किल नहीं रह गया था। अगर बीमारी ने असमय ही उनके प्राण न ले लिए होते तो वे लम्बे समय तक विश्व राजनीति के रंगमंच पर अपने कमाल दिखाते रहते।

यूरी ब्लादीमिरवोमिच आंद्रोपोव का जन्म वोल्गा (Volga) नदी के पास दक्षिणी रूस में एक रेलवे अधिकारी के घर में हुआ था। किशोरावस्था में ही आंद्रोपोव ने कुछ दिन इधर-उधर की नौकरियां करने के बाद कोम्सोमोल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

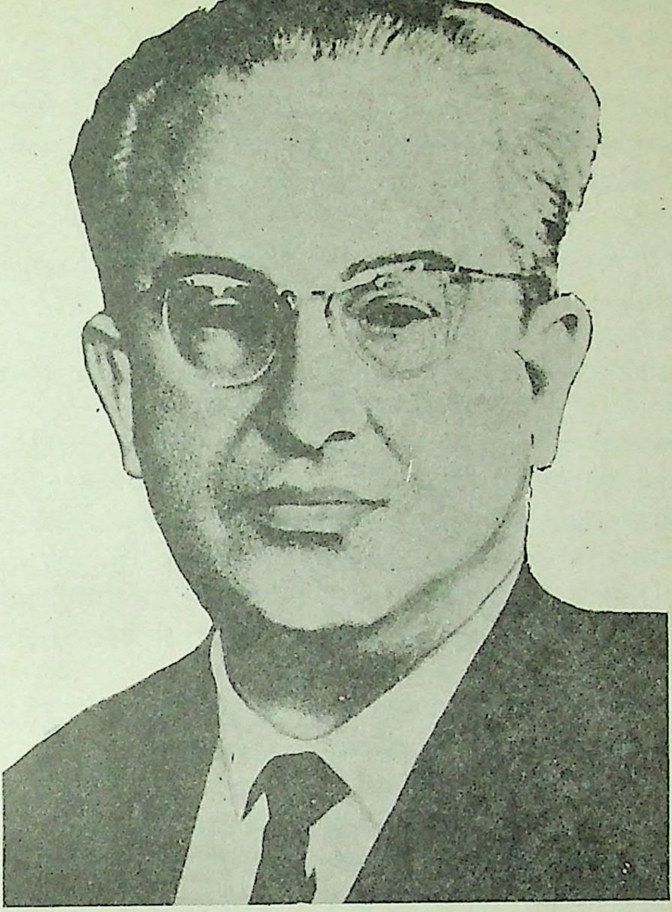

यूरी आन्द्रोपोव

(Komsomole) यानी तरुण कम्युनिस्ट लीग की सदस्यता ग्रहण कर ली थी। यहीं से आंद्रोपोव ने सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी और प्रशासन में एक-एक करके प्रगति की सीढ़ियां चढ़नी शुरू की। एक तकनीकी कॉलेज से आंद्रोपोव ने स्नातक की उपाधि ग्रहण की और उसके बाद देश की उत्तरी सीमा के पास कारेलिया (Karelia) में आंद्रोपोव ने युवकों का नेतृत्व करना शुरू किया। उन दिनों सोवियत संघ और फिनलैंड के बीच युद्ध चल रहा था। इसके बाद लेनिनग्राद (Leningrad) के क्षेत्र में फासीवाद (Facism) के खिलाफ महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के दौरान आंद्रोपोव ने बिना युद्ध में सीधे भाग लिए हुए एक पार्टी अधिकारी के रूप में ऐसे-ऐसे कार्य किए कि वे नेतृत्व की निगाहों में शीघ्र ही ऊपर चढ़ गये। आंद्रोपोव के जीवन पर शोध करने वालों को यह जानकर आश्चर्य होता है कि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उन्होंने न तो कभी युद्ध में हिस्सा लिया, न कभी कोई महत्त्वपूर्ण युद्ध सम्मान पाया और न ही कभी किसी पश्चिमी युरोपीय देश की यात्रा की। इसके बावजूद आंद्रोपोव ने के.जी.बी. के चेयरमैन के रूप में न केवल सोवियत मिलिट्री इंटेलीजेंस (Soviet Military Intelligence) यानी जी.आर.यू. को नियंत्रित किया बल्कि दुनिया भर में फैले सोवियत एजेंटों के लिए परंपरागत रूसी तौर-तरीकों की जगह पश्चिमी आचार-व्यवहार सीखने पर बल दिया।

सन् 1956 में आंद्रोपोव को पहली बार अपनी योग्यता दर्शाने का एक बड़ा मौका प्राप्त हुआ। उन्हें हंगरी की राजधानी बुडापेस्ट में प्रथम कोंसुलर (First Consular) के रूप में और फिर राजदूत के रूप में नियुक्त किया गया। हंगरी और सोवियत संघ के लिए वे बड़े संकट भरे दिन थे। हंगरी में विद्रोह पूरे उफान पर था। ऐसे नाजुक समय में आंद्रोपोव को राजदूत बनाए जाने की खबर सुनकर लोगों को आश्चर्य भी हुआ क्योंकि आंद्रोपोव को राजनीतिक जीवन का रत्ती भर भी अनुभव न था। पर आंद्रोपोव ने इसे चुनौती के रूप में स्वीकार कर एक राजनयिक के रूप में बेहद कुशल साबित किया। विद्रोह को कुचलने के लिए सोवियत टैंकों के लिए रास्ता साफ करने के लिए उन्होंने पूरी परिस्थितियां तैयार कीं। उनके इस कारनामे से रूस के तत्कालीन नेता बहुत प्रभावित हुए। धीरे-धीरे आंद्रोपोव ने खुद को गोपनीय गतिविधियों के संगठन में बेहद होशियार साबित किया। नतीजे के तौर पर सन् 1967 में निकिता खुश्चेव ने आंद्रोपोव को के.जी.बी. का चेयरमैन नियुक्त किया।

आंद्रोपोव के हाथों में बागडोर आते ही विदेशों में के.जी.बी. की गतिविधियां एकदम से बहुत बढ़-चढ़कर सामने आने लगीं। अमरीका, ब्रिटेन और युरोप के चप्पे-चप्पे में सोवियत जासूस फैल गए। के.जी.बी. के एजेंटों ने जासूसी के जबरदस्त कारनामे अंजाम दिए। आंद्रोपोव के जमाने में ही ब्रिटिश सरकार ने लंदन के रूसी दूतावास के 105 सोवियत एजेंटों को देश से निर्वासित किया था।

के.जी.बी. एक ऐसी जासूसी संस्था है, जो न केवल विदेशों में जासूसी की जिम्मेदार है बल्कि उसका काम देश के अंदर राज्य के विरोधियों से निपटना भी होता है। इसलिए आंद्रोपोव को कम्युनिस्ट शासन में तेजी से संगठित हो रहे उन असंतुष्टों का सफाया भी करना था, जो खुश्चेव के उदारतावाद से फायदा उठाना चाहते थे। उन दिनों स्तालिन के शासन में हुई कड़ाई की निंदा करना फैशन सा बन गया था, इसलिए असंतुष्ट यह मानकर चलने लगे थे कि शायद उनके संगठित होने पर सरकार किसी भी प्रकार का ऐतराज नहीं करेगी। पर आंद्रोपोव के इरादे कुछ और ही थे। उन्होंने असंतुष्टों की इस धारणा को गलत साबित करते हुए उनके खिलाफ अपनी सीक्रेट सर्विस के एजेंटों के जरिए मानो एक युद्ध सा छेड़ दिया। इसके लिए आंद्रोपोव ने पुराने पड़ चुके परंपरागत खून-खराबे वाले तरीकों को नहीं अपनाया। उन्होंने विभिन्न तरीकों से प्रमुख असंतुष्टों को इतना परेशान किया कि वे रूस छोड़ जाने के बारे में सोचने लगे। आंद्रोपोव ने उन्हें विदेश जाने के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लिए प्रोत्साहित भी किया। उनका ख्याल था कि विदेश में रहकर ये लोग सोवियत राज्य का कम नुकसान कर पाएंगे। आंद्रोपोव का दूसरा हथकंडा था—शासन के विरोधियों को पागल करार देकर मनश्चिकित्सालयों में भेज देना। दरअसल, ये मनश्चिकित्सालय और कुछ नहीं, सीधे-साधे जेलखाने थे। इसका पश्चिमी जगत की खुफिया एजेंसियों ने रूस के खिलाफ विश्व जनमत बनाने हेतु जोरदार फायदा उठाया। उन्होंने इन्हें के.जी.बी. के मनश्चिकित्सालयों के नाम पर खोले गए मानवीय दमन के बूचड़खाने की संज्ञा देकर, इनके विरुद्ध जमकर प्रचार किया। आंद्रोपोव ने इसकी तनिक भी परवाह नहीं की बल्कि उनके जमाने में मनोवैज्ञानिक जेलों की संख्या पहले एक से 11 हुई और फिर बढ़ते-बढ़ते यह संख्या 30 तक पहुंच गई।

आंद्रोपोव ने पश्चिमी युरोप में काम कर रहे के.जी.बी. के जासूसों की कार्यशैली बदली। इससे पहले रूसी जासूसों की छवि बैगी सूट, चेडिहैट और रेन कोट पहने हुए रहस्यमय लोगों की होती थी। अब रूसी जासूस शानदार पश्चिमी शैली के सूट पहनने लगे। उन्होंने अंग्रेजी सीखनी और बोलनी शुरू की।

आंद्रोपोव ने खुद भी अंग्रेजी सीखने के लिए काफी परिश्रम किया। उन्हें लग रहा था कि वे सोवियत संघ के सबसे बड़े नेता बनने वाले हैं और उन्हें शीघ्र ही अंतर्राष्ट्रीय मंच पर एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निबाहनी होगी। वैसे वे जर्मन के अतिरिक्त और कई भाषाएं भी बोल लेते थे। आंद्रोपोव ने ही के.जी.बी. को एक अफवाहें उड़ाने वाली मशीन का भी रूप दिया। उनका कहना था कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अमरीकी झूठों का मुकाबला करने के लिए के.जी.बी. के लिए ऐसा करना जरूरी है। गरज यह है कि आंद्रोपोव ने जासूसी जगत में उछलने वाली हर ईंट का जवाब पत्थर से दिया।

क्रिस्टोफर डोबसन (Christopher Dobson) और रोनाल्ड पाएने (Ronald Payne) ने अपनी मशहूर किताब द *डिक्शनरी ऑफ एस्पियोनेज (The Dictionary of Espionage)* की भूमिका में लिखा है कि यूरी आंद्रोपोव को 'यादों की दुनिया में धकेल देने वाला' लोकप्रिय संगीत सुनने का शौक था। पश्चिमी युरोप को डिफेक्ट करने वाले सोवियत राजनयिक व्लादीमिर सखारोव (Valadimir Sakharov) का कहना था कि आंद्रोपोव ने के.जी.बी. को अफवाहों की मशीन बनाने में ब्रिटिश डबल एजेंट किम फिल्बी से भी राय ली थी। सखारोव का यह दावा भी है कि आंद्रोपोव को सोवियत राष्ट्रपति बनाने के पीछे भी फिल्बी का दिमाग ही काम कर रहा था। कुछ भी हो पर यह एक जीती-जागती सच्चाई है कि के.जी.बी. को एक मजबूत और आधुनिक जासूसी संगठन में बदलने का श्रेय निर्विवाद रूप से आंद्रोपोव को ही जाता है।

राष्ट्रपति बनने के बाद आंद्रोपोव को बीमारी से जूझना पड़ा। बीमारी से जझते-जूझते ही फरवरी, 1984 में के.जी.बी. का यह मसीहा मौत की गोद में सो गया। ■■

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विलियम जे. केसी

(William J. Casey)

सी.आई.ए. को नई जिन्दगी देने वाला जासूस

"वाटरगेट कांड" के बाद हुई घोर बदनामी ने सी.आई.ए. को निराशा के गहरे गर्त में धकेल दिया था। उसके एजेंटों का मनोबल काफी हद तक गिर चुका था। सी.आई.ए. को इस संकट से उबारने के लिए राष्ट्रपति रोनाल्ड रेगन ने विलियम जे. केसी के काबिल हाथों में एजेंसी की बागडोर सौंपी। शीघ्र ही केसी ने अपनी शानदार नेतृत्व की प्रतिभा को उजागर करते हुए न केवल जासूसी की दुनिया के पंगु हुए इस शेर को नयी जिन्दगी फूंक कर चलने-फिरने लायक बना दिया बल्कि उसे पहले की तरह एक बेताज बादशाह के रूप में स्थापित कर दहाड़ने के काबिल भी बना दिया।

"वाटरगेट कांड" (Watergate Scandle) का अमरीकी राजनीति पर जो सबसे बड़ा असर पड़ा, वह था सी.आई.ए. की प्रतिष्ठा का घोर बदनामी के साथ पूरी तरह से धूल में मिल जाना। एलन डलेस (Allen Dulles) के नेतृत्व में सी.आई.ए. ने एक ऐसी जासूसी संस्था का रूप धारण कर लिया था जिसे 'अमरीकी विदेशनीति की बांह' पुकारा जाने लगा था। दुनिया भर में अमरीका विरोधी सरकारों का तख्ता पलटने की साजिशों और अमरीका का विरोध करने वाले नेताओं की हत्या करवाने की कोशिशों की पोल खुल जाने के कारण सी.आई.ए.की पहले से ही भयंकर बदनामी हो चुकी थी। परन्तु उसकी छविं पर सबसे करारी चोट "वाटरगेट कांड" के बाद हुई जांच के रूप में पड़ी, जिसने उसकी कमर पूरी तरह से तोड़ दी। सी.आई.ए. का मनोबल बहुत हद तक गिर गया। निक्सन (Nixon) के बाद आए नए राष्ट्रपति कार्टर (Carter) ने उसका बजट काटकर आधा कर दिया। अमरीकी युवकों में सी.आई.ए. में भर्ती होना कोई सम्मान सूचक या खास फायदे की बात नहीं रह गयी थी। सी.आई.ए.

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

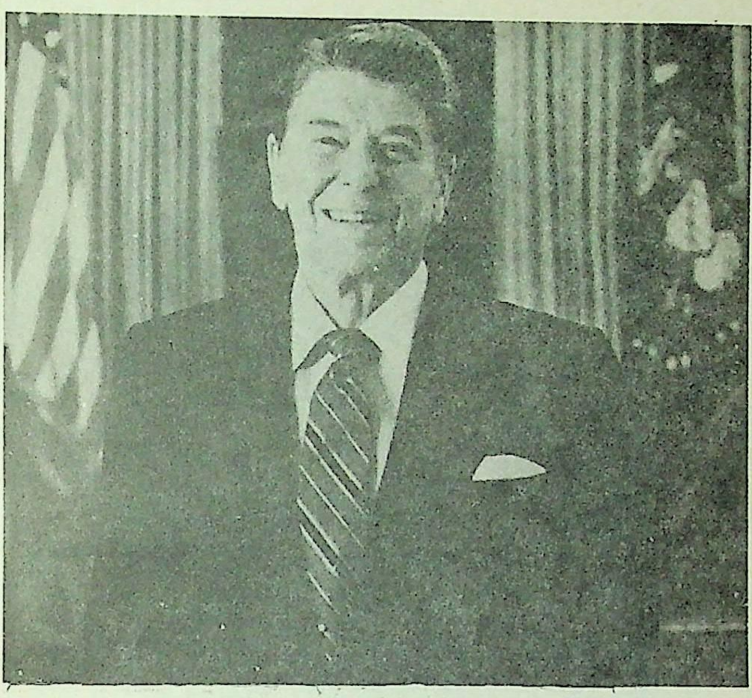

अमरीका के राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन

को इस दौर में निराशा के गहरे गर्त से निकालने का श्रेय केवल विलियम जे. केसी को जाता है।

सन् 1981 में राष्ट्रपति रोनाल्ड रेगन ने केसी की नेतृत्व क्षमता पर पूरा भरोसा करते हुए उसे सी.आई.ए. का निदेशक नियुक्त किया। केसी इससे पहले उनकी चुनाव मुहिम के इंचार्ज रह चुके थे। केसी के कंधों पर एजेंसी का टूटा हुआ मनोबल उठाकर उसका जीर्णोद्धार करने और उसे के.जी.बी. की टक्कर की एजेंसी बनाने की भारी जिम्मेदारी आन पड़ी। निदेशक बनने से 35 साल पहले तक केसी ने जासूसी का कोई काम नहीं किया था, इसलिए उनकी नियुक्ति पर लोगों ने काफी ऐतराज भी किया, पर रेगन को केसी की योग्यता पर पूरा यकीन था।

केसी ने पढ़ाई के बाद एक युवा और सफल वकील के रूप में अपने व्यावसायिक जीवन की शुरुआत की थी। उसी जमाने में ''आफिस ऑफ स्ट्रेट्जिक सर्विसेज'' (Office of Strategic Services) यानी ओ.एस.एस. (जो सी.आई.ए. से पहले अमरीकी वैदेशिक जासूसी की जिम्मेदार थी) के संस्थापक विलियम दोनोवान (William Donovan) ने केसी से संपर्क किया। कमजोर निगाह होने के बावजूद लॉ आफिस के एक दोस्त के जरिए केसी ने जासूसी का काम शुरू किया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

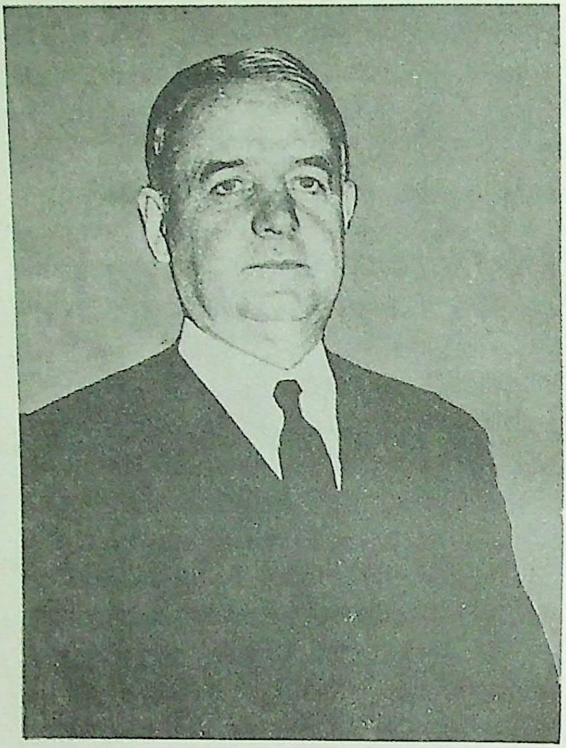

विलियम दोनोवान

इसके बाद तो जैसे केसी की दुनिया ही बदल गई। जासूसी और खुफिया योजनाएं बनाना उसका रोजमर्रा का खेल बन गया। केसी को लंदन में ओ.एस.एस. का "स्टेंशन अफसर" (Station Officer) बनाया गया। उसने ब्रिटिश इंटेलीजेंस अफसरों से बेहद दोस्ताना ताल्लुकात बनाए और उनके तौर-तरीकों से जासूसी के बहुत से नए-नए गुर सीखे। सी.आई.ए. का निदेशक बनने के बाद केसी ने एक बार ब्रिटिश प्रधानमंत्री मागरिट थैचर (Margaret Thatcher) के सामने स्वीकार भी किया कि अमरीका ने जासूसी का क ख ग ब्रिटेन से ही सीखा है।

लंदन में अपने कार्यकाल के दौरान केसी ने युरोप के चप्पे-चप्पे में ओ.एस.एस. के एजेंटों का जाल बिछा दिया और "इंटेलीजेंस विश्लेषण" के काम में गजब की महारथ हासिल कर ली। केसी में एक विश्लेषक की स्वाभाविक योग्यता थी। अमरीका लौटकर केसी ने फिर से वकालत शुरू कर दी। उसने साथ-साथ जटिल कानूनी और वित्तीय लेन-देन के सिलसिले में किताबें छापीं और लाखों डालर कमाये। केसी को अध्ययन करने का एक नशा सा था। उसके सामने जो भी पुस्तक आती वह उसे पूरी तरह से पढ़े बिना नहीं छोड़ता था। उसने खुद

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अमरीकी क्रांति पर एक शानदार पुस्तक लिखी। केसी ने ओ.एस.एस. का इतिहास भी लिखा। पर इसके छपने से पहले केसी ने सोचा कि उसके सी.आई.ए. से रिटायर हो जाने के बाद ही इस पुस्तक का प्रकाशन करना ठीक रहेगा क्योंकि उसमें बहुत से गोपनीय रहस्य लिखे हुए थे।

सी.आई.ए. का निदेशक बनते ही केसी ने उसका बजट बढ़ाने की मांग की। अमरीकी कांग्रेस (संसद) ने बजट प्रस्ताव पर बड़ी नाक-भोंह सिकोड़ी। दरअसल, कांग्रेस शुरू से ही चाहती थी कि केसी की जगह एडमिरल बॉबी रे इनमान (Bobby Ray Inman) को निदेशक बनाया जाए। इनमान पहले भी सी.आई.ए. में नंबर दो की हैसियत पर काम कर चुके थे। 70 वर्षीय केसी को अगर रेगन का समर्थन न मिलता तो संभवतः कामयाबी ही न मिलती। रेगन ने न केवल सी.आई.ए. का बजट ही बढ़ाया बल्कि केसी को केबिनेट स्तर का दर्जा भी दे दिया। इस तरह की हैसियत पाने वाला सी.आई.ए. का वह पहला निदेशक था।

केसी ने एक बेहद तजुर्बेकार और आक्रामक निदेशक की तरह काम किया। उसका सारा जोर साजिश और खुफिया कामकाज पर रहता था। जल्दी ही सी.आई.ए. ने अपना स्टाफ बढ़ाने का जोरदार अभियान शुरू किया। प्रतिभाशाली युवकों की पूरे जोर-शोर से तलाश होने लगी। केसी ने हमेशा अपनी जासूसी रणनीति में सूचनाओं और खबरों का आकलन करने के महत्त्व पर भी काफी जोर दिया। सी.आई.ए. में नौकरी के लिए छपवाए गए विज्ञापनों में साफ लिखा होता कि जासूसी का काम पिस्तौलबाजी और छुरेबाजी से कम ताल्लुक रखता है और उसके लिए तथ्य जमा करने, उनका विश्लेषण करने, निर्णय लेने और जल्दी और स्पष्ट मूल्यांकन करने आदि की अधिक आवश्यकता होती है।

परन्तु कांग्रेस ने केसी पर कभी रत्ती भर भी यकीन नहीं किया। कांग्रेस के बहुत से सदस्यों का ख्याल था कि केसी की साजिश करने की गंदी आदत अमरीका को किसी नयी समस्या में बुरी तरह फंसवाएगी। इसलिए खुफिया तंत्र पर निगरानी रखने वाली कांग्रेस की समिति ने केसी पर हमेशा बहुत कड़ी निगाह रखी। अगस्त, 1981 में केसी ने मैक्स हगेल (Max Hugel) को खुफिया मुहिमों का इंचार्ज बनाया तो कांग्रेस ने टांग अड़ाकर हगेल को इस्तीफा देने पर मजबूर कर दिया। कांग्रेस का कहना था कि हगेल में इस पद को संभालने के लिए आवश्यक योग्यताओं का नितांत अभाव है। कांग्रेस की समिति ने केसी को भी बड़ी मुश्किल से ना-नुकर करते हुए सी.आई.ए. का निदेशक होने लायक माना था।

केसी को नीचा दिखाने की भी काफी कोशिशें हुईं। रेगन के सन् 1980 वाले चुनाव की मुहिम के इंचार्ज के रूप में केसी पर आरोप लगाया गया कि उसने डेमोक्रेटिक और रिपब्लिकन प्रत्याशियों के बीच बहस के कागजात पहले ही हासिल कर लिए थे। यह भी दूसरा वाटरगेट बन गया होता पर केसी के खंडन के साथ ही इस 'डिबेटगेट' (Debategate) का गुब्बारा पिचक गया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

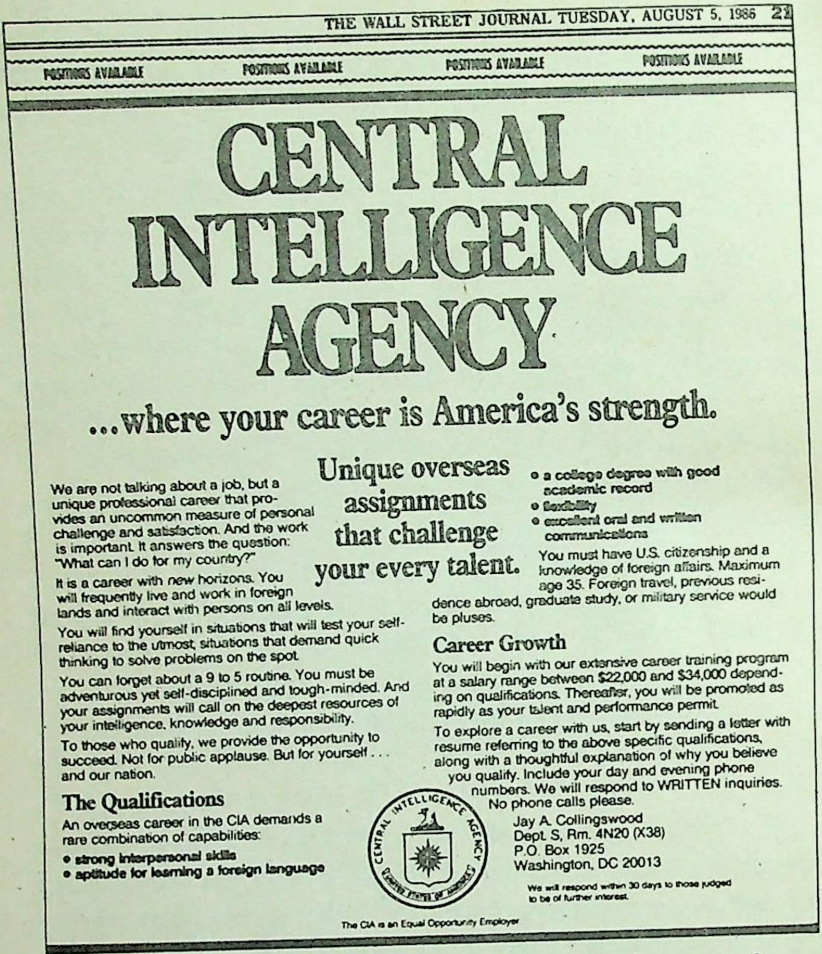

THE WALL STREET JOURNAL TUESDAY, AUGUST 5, 1986 21

POSITIONS AVAILABLE POSITIONS AVAILABLE POSITIONS AVAILABLE POSITIONS AVAILABLE

CENTRAL INTELLIGENCE AGENCY

...where your career is America's strength.

Unique overseas assignments that challenge your every talent.

We are not talking about a job, but a unique professional career that provides an uncommon measure of personal challenge and satisfaction. And the work is important. It answers the question: "What can I do for my country?"

It is a career with new horizons. You will frequently live and work in foreign lands and interact with persons on all levels.

You will find yourself in situations that will test your self-reliance to the utmost, situations that demand quick thinking to solve problems on the spot.

You can forget about a 9 to 5 routine. You must be adventurous yet self-disciplined and tough-minded. And your assignments will call on the deepest resources of your intelligence, knowledge and responsibility.

To those who qualify, we provide the opportunity to succeed. Not for public applause. But for yourself . . . and our nation.

The Qualifications

An overseas career in the CIA demands a rare combination of capabilities:

- strong interpersonal skills
- aptitude for learning a foreign language
- a college degree with good academic record
- flexibility
- excellent oral and written communications

You must have U.S. citizenship and a knowledge of foreign affairs. Maximum age 35. Foreign travel, previous residence abroad, graduate study, or military service would be pluses.

Career Growth

You will begin with our extensive career training program at a salary range between $22,000 and $34,000 depending on qualifications. Thereafter, you will be promoted as rapidly as your talent and performance permit.

To explore a career with us, start by sending a letter with resume referring to the above specific qualifications, along with a thoughtful explanation of why you believe you qualify. Include your day and evening phone numbers. We will respond to WRITTEN inquiries. No phone calls please.

Jay A. Collingswood
Dept. S, Rm. 4N20 (X38)
P.O. Box 1925
Washington, DC 20013

We will respond within 30 days to those judged to be of further interest.

The CIA is an Equal Opportunity Employer

अमरीकी युवकों को सी.आई.ए. में भरती होने के लिए उत्साहित करता एक विज्ञापन

अप्रैल, 1984 में केसी ने स्वीकार किया कि उसने अपने एजेंटों के जरिए निकारागुआ के बंदरगाहों में सुरंगें बिछवाई हैं। इसके लिए उसे कड़ी आलोचना का सामना करना पड़ा। तीन साल बाद "ईरानगेट कांड" (Irangate Scandle) अर्थात् ईरान को हथियार सप्लाई करके उसके पैसे से निकारागुआ के कोंट्रा (Contra) विद्रोहियों को मदद पहुंचाने की साजिश में केसी और सी.आई.ए. ने बेहद विवादस्पद भूमिका निभाई। ईरानगेट कांड की जांच के दौरान ही मस्तिष्क की शिराएं फटने से केसी की मृत्यु हो गई। ■■

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विश्व-प्रसिद्ध शृंखला

पुस्तक महल की 30 पुस्तकों का एक अनूठा प्रोजेक्ट

मूल्य: 12/- प्रत्येक
डाकखर्च: 3/- प्रत्येक
एक साथ चार पुस्तकें मंगाने पर डाकखर्च माफ

- प्रामाणिक पाठ्य-सामग्री
- प्रत्येक पुस्तक सैकड़ों दुर्लभ चित्रों से सुसज्जित
- सरस कथा शैली
- फोटोटाइप सैट
- बढ़िया कागज पर ऑफसैट छपाई

Some of these books are also available in English.

इस शृंखला में प्रकाशित पुस्तकें:

विश्व-प्रसिद्ध.... 1. खोजें 2. अनसुलझे रहस्य 3. रोमांचक कारनामे 4. युद्ध 5. 101 व्यक्तित्व 6. धर्म, मत एवं सम्प्रदाय 7. खेल एवं खिलाड़ी 8. रिकार्ड्स (भाग एक) 9. रिकार्ड्स (भाग दो) 10. वैज्ञानिक 11. विनाश-लीलाएं 12. दुर्घटनाएं 13. गुप्तचर-संस्थाएं 14. जासूस 15. चिकित्सा-पद्धतियां 16. प्रेरक-प्रसंग

शीघ्र प्रकाश्य

- हत्यारे
- राजनैतिक स्केण्डल
- बैंक डकैतियां
- सभ्यताएं
- जासूसी कांड
- अय्याश राजा
- खोजी यात्राएं

इस शृंखला का मूल उद्देश्य एक औसत पाठक को अंतर्राष्ट्रीय जगत से जोड़कर उसकी चेतना को प्रबुद्ध करते हुए उसके ज्ञान क्षेत्र का विस्तार करना है।

रोमांचक कारनामे में सरकंडे की नाव में की गई 13,000 मील की समुद्री यात्रा जैसी अनेक सच्ची कथाएं हैं तो **खोजें** में मिट्टी के तेल, पेनिसीलीन आदि खोजों के पीछे छिपे प्रयासों का रोचक विवरण है। **अनसुलझे रहस्य** मे बरमूदा ट्राइएंगल से लेकर भूत-प्रेतों तथा रक्त मिलाकर शराब पीने वाली जातियों तक के रहस्य हैं तो **गुप्तचर संस्थाएं** में सी.आई.ए., के.जी.बी. आदि का काला चिट्ठा है और **जासूस** में हैं जासूसी के अद्‌भुत कारनामे।

इसी प्रकार अन्य पुस्तकें भी अपने क्षेत्र से संबंधित सभी [illegible] प्रश्नों को [illegible] करने वाली एक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अनजाने तथ्य जानिए

501 रोचक तथ्य

मूल्य: 12/-
डाकखर्च: 3/-
डिमाई साइज़: 120 पृष्ठ

- सोडावाटर में बिलकुल सोडा नहीं होता।
- मनुष्य की रक्तवाहिनियों की कुल लम्बाई 1,00,000 मील होती है।

ऐसे ही गुदगुदाने वाले व ज्ञान-विज्ञान के नए क्षितिज खोलने वाले 501 अजाने तथ्य'

आर्कीटेक्ट अशोक गोयल की प्रामाणिक पुस्तकें

होम डेकोरेशन गाइड

मूल्य: 20/- डाकखर्च: 4/-

इस पुस्तक में गृह-सज्जा संबंधी सभी विषयों को विस्तारपूर्वक और चित्रों सहित समझाया गया है —धर्मयुग

इस किताब की मदद से छोटी-छोटी जगहों को भी अच्छी तरह सजा कर दर्शनीय बनाया जा सकता है. —नवभारत टाइम्स

विचित्र दुनिया—विचित्र लोग

विश्व के विचित्र इंसान

— ए. एच. हाशमी

मूल्य: 12/- डाकखर्च: 3/-
बड़े साइज के 108 पृष्ठ

- दो सिर वाला अजूबा बच्चा कैसा था?
- शरीर से जुड़े स्यामी भाई?
- तीन टांगों वाला व्यक्ति कैसे चलता था?
- क्या कोई व्यक्ति आधे टन का था?

ऐसी ही कितनी अन्यान्य विचित्र जानकारियां।

70 से 225 वर्गमीटर के नक्शे

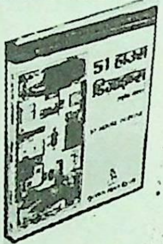

51 हाउस डिजाइंस

मूल्य: 30/- डाकखर्च: 5/-

प्रत्येक नक्शा निम्न बातों को ध्यान में रखकर बनाया गया है:

ड्राइंग, डाइनिंग, बैठक व बाथरूम एवं रसोईघर आदि का सही तालमेल हो.
जगह का सदुपयोग हो. सभी कमरे हवादार हों व उनमें कुदरती रोशनी हो आदि।

विचित्र जन्तुओं का संसार

विचित्र जीव-जन्तु

—ए.एच. हाशमी

मूल्य: 15/-
डाकखर्च: 4/-

टुआटेरा: *तीन आंख वाला विचित्र प्राणी।*
कांच मेंढक: *जिसकी पारदर्शी त्वचा में से भीतर का सारा शरीर दीख पड़ता है।*
लैंपधारी मछली: *जिसके सिर पर प्रकृति ने जलने वाले बल्ब दिए हैं।*

250 से 500 वर्गमीटर के नक्शे
(फ्रण्ट एलीवेशन के डिजाइनों सहित)

मार्डर्न हाउस प्लान्स

मूल्य: 20/- डाकखर्च: 4/-

- रोड़ी-सरिये के डिज़ाइनों की पूर्ण जानकारी
- सजावटी पेड़-पौधों की जानकारी
- कमरों के परस्पर सही तालमेल के तरीके
- मकान-सम्बन्धी प्राविधिक जानकारियां।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

3,00,00,000
तीन करोड़ से भी अधिक पाठकों की पसंद

रैपिडैक्स
इंगलिश स्पीकिंग कोर्स

प्रिय अभिभावक,
आपका बच्चा अंग्रेजी स्कूल में पढ़ता है,
अंग्रेजी अच्छी तरह लिख-पढ़ लेता है;
उसकी एकमात्र समस्या........
वह इसे बोलने में हिचकता या अटकता है!

इसका समाधान बता रहे हैं
उसके प्रिय खिलाड़ी कपिलदेव—

अंग्रेजी बोलचाल सीखने का एकमात्र सोर्स
रैपिडैक्स इंगलिश स्पीकिंग कोर्स

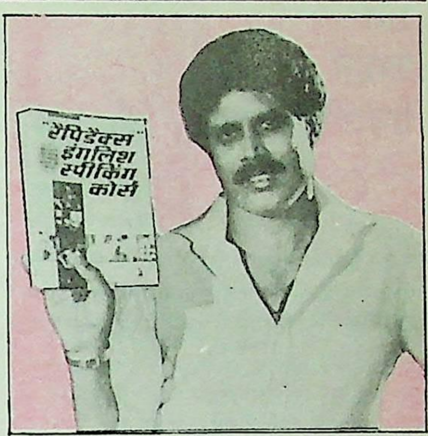

12 भारतीय भाषाओं में प्रकाशित

It's really a good book to learn spoken English.
—**Kapil Dev**

कान्वेंट स्तर की शुद्ध व फर्राटेदार अंग्रेजी सिखलाने वाली ऐसी पुस्तक जो भारत के कोने-कोने में फैली, जिसे हर भाषा के लोगों ने पसंद किया तथा समाज के हर वर्ग ने अपनाया।

सभी भाषाओं में बड़े साइज के 400 से अधिक पृष्ठ
और मूल्य एक ही 28/- डाकखर्च: 5/- प्रत्येक

स्त्री के सौन्दर्य, स्वास्थ्य एवं रोगों का एनसाइक्लोपीडिया

लेडीज हैल्थ गाइड

लेखिका: *महिला-विषयों की विशेषज्ञा* **श्रीमती आशारानी व्होरा**

* **सौन्दर्य-समस्याएं:** बेडौलपन, अपुष्ट वक्ष, छोटा कद, बालों का झड़ना, चेहरे की कमियां आदि।
* **आम शिकायतें:** मासिक धर्म की गड़बड़ियां, बेजा थकान व तनाव, पीठ-दर्द, हीन-भावना, यौन रोग आदि।
* **शिशु-जन्म प्रक्रिया:** गर्भाधान से लेकर प्रसवोपरांत का भोजन, सतर्कताएं एवं समस्याएं।
* **सामान्य स्वास्थ्य:** नारी शरीर रचना की संपूर्ण जानकारी, फर्स्ट-एड, मीनूपाज, बांझपन आदि।
* **बीमारियां:** रक्तचाप, मधुमेह, तपेदिक, दमा, वक्ष तथा गर्भाशय का कैन्सर तथा ऑपरेशन आदि।

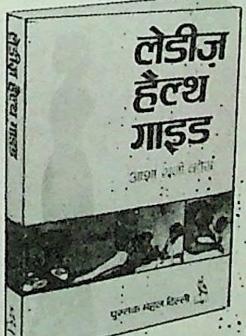

मूल्य: 28/-
डाकखर्च: 5/-

बड़े साइज के 410 पृष्ठ:
चित्र: 300

25 विशेषज्ञ डाक्टरों के इंटरव्यूज पर आधारित एक प्रामाणिक पुस्तक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

खेल-खेल में सीखो विज्ञान

101 साइंस एक्सपेरिमेंट्स

—आइवर यूशिएल

नन्हे वैज्ञानिकों के लिए लिखी गई एक ऐसी पुस्तक—जो सरल व रोचक प्रयोगों द्वारा विज्ञान के जटिल सिद्धांतों को समझने में निश्चित रूप से मदद देगी।

प्रयोगों की एक झलक:—

- ★ कैसे चल पाते हैं जल-सतह पर कीट?
- ★ नहाने के बाद क्यों लगती है ठंड?
- ★ कमरे में बैठ नापो सितारों की दूरी!

इसके साथ ही वर्षामापी, सूक्ष्मदर्शी, डायनेमो आदि अनेक उपकरण बनाने की सचित्र विधियां।

मूल्य: 15/- डाकखर्च: 4/- पृष्ठ: 120

English edition also available.

अनुभवी फोटोग्राफर द्वारा लिखित घर-बैठे फोटोग्राफी सिखाने वाला

प्रैक्टिकल फोटोग्राफी कोर्स

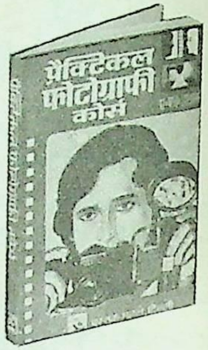

लेखक : ए. एच. हाशमी

पोर्ट्रेट्स, ग्रुप्स, स्टिल-लाइफ, लैण्डस्कैप, स्पोर्ट्स तथा स्पीड फोटोग्राफी, विवाह-उत्सव, जानवर, प्राकृतिक दृश्यावलियां आदि सभी मौकों के फोटो खींचना सीखो।

• डैवलपिंग • काण्टैक्ट • एन्लार्जमेण्ट • रीटचिंग • डाक्यूमेण्ट कापिंग • फिनिशिंग • कलरिंग।

डिमाई साइज: 244 पृष्ठ-मूल्य: 20/- डाकखर्च: 4/-

सर्वश्रेष्ठ ट्रिक्स का अनूठा संकलन

चिल्ड्रन्स ट्रिक्स एण्ड स्टंट्स

इस सचित्र पुस्तक में तुम पाओगे

- **ऐसी कुर्सी,** *जिसे तुम नहीं उठा सकोगे!*
- **ऐसा गुब्बारा,** *जिसे तुम नहीं फोड़ सकोगे!*
- **अदृश्य मानव,** *जो तुम्हारी आंखों के सामने से गायब हो जाएगा!*
- **अंगुली,** *जो हवा में तैरेगी!*

तुम्हारे दोस्तों को चकरा देने वाली—रहस्यमय, आश्चर्यजनक—लेकिन करने में आसान 70 ऐसी ही, अन्य मनोरंजक ट्रिक्स।

मूल्य: 12/- डाकखर्च: [illegible] पृष्ठ: 120

सुप्रसिद्ध इन्कमटैक्स सलाहकार श्री आर.एन. लखोटिया द्वारा लिखित

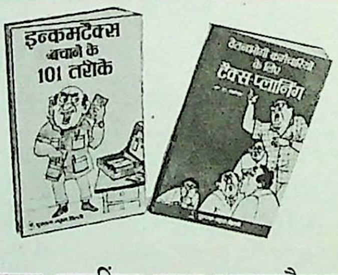

- ★ **टैक्स-प्लानिंग द्वारा इन्कमटैक्स बचाने के 101 तरीके**

- ★ **वेतनभोगी कर्मचारियों के लिए टैक्स-प्लानिंग**

आयकर कानून के अन्तर्गत ऐसे-ऐसे प्रावधान हैं, जिनकी जानकारी होने पर आप दो लाख रुपया वार्षिक आमदनी होने पर भी कानूनी ढंग से इन्कम-टैक्स देने से बच सकते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Skill in correspondence ensures

Brighter Career... Faster Promotion... Sure Success in Business...

Rapidex

Self Letter Drafting Course

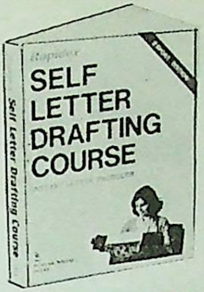

Big size
Pages: 354
Price: Rs. 28/-
Postage: Rs. 5/-

Whether you are an administrator or a supervisor, office superintendent or a steno-typist—**the skill in correspondence is an art you must master,** because almost every situation, every occasion calls for a well-drafted letter. And with this skill in hand none can stop you from getting ahead.

While other books teach you to copy readymade letters given in them, this course will teach you how to draft a letter of your own choice.

FEATURES

- Sentences and phrases in abundance.
- Tick mark the required ones.
- Arrange in proper order instantaneously.
- Shape & mould the way you want to.

....And now make as many letters as you want on the same subject.

DIVIDED UNDER 3 SECTIONS.

It takes care of your personal and social letters, commercial correspondence and applications for job.

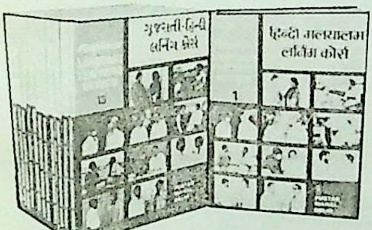

रैपिडैक्स लैंग्युएज लर्निंग सीरीज़

इतनी सरल व ग्राह्य सीरीज़ कि आप कुछ ही दिनों में काम चलाने लायक कोई भी भारतीय भाषा बोलने और समझने लगेंगे

12 खण्डों की सीरीज़ की पुस्तकें

हिन्दी-तेलुगू लर्निंग कोर्स
हिन्दी-कन्नड़ लर्निंग कोर्स
हिन्दी-तमिल लर्निंग कोर्स
हिन्दी-बंगला लर्निंग कोर्स
हिन्दी-गुजराती लर्निंग कोर्स
हिन्दी-मलयालम लर्निंग कोर्स
इसी प्रकार प्रान्तीय भाषाओं से हिन्दी सीखने के लिए भी 6 पुस्तकें उपलब्ध

सभी पुस्तकें लगभग 250 पृष्ठों में
प्रत्येक पुस्तक का मूल्य 24/- डाकखर्च 4/-

Books for Science Students

General Science

A series of five books

The series provides help and guidance on all the major branches of science—*Physics, Chemistry, Biology, Geology & Astronomy.*

Price: 12/- each Postage: 3/- each

Think Series

(Work-Books for Physics, Chemistry, Biology & Science)

Each book in this series contains 1000 quiz-type questions covering almost every branch of particular science with answers.

Price: 10/- each Postage: 3/- each

Know Science

Know Science offers pupils in the 10–13 age-range 1000 questions in the general field of science.

Price: 10/- Postage: 3/-

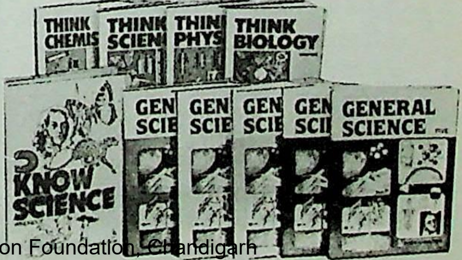

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

खेल-खेल में जादू सीखो, खेल साइंस के खेलो—ज्ञान बढ़ाओ, रौब जमाओ, मित्रों में यश लेलो

101 मैजिक ट्रिक्स

—आइवर यूशिएल

इस सचित्र पुस्तक में दी गई हैं—ऐसी 101 शानदार व जानदार ट्रिक्स, जिनका समझना जितना सरल है, उनका प्रदर्शन उससे भी आसान! बस! जरूरत है तो थोड़े से अभ्यास के साथ चन्द ऐसी चीजों की, जो तुम्हें आसानी से उपलब्ध हो जाएंगी।

ट्रिक्स की एक झलक: ■ टूटी माला फिर तैयार ■ गिलास का पानी गायब करना ■ रूमाल आग से न जले ■ सर पर रखा हैट स्वयं उछले आदि....

मूल्य: 15/- डाकखर्च: 4/- पृष्ठ: 120

Also available in English.

101 साइंस गेम्स

—आइवर यूशिएल

विज्ञान के 101 खेलों की यह पुस्तक खेल ही खेल में कुछ ऐसे वैज्ञानिक उपकरण बनाना सिखा देती है, जो बनेंगे तो खिलौने ही पर बच्चों को बिलकुल असली उपकरण जैसा ही आनंद देंगे। जैसे—**बैरोमीटर, विद्युत-चुम्बक, हैक्टोग्राफ, स्टीम टरबाइन, इलेक्ट्रोस्कोप आदि....**

इनके अलावा बहुत से अन्य रोचक प्रयोग जैसे—***कागज के बर्तन में पानी उबालना, भाप से नाव चलाना आदि*** 101 मनोरंजक जादू से प्रतीत होने वाले वैज्ञानिक खेल।

मूल्य: 15/- डाकखर्च: 4/- पृष्ठ: 120

English edition also available.

Learn science while you play

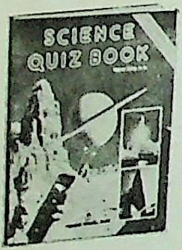

Science Quiz Book

* Most useful for 10+2 Courses.
* Covers the most modern topics of science like Computer/Robots/ Space/ Electronics/ Laser/Maser etc.
* For better performance in Viva examinations.
* To meet the challanges of Science Quiz programmes on Radio/TV.
* For Competetions like M.B.B.S., Engineering etc.
* All interviews connected with scientific services/posts.

Get your child admitted in a public school

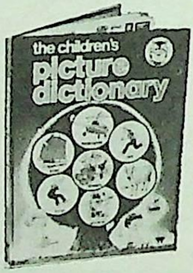

CHILDREN'S PICTURE DICTIONARY

All in colour

* Successfully prepares your child for admission in a Public School.
* Contains 1500 words of daily use.
* Each & every word has been explained with colourful pictures & small & simple sentences.

The Dictionary is really a treasure-trove of knowledge for your children wherein they will discover the names of... • *Birds* • *Animals* • *Fruits* • *Vegetables* • *Colours* • *Parts of Body etc.*

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बच्चों को इंटैलीजैंट बनाने वाला अद्‌भुत नॉलिज बैंक

बच्चों के मस्तिष्क में घुमड़ने वाले हजारों अनबूझे 'क्यों और कैसे' किस्म के प्रश्नों के उत्तर बताने वाला एक अनूठा प्रकाशन

चिल्ड्रन्स नॉलिज बैंक (छः खण्डों में)

बच्चे के मस्तिष्क के लिए एक टॉनिक

जरा सी समझ आते ही बच्चे के मस्तिष्क में 'क्यों' और 'कैसे' किस्म के हजारों प्रश्न घुमड़ने लगते हैं। उचित समय पर मिले प्रश्नों के उत्तर उसके दिमाग के लिए टॉनिक का काम करते हैं जबकि उत्तर न मिलने से उसका मानसिक विकास रुक जाता है।

6 खण्डों की इस शृंखला में हैं.....

- 1300 बड़े आकार के पृष्ठ
- 1100 से अधिक चित्र
- 5,00,000 शब्दों की पाठ्य-सामग्री
- 1050 प्रश्नों के सुबोध उत्तर

मूल्य :

पेपरबैक: 24/- डाकखर्च: 4/- प्रत्येक

पूरा सैट: 144/- (गिफ्ट बॉक्स में) डाकखर्च माफ

सजिल्द गिफ्ट संस्करण: 30/- डाकखर्च: 5/- प्रत्येक

पूरा सैट: 180/- (गिफ्ट बॉक्स में) डाकखर्च माफ

अंग्रेजी तथा 8 भारतीय भाषाओं में प्रकाशित

प्रश्नों में से कुछ की झलक

□ महिलाओं की दाढ़ी क्यों नहीं होती? □ क्या अन्य ग्रहों से लोग पृथ्वी पर आते हैं? □ आकाश नीला क्यों है? □ मुंहासे क्यों होते हैं? □ टेस्ट ट्यूब बेबी क्या है? □ सपने क्यों दिखाई देते हैं? □ इलेक्ट्रानिक घड़ी कैसे काम करती है? □ मिस्र में ममी कैसे बनाते थे? □ उड़न-तश्तरी क्या है? □ एल.एस.डी. क्या है? □ हाइड्रोजन बम क्या है? आदि....

विशेषताएं

- 50 लाख से भी अधिक पाठकों की पसंद
- विद्यालयों में पुरस्कार के रूप में वितरित
- प्रत्येक खण्ड अपने आप में संपूर्ण
- पत्र-पत्रिकाओं द्वारा प्रशंसित

आधारभूत विषय

★ पृथ्वी एवं ब्रह्मांड ★ आधुनिक विज्ञान, वनस्पति एवं पशु-पक्षी जगत ★ आविष्कार एवं खोजें ★ खेल एवं खिलाड़ी ★ आश्चर्य एवं रहस्य ★ सामान्य ज्ञान ★ मानव शरीर ★ भौतिक-रसायन एवं जीव विज्ञान आदि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Master Computer Today For A Better Tomorrow

Computers are invading every facet of a person's life—the home, the office, the classroom or the play ground. Whether in job or business, they are opening up bright new vistas of knowledge and happiness.

— *Er. V.K. Jain*

- **Computer for Beginners**
- **Basic Computer Programming**

The twin-books are a must for those who are interested in computers, their function and operation, but are discouraged by their complexities. All is made easy through simple language and instructive illustrations.

The books are designed for mass education as per Computer Literacy Project of NCERT and also conform to course on computers recently undertaken by C.B.S.E.

Big Size 192 & 176 pages respectively
Price: Rs. 24/- each Postage: Rs. 4/- each

A 2 Hour Guide to PCs

- ★ Creates awareness about modern computer—Hardware & Software & how these can serve as productivity aids.
- ★ Imparts working knowledge of Computer technology, Software Packages like Word-Star, Lotus 1-2-3, dBASE-III etc. to an ordinary man avoiding technical words.
- ★ Helps in assessing the operations that require computer.

Price: Rs. 20/- Postage: Rs. 4/- Pages: 112

कद बढ़ाने के अनुभूत तरीके

अपना कद बढ़ाइये

मूल्य: 15/-
डाकखर्च: 4/-

प्रस्तुत है कद लम्बा करने का आजमाया हुआ वैज्ञानिक अनुसंधान! इसमें यूरोप और अमरीका में टेस्ट किया हुआ ऐसा सचित्र कोर्स दिया गया है जिसकी मदद से आप ***केवल 15 मिनट प्रतिदिन अभ्यास द्वारा कुछ ही हफ्तों में अपनी हाइट 10 सेमी. तक तो बढ़ा ही सकते हैं।***

बिना हथियार मारधाड़ की जापानी कलाएं

जूडो कराटे

(जुजुत्सु-बॉक्सिंग सहित)

मूल्य: 15/- डाकखर्च: 4/-
पृष्ठ: 128

हिन्दी में पहली बार प्रकाशित 300 से अधिक दांव-पेंचों का सचित्र कोर्स। इसकी मदद से आप चाकू, लाठी, भाला आदि के वार से अपना बचाव करके अपने से चार गुना ताकतवर हमलावर को भी चुटकियों में धराशायी कर सकते हैं।

आप भी सीखो करना बुनाई

आधुनिक बुनाई शिक्षा

मूल्य: 24/- डाकखर्च: 4/-

पुस्तक में 200 से अधिक नई बुनतियों से ऊनी वस्त्र तैयार करने की विधियां दी गई हैं। साथ में उनकी धुलाई व दाग-धब्बे छुड़ाने के विभिन्न तरीके भी दिये गये हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

योगाभ्यास द्वारा किसी भी रोग से छुटकारा पाइये!

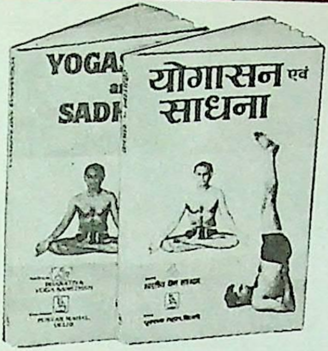

योगासन पर सबसे ज्यादा बिकने वाली पुस्तक

डिमाई साइज: 108 पृष्ठ मूल्य: 10/- डाकखर्च: 3/-

Also available in English.

योगासन एवं साधना

विश्व-प्रसिद्ध "भारतीय योग संस्थान" के योगाचार्यों द्वारा लिखित एक अनूठी पुस्तक

* आसनों का सुबोध व सचित्र विवरण * प्राणायाम विधि * चक्षु-व्यायाम * पौष्टिक भोजन * योगासनों द्वारा रोग निदान आदि....

भारतीय योग संस्थान की सैकड़ों शाखाओं में प्रतिदिन हजारों योगाभ्यासी रोगों से छुटकारा पा जीवन का आनन्द ले रहे हैं।

English-Hindi Sentence Dictionary
अंग्रेजी-हिन्दी बोलती डिक्शनरी (वाक्यों सहित)

हिन्दी में यह अपने ही प्रकार की पहली ऐसी डिक्शनरी है, जिसकी शब्दावली वाक्यों के रूप में बोलती है और अपने पाठकों को उसकी व्याकरण-रचना से परिचित कराकर उसका सही-संदर्भों में प्रयोग भी सिखाती है।

प्रायः प्रयोग में आने वाले अंग्रेजी के 4000 शब्दों का हिन्दी में उच्चारण, हिन्दी-अर्थ तथा उनका अंग्रेजी के वाक्यों में प्रयोग सिखाने वाली अपने प्रकार की पहली डिक्शनरी।

मूल्य: 15/-
डाकखर्च: 4/-
पृष्ठ: बड़े 154

अंग्रेजी-मराठी संस्करण भी उपलब्ध

अपना दिमाग तेज कीजिए

101 दिमागी कसरतें

हरीश चंद्र संसी

सिर को खुजलाने के लिए विवश कर देने वाली ऐसी पहेलीनुमा चुनौतियां, जिनको हल करने की कोशिश में जहां एक ओर आपका मनोरंजन होगा वहीं दूसरी ओर आपका दिमाग भी तेज होगा। बच्चों, जवानों तथा बूढ़ों—सभी के लिए मजेदार 101 रोचक दिमागी कसरतें

मूल्य: 12/- डाकखर्च: 3/-

ONE DAY INTERNATIONAL CRICKET RECORDS

- Records of all the 472 one day matches including Reliance World Cup.
- All Batting, Bowling and Fielding Records...

* Highest and lowest scores * Centuries * Partnerships * Fastest & slowest scoring * Maximum wickets * Best performance * Catches * Run outs * Wicket keeping etc.

Career records of 524 players, who played in one-days.

Foreword by Chandu Sarwate & Mushtaq Ali

Price: Rs. 15/- Postage: Rs. 4/- Pages: 176

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रसिद्ध भविष्यवक्ता, प्रकाण्ड ज्योतिषी, हस्तरेखा-विशेषज्ञ एवं सिद्धहस्त तांत्रिक-मांत्रिक डा. नारायणदत्त श्रीमाली की अनमोल पुस्तकें

वृहद् हस्तरेखा शास्त्र

- आप खुद अपने हाथ की रेखाएं पढ़कर अपना भविष्यफल जान सकते हैं। किसी पण्डित अथवा ज्योतिषी के पास जाने की आवश्यकता नहीं है।
- हस्तरेखा के 240 विभिन्न योगों का पहली बार प्रकाशन, जैसे—आपके हाथ में धन-संपत्ति का योग, पुत्र-योग, विदेश-यात्रा योग आदि हैं या नहीं?
- आपके हाथ की रेखाएं क्या कहती हैं? कौन से व्यापार से आपको लाभ होगा? नौकरी में तरक्की कब तक होगी? पत्नी कैसी मिलेगी? इत्यादि सैकड़ों प्रश्नों के उत्तर।

डिमाई साइज: 348 पृष्ठ मूल्य: 24/- डाकखर्च: 4/-
Also available in English.

प्रैक्टिकल हिप्नोटिज्म

- पुस्तक में हिप्नोटिज्म को सरल-सरस ढंग से चित्रों द्वारा समझाया गया है, जिससे साधारण पाठक भी एक अच्छा सम्मोहन विशेषज्ञ बन सकता है।
- पुस्तक में हिप्नोटिज्म के प्रकार, पयोग, शक्ति, हिप्नोटिज्म के सिद्धांत, त्राटक, सम्मोहन के तथ्य आदि पर पूर्ण प्रामाणिकता के साथ सचित्र विवरण है।
- रोग-निवारण, कष्ट दूर करने व जीवन में प्रतिदिन आने वाली बाधाओं व आपदाओं के निराकरण में इस पुस्तक में दिया गया विवरण पूर्णतया उपयोगी है।

डिमाई साइज: 266 पृष्ठ मूल्य: 24/- डाकखर्च: 4/-
English Edition Price: Rs. 30/-

रोगों से निबटने में डाक्टर से भी ज्यादा आपकी अपनी भूमिका आवश्यक है

इंग्लैंड के प्रसिद्ध डाक्टरों एवं विशेषज्ञों द्वारा लिखित प्रसिद्ध ब्रिटिश

पॉकेट हैल्थ गाइड्स
(अब हिन्दी में भी उपलब्ध)

पॉकेट हैल्थ गाइड्स इन बीमारियों के कारणों, जटिलताओं, सावधानियों तथा रोकथाम के उपायों के बारे में आपका ज्ञानवर्द्धन करेंगी।

मूल्य: 5/- प्रत्येक
डाकखर्च: 2/- प्रत्येक

हिन्दी में 16 तथा अंग्रेजी में 18 हैल्थ गाइड्स

- एलर्जी (Allergies)
- रक्तक्षीणता (Anaemia)
- संधिशोथ एवं गठिया (Arthritis & Rheumatism)
- दमा (Asthma)
- पीठ का दर्द (Back Pain)
- बच्चों के रोग (Children's Illnesses)
- रक्त-संचार की समस्याएं (Circulation Problems)
- अवसाद और चिंता (Depression & Anxiety)
- मधुमेह (Diabetes)
- उच्च रक्तचाप (High Blood Pressure)
- हृदय रोग (Heart Trouble)
- रजोनिवृत्ति (The Menopause)
- आधासीसी का दर्द (Migraine)
- पैप्टिक अल्सर (Peptic Ulcers)
- (Pre-Menstrual Tension)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

घर बैठे दर्जियों जैसी टेलरिंग सिखाने वाला प्रभावी व सरल कोर्स

रैपिडैक्स होम टेलरिंग कोर्स

(लेखिका: श्रीमती आशारानी व्होरा)

घरभर की पोशाकों.... अर्थात् नन्हें-मुन्नों की नेपकिन से लेकर पुरुषों की कमीज-पैंट तक.... कुल मिलाकर 175 से अधिक डिजाइनों एवं नमूनों की पोशाकों की प्लानिंग, कटाई व सिलाई की सचित्र जानकारी।

300 से अधिक रेखा व छायाचित्रों से सुसज्जित बड़े साइज के 456 पृष्ठ

मूल्य: 32/- डाकखर्च: 5/-

- मनमोहक फ्राकें, लुभावनी मैक्सियां, सलौनी नाइटी, नाइट सूट व गाउन, आकर्षक टाप्स, नन्हें-मुन्नों के रंगारंग कपड़े, युवक-युवतियों के लिए पैंट, बैल-बाटम, शर्ट, बुशर्ट व जीन्स
- गृह-सज्जा के लिए परदे, कुशन आदि
- पुराने कपड़ों से बच्चों के कपड़े बनाना
- भांति-भांति की डाट्स, चुन्नट, प्लीट्स, जेबें, आस्तीन, कालर योक, बटन आदि
- मशीन के कलपुर्जों की जानकारी भी

जो बात हजार शब्द नहीं कह पाते, एक चित्र कह देता है

चिल्ड्रन्स लाइब्रेरी ऑफ नॉलिज

400 पृष्ठों की सुबोध भाषा में लिखी इस पुस्तक में बहुरंगी चित्रों से युक्त 1200 प्रविष्टियां (entries) हैं जो निम्नलिखित विषयों से संबंधित हैं:–

□देश और निवासी □खनिज व धातु □मनुष्य व मशीन □पृथ्वी और ब्रह्मांड □पशु व पक्षी □मानव शरीर □सामान्य और इलैक्ट्रानिक उपकरण □मरुस्थल व पर्वत □कला व संगीत □पौधे और वृक्ष □इतिहास और धर्म □सागर और नदियां □संचार और परिवहन □अनुसन्धान और आविष्कार आदि।

मूल्य: 96/- डाकखर्च: 12/-
Also available in English.

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कैमरा साधारण हो या बढ़िया–आप स्वयं ट्रिक फोटोग्राफी कर सकते हैं...

ट्रिक फोटोग्राफी एंड कलर प्रोसेसिंग

–ए.एच. हाशमी

....बोतल के भीतर आदमी, हथेली पर नाचती औरत, सेब में से झांकते बच्चे या पत्ते पर प्रेमिका का फोटो उतारिए!

ट्रिक फोटोग्राफी पर हिंदी में प्रथम पुस्तक–जिसमें ट्रिक और इफेक्ट की पूरी-पूरी प्रैक्टिकल जानकारी चित्रों के साथ दी गई है. इसके अलावा.... कलर फोटोग्राफी व कलर प्रोसेसिंग की प्रैक्टिकल जानकारी भी इसमें है, जिसकी मदद से आप निगेटिव या ट्रांसपेरैंसी की प्रोसेसिंग कर सकते हैं और अच्छे कलर एन्लार्जमैन्ट भी बना सकते हैं।

डिमाई साइज पृष्ठ: 248
मूल्य: 21/- डाकखर्च: 4/-

डा. नारायणदत्त श्रीमाली द्वारा विरचित

मूल्य: 18/-
डाकखर्च: 4/-

मूल्य: 28/-
डाकखर्च: 5/-

तांत्रिक सिद्धियां

मंत्र-अध्येताओं, तांत्रिकों एवं साधकों के लिए ऐसी पथ-प्रदर्शक पुस्तक जिसमें दुष्कर तांत्रिक क्रियाओं का सरल एवं सचित्र विवरण है।

मंत्र रहस्य

मंत्रों के मूल स्वरूप, मंत्र-चैतन्य, मंत्र कीलन-उत्कीलन, मंत्र-ध्वनि, मंत्र-विनियोग एवं मंत्रों के सफल प्रयोगों के लिए सचित्र ग्रन्थ।

'रिप्ले' की *Believe It or Not!* अब हिन्दी में भी....

संसार के 1500 अद्भुत आश्चर्य

पुस्तक में कुदरत के चमत्कारों, अद्भुत ऐतिहासिक घटनाओं, बादशाहों की अजीबो-गरीब सनकों, साहस और वीरता के बेमिसाल कारनामो, पृथ्वी, समुद्र और आकाश के जीव-जन्तुओं और वनस्पतियों की अनजानी विचित्रताओं का सचित्र वर्णन किया गया है।

मूल्य: 25/- डाकखर्च: 4/- पृष्ठ: 224

- दुर्गा महिमा
- शिव महिमा
- विष्णु महिमा
- लक्ष्मी महिमा
- गणेश महिमा
- हनुमान महिमा

पुस्तकों में महिमाओं के अतिरिक्त पूजा के मंत्र, नैवेद्य आदि की विधियां भी हैं।

तीर्थ-यात्रा का सुफल पाइये

हमारे पूज्य तीर्थ

बड़े 208 पृष्ठ,
मूल्य: 24/-
डाकखर्च: 4/-

यह पुस्तक आपको, तीर्थों की धार्मिक, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, उपयोग में आने वाले साज-सामान, आने-जाने के मार्ग का निर्देश,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हिन्दी में पहली बार प्रकाशित बहुरंगी एनसाइक्लोपीडिया

जूनियर साइंस एनसाइक्लोपीडिया

(Junior Science Encyclopedia)

256 पृष्ठों में 800 से भी अधिक रंगीन चित्रों एवं 80,000 शब्दों की पाठ्य-सामग्री से युक्त प्रस्तुत एनसाइक्लोपीडिया वैज्ञानिक विषयों पर लिखा गया एक अमूल्य संदर्भ-ग्रंथ है। बच्चे की हर '**क्यों**', '**कैसे**', और '**कहां**' का उत्तर देने में सक्षम एक संग्रहणीय ग्रंथ!

मूल्य: प्रत्येक खंड: 16/- डाकखर्च: 4/-
पांचों भाग एक जिल्द में—पेपरबैक संस्करण: 72/-
सजिल्द लायब्रेरी संस्करण: 120/- डाकखर्च: 8/-

पांच खंड

1. पृथ्वी एवं ब्रह्मांड, 2. नाप, गति एवं ऊर्जा, 3. प्रकाश, दृष्टि तथा ध्वनि, 4. इलेक्ट्रॉनों की उपयोगिता, 5. खोज एवं आविष्कार।

Published in India in collaboration with Hamlyn Publishing London.
Also available original English Edition combined only (Not in volumes) Price Rs. 128/

सुविख्यात पाक-कला विशेषज्ञा 'श्रीमती आशारानी व्होरा' द्वारा प्रस्तुत

मॉडर्न कुकरी बुक

भारतीय एवं पश्चिमी स्टायल में किचन सैटिंग के 15 से अधिक फोटोग्राफ्स, रसोईघर के आवश्यक सामान व आधुनिक उपकरणों सहित।

बड़े साइज के
148 पृष्ठ
सैकड़ों रेखा व
छाया चित्र
मूल्य: 15/-
डाकखर्च: 4/-

- मेहमानों का स्वागत कैसे करें, परोसने के क्या-क्या तरीके हैं, व्यंजनों को प्लेटों में कैसे सजाएं तथा डायनिंग टेबल पर प्लेटों व क्रॉकरी आदि को कैसे सजाएं।
- दैनिक नाश्ते, लज़ीज़ सब्जियां तथा विशेष अवसरों के लिए मीठे व नमकीन विशिष्ट पकवानों के साथ-साथ जैम, मुरब्बा, जैली, आइसक्रीम, कुल्फी, स्कवैश, फ्रूट-कस्टर्ड, अचार, चटनी, सॉस, सलाद, सूप, सैंडविच और फ्रूट-काकटेल आदि व्यंजनों को बनाने की सचित्र विधियां।

चमत्कारी किरण—लेसर

रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत

एक ऐसा चमत्कारिक आविष्कार, जिसके उपयोगों ने आज सारे संसार में धूम मचा दी है। **लेसर क्या है तथा लेसर के 50 से भी अधिक उपयोगों की सचित्र जानकारी।**

डिमाई साइज
पृष्ठ: 112 मूल्य: 12/-
डाकखर्च: 2/-

अपने लाड़लों के लिए कोई भी मनपसन्द नाम चुनिए!

बच्चों के 2001 नाम

मूल्य: 3/- डाकखर्च: 2/-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

N.C.E.R.T. द्वारा पुरस्कृत

51 महान आविष्कार

–राजेन्द्र कुमार राजीव

पुस्तक में आज के विज्ञान और आधुनिक सभ्यता का आधार समझे जाने वाले हजारों साल पहले के **पहिए** के आविष्कार से लेकर आधुनिक युग के **राडार, कम्प्यूटर, रॉकेट** आदि आविष्कारों का सचित्र वर्णन किया गया है।

बड़े 168 पृष्ठ मूल्य: 20/- डाकखर्च: 4/-

जीव-जन्तुओं की आत्मकथाएं

हम जीव-जन्तु

लेखक–रवि लायटू
भूमिका–रामेश बेदी

जीव-जन्तुओं के संसार के 50 सदस्यों की रोचक आत्मकथाएं, उनकी जबानी सुनिए–

* *वे किस जात बिरादरी के हैं?*
* *उनकी दिनचर्या क्या है?*
* *वे क्या खाते-पीते हैं? आदि-आदि....*

बड़े 116 पृष्ठ मूल्य: 12/- डाकखर्च: 3/-

नवजात शिशु के लिए सर्वोत्तम उपहार

बेबी रिकार्ड एलबम

Also available in English

इसमें आप अपने बच्चे के जन्म से अगले पाच वर्ष तक के सीढ़ी-दर-सीढ़ी विकास (दंत-अकुरण, पहली बार बैठना व चलना आदि), जन्म संबंधी विवरणों (जन्म तिथि, जन्म का वजन, लंबाई व कुंडली आदि), के रिकार्ड के साथ ही प्रत्येक अवसर के स्मरणीय फोटो भी संजो सकते हैं।

मूल्य: 28/- डाकखर्च: 5/-

लैटरिंग की आकर्षक विधियां सीखो

इंगलिश-हिन्दी मॉडर्न लैटरिंग

लेखक: ए.एच. हाशमी

* अक्षरों की बनावट का वर्गीकरण तथा बेसिक बनावट, स्ट्रॉक्स लगाने के तरीके, पैन, स्टील तथा फ्लैट ब्रुश द्वारा लैटरिंग।
* अक्षराकन के मूल सिद्धांत। सभी तरह की अंग्रेजी-हिन्दी लैटरिंग करने की विधियां तथा सैकड़ों आकर्षक नमूने।

172 पृष्ठ मूल्य: 24/- डाकखर्च: 4/-

अपना मनपसन्द वाद्य बजाना सीखिए

* **सितार** सीखिए
* **गिटार** सीखिए
* **वायलिन** सीखिए
* **हारमोनियम** सीखिए
* **मेंडोलिन व बेंजो** सीखिए
* **तबला व कोंगो-बोंगो** सीखिए

संगीताचार्य श्री रामावतार 'वीर' रचित

युवा पीढ़ी के चहेतें वाद्य, जिन्हें बिना शिक्षक के सरलता से सीखा जा सकता है और हमारे इन कोर्सों की मदद से आप कुछ ही दिनों में फिल्मी व पारम्परिक धुनें निकालने लगेंगे।

मूल्य: 15/- प्रत्येक डाकखर्च: 4/- प्रत्येक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Out with all Stains

Spot Check

Straightforward tips to cope with all types of stains. A full section on fabrics with a comprehensive chart. Tackle stains on Wallcoverings, Carpets, Pots, Furniture, Metals etc.

यह पुस्तक हिन्दी में भी उपलब्ध है।

Price: Rs. 10/- Postage: Rs. 3/-

घर में ही ब्यूटी क्लीनिक

होम ब्यूटी क्लीनिक

–परवेश हांडा

घर-बैठे ब्यूटी क्लीनिक जैसे मेकअप की विधियां सिखाने वाली एक ऐसी पुस्तक, जिसमें त्वचा की देखभाल,. शरीर को सुडौल बनाने संबंधी व्यायाम तथा आकर्षक हेयर स्टायल्स आदि की संपूर्ण जानकारी दी गई है।

बड़े 140 पृष्ठ मूल्य: 18/- डाकखर्च: 4/-

समय और धन की बचत करें

गृह-उपयोगी नुक्ते

(Home Hints)

Also available in English.

चीजों के लंबे समय तक बिना सड़े-गले भंडारण की विधियां, बोतलों, टी-पॉट आदि की सफाई सहित हजारों नुक्तों का एक बहुरंगी सचित्र संकलन।

मूल्य: 10/- डाकखर्च: 3/-

आधुनिक केश-सज्जा सीखो

मॉडर्न हेयर स्टायल्स

-आशारानी व्होरा

मूल्य: 15/- डाकखर्च: 4/-

इस पुस्तक की मदद से किसी भी प्रकार की हेयर सैटिंग घर में ही कीजिए। बॉय-कट, बॉब-कट, राउण्ड-कट, स्ट्रेट-कट, फीजर-कट, स्टैप्स, पोनी-टेल, रिंगलट्स, शोल्डर-कट, शेग-स्टायल या स्विच-सज्जा–

कमर पतली कीजिए

लेडीज स्लीमिंग कोर्स

केवल 15 **मिनट** रोज के इस कोर्स की मदद से आप अपनी कमर और पेट पर चढ़ी फालतू चरबी शीघ्र ही घटा सकती हैं और अपनी कमर का नाप **पांच दिन में सात-आठ सेंटीमीटर** तक कम कर सकती हैं।

18 विशेषज्ञ डाक्टरों के इंटरव्यूज पर आधारित

बेबी हेल्थ गाइड

-आशारानी व्होरा

यह गाइड बच्चों से संबंधित सभी विषयों का एक अनूठा एनसाइक्लोपीडिया है, जिसमें उनके शारीरिक रोगों से लेकर उनके मनोविज्ञान तक के सभी पहलुओं को सविस्तार समझाया गया है।

रेखाचित्र: 42 बड़ा साइज़

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मोटे पतले हो सकते हैं

20 दिन में

मोटापा घटाइये

मोटापा भयंकर बीमारियों की जड़ है, सैक्स-क्रीड़ा में बाधक है, सेहत के लिए अभिशाप है। **केवल 15 मिनट नित्य का कोर्स लगातार 20 दिन तक करिए,** आपको आश्चर्यजनक फर्क नजर आएगा।

मूल्य: 15/- डाकखर्च: 4/- पृष्ठ: 72

बाटिक कला सीखिए

बाटिक कला

बड़े साइज के 120 पृष्ठ

मूल्य: 15/- डाकखर्च: 4/-

घर की सजावट के साज-सामान से लेकर पहनने के वस्त्रों तक पर बाटिक कला का प्रयोग कर—**पर्दे, मेजपोश, टीकोजी, रेडियो कवर, चादरें, कुशन, साड़ी-ब्लाउज़ आदि** पर विभिन्न प्रकार के रंग-बिरंगे डिजाइन बना सकते हैं।

पेंटिंग सिखाने वाला कोर्स

ड्राइंग तथा पेण्टिग कोर्स

—ए.एच. हाशमी

इस कोर्स की मदद से आप कुछ ही दिनों में आकृतियों के एक्शन से भरे चित्र तथा सीन-सीनरियां, वाटर-कलर, ऑयल-कलर, एक्रेलिक-पेंटिंग, हिन्दी-अंग्रेजी लैटरिंग आदि सीख कर लाभान्वित हो सकते हैं।

पृष्ठ: 144 मूल्य: 15/- डाकखर्च: 4/-

आकस्मिक दुर्घटना के समय

प्राथमिक उपचार (First Aid)

Also available in English

मूल्य: 10/- डाकखर्च: 3/-

पुस्तक में डाक्टरी सहायता उपलब्ध होने तक दिल का दौरा पड़ने, करंट लगने, विषाक्त भोजन खाने, जल जाने, चोट से निरंतर खून बहने, हड्डी टूटने आदि जैसी अनेक आकस्मिक दुर्घटनाओं से जूझने की विधियां दी गई हैं।

Bring Greenery Indoors

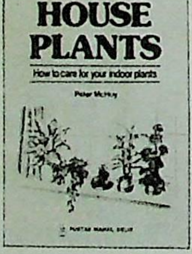

House Plants

Price: Rs. 10/-
Postage: Rs. 3/-

Tips on indoor greenery. Get to know all about choosing, buying, watering and feeding House plants.... Bottle gardens.... Flowering and foliage plants.... from BULBS

रसोई की रानी बनिये

भारतीय व्यंजन

—कुमुदिनी मुंशी

मूल्य: 10/- डाकखर्च: 3/-

पराठे, पूरी, सब्जियां, बाटी, कढ़ी, कोफ्ते, ... अचार, खीर, हलवा,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh